
47वां 47th
राष्ट्रीय फ़िल्म National Films
समारोह Festival
2000

संपादक
रत्नोत्तमा सेनगुप्ता

Editor
Ratnottama Sengupta

समन्वय
ई. एन. सजित
मंजु खन्ना

Co-ordination
E. N. Sajith
Manju Khanna

उत्पादन
एस.एम. चहल
जी.पी. धुसिया
वी.के. मीणा
विलास पगारे

Production
S.M. Chahal
G.P. Dhusia
V.K. Meena
Vilas Pagare

फ़िल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित।
मुद्रक : तारा आर्ट प्रिंटेर्स, नई दिल्ली-110 002

Designed and produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Tara Art Printers, New Delhi-110 002

No. 2/5/2000 PP III

2,000 Copies

Sept. 2000

Page No.

निर्णायक मण्डल	(vii)	JURY MEMBERS
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	1	DADA SAHEB PHALKE AWARD
कथाचित्र पुरस्कार	5	AWARDS FOR FEATURE FILMS
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	6	Best Feature Film
निर्देशक को सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	8	Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए पुरस्कार	10	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	12	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फ़िल्म	14	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	16	Best Film on Other Social Issues
पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फ़िल्म	18	Best Film on Environment Conservation/Preservation
सर्वोत्तम बाल फ़िल्म	20	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशक	22	Best Director
सर्वोत्तम अभिनेता	24	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	26	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	28	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	30	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल-कलाकार	32	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	34	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	36	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	38	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	40	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	42	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	44	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	46	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेशभूषाकार	48	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	50	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	52	Best Lyrics

सर्वोत्तम मण्डल का विशेष पुरस्कार	54	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	56	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन	58	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	60	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	62	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	64	Best Feature Film in Hindi
सर्वोत्तम कन्नड कथाचित्र	66	Best Feature Film in Kannada
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	68	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र	70	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र	72	Best Feature Film in Oriya
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	74	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र	76	Best Feature Film in Telugu
विशेष उल्लेख	78	Special Mention
गैर कथाचित्र पुरस्कार	81	AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS
सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार	82	Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार	84	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/जनजातीय फ़िल्म	86	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म	88	Best Biographical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म	90	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/संग्रहण फ़िल्म	92	Best Environment/Conservation/Preservation Film
सर्वोत्तम सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	94	Best Film on Social Issues
विशेष निर्णायक मण्डल पुरस्कार	96	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म	98	Best Short Fiction Film
सर्वोत्तम छायांकन	100	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनी आलेखन	102	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	104	Best Editor
विशेष उल्लेख	106	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	108	Awards Not Given

सिनेमा लेखन के लिए पुरस्कार	109	AWARDS FOR WRITING ON CINEMA
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक (1998)	110	Best Book on Cinema (1998)
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक (1998)	112	Best Film Critic (1998)
विशेष उल्लेख	114	Special Mention

कथासार : कथाचित्र	116	SYNOPSIS : FEATURE FILMS
बैभव	117	Baibhab
बारीवाली	118	Bariwali
बिस्वप्रकाश	119	Biswaprakash
देवीरि	120	Deveeri
डालर ड्रीम्स	121	Dollar Dreams
घरा बाहेर	122	Ghar-A-Baher
दि गोल	123	The Goal
हरी भरी	124	Hari Bhari
हे राम	125	Hey Ram
हम दिल दे चुके सनम	126	Hum Dil De Chuke Sanam
जलमर्मरम्	127	Jalamarmaram
कैरी	128	Kairee
कलीसुंडम्... रा	129	Kalisundam Raa
कन्नूरु हैगाडिती	130	Kanooru Heggadithi
करुणम	131	Karunam
लाडो	132	Laado
पारोमीतार एक दिन	133	Paromitar Ek Din
पोखी	134	Pokhi
पुनर्धिवासम्	135	Punradhivaasam
संगमम्	136	Sangamam
सरफरोश	137	Sarfarosh
सेतु	138	Sethu
शहीद ऊधम सिंह	139	Shaheed Uddham Singh
शूल	140	Shool

उत्तरा	141	Uttara
वानप्रस्थम्	142	Vaanaprastham
वासन्तियुम् लक्ष्मीयुम् पिन्ने जानुम्	143	Vasanthiyum Lakshmiyum Pinne Njaanum
कथासार : गैर कथाचित्र	144	SYNOPSIS : NON-FEATURE FILMS
एण्ड द बैम्बू ब्लूम्स	145	And The Bamboo Blooms
आतंक का अंधकार	146	Atanka Ka Andhakar
ब्लाइन्ड फोल्डेड	147	Blind Folded
देवयंगल पादिरियगम्बोल	148	Deivangal Padiyirangumbol
दुई पाटन के बीच	149	Dui Paatan Ke Beech Mein
फायर	150	Fire
कलामण्डलम् गोपी	151	Kalamandalam Gopi
कोयहातिर धुलिया	152	Koihatir Dhulia
मल्लिका साराभाई	153	Mallika Sarabhai
नोट्टम्	154	Nottam
ऑफ कन्फुशियस एस-स्पॉट्स एण्ड टायगन्स	155	Of Confucius, S-Spots and Toyguns
सुराभि	156	Surabhi
थंग टा	157	Thang-Ta
व्हीकल विद द सोल ऑफ ए मैन	158	Vehicle With the Soul of a Man

निर्णायक मण्डल

Jury Members

फीचर फिल्मों के लिए जूरी

JURY FOR FEATURE FILMS



गौतम घोष (अध्यक्ष)
Goutam Ghose (Chairman)



कल्पना अग्रवाल
Kalpana Agarwal



सईद मिर्जा
Saeed Mirza



मोहन शर्मा
Mohan Sharma



जी.वी.जी. राजु
G.V.G. Raju



गौतमी ताडीमल्ल भाटिया
Gautami Tadimalla Bhatia



के. रवोन्द्रनाथन नायर
K. Ravindranathan Nair



श्रीलेखा मुखर्जी
Sreelekha Mukherji



टी.एस. नागभरण
T.S. Nagabharana



के. जानकी राम
K. Janaki Ram



लेस्ली कारवल्लो
Leslie Carvalho



मलया गोस्वामी
Malaya Goswami



अरुण कौल
Arun Kaul



रत्नोत्तमा सेन गुप्ता
Ratnottama Sengupta

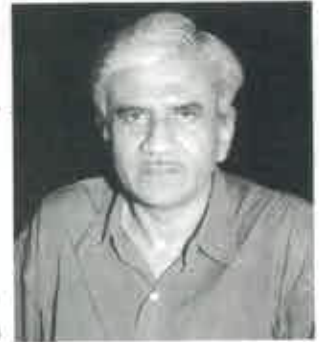


संजीव भार्गव
Sanjeev Bhargava



प्रो. रामगोपाल बजाज
Prof. Ram Gopal Bajaj

**JURY FOR
NON-FEATURE FILMS**
गैर फ़ीचर फ़िल्मों के लिए जूरी



डा. जब्बार पटेल (अध्यक्ष)
Dr. Jabbar Patel (Chairman)



मलय भट्टाचार्य
Malay Bhattacharya



ओ.के. जॉनी
O.K. Johny



मीरा दीवान
Meera Dewan



रश्मि दोराइस्वामी
Rashmi Doraiswami

सिनेमा पर लेखन के लिए जूरी

JURY FOR BEST WRITING
ON CINEMA



के. सच्चिदानन्दन (अध्यक्ष)
K. Satchidanandan (Chairman)



दीपा गहलौत
Deepa Gehlot



शिलादित्य सेन
Sheeladitya Sen

दादा साहेब **Dada Saheb**
फाल्के पुरस्कार **Phalke Award**
1999

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता 1999

हृषिकेश मुखर्जी हृषिदा के नाम से जाने जाते हैं। इन्होंने हिन्दी सिनेमा जगत को संपादन के क्षेत्र में नई-नई विधाएं प्रदान की। 1922 में कलकत्ता में जन्मे हृषिदा ने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन किया तथा आल इंडिया रेडियो में कलाकार बनने से पूर्व अध्यापन का कार्य किया। बिमल राय की प्रेरणा से 1945 में न्यू थियेटर्स में लेबोरेटरी सहायक के रूप में, तदुपरान्त संपादक के रूप में कार्य आरंभ किया। तत्पश्चात बिमल राय की लगभग सभी फिल्मों का संपादन किया। 1959 में पहली फिल्म **अनाड़ी** का निर्देशन किया जिसमें नूतन एवं राजकपूर ने अभिनय किया था। इसके पश्चात् बलराज साहनी लीला नायडू की **अनुराधा**, जिसे राष्ट्रपति का स्वर्णपदक मिला, का निर्देशन किया। ललिता पवार, डेविड तथा जयन्त को लेकर **मेम दीदी** बनायी। इसके पश्चात् 60 और 70 के दशकों में कई सामाजिक, पारिवारिक और हास्य फिल्में बनायीं। हृषिदा कई वर्षों तक सेंट्रल बोर्ड ऑफ सर्टिफिकेशन तथा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के अध्यक्ष रहे।

फिल्मोग्राफी

1959 - अनाड़ी 1960 - अनुराधा, मेम दीदी, 1961 - आशिक, असली नकली 1964 - सांझ और सवेरा 1965 - दो दिल 1966 - अनुपमा, (राष्ट्रपति का रजत कमल सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म), बीबी और मकान, गबन 1967 - मंझली दीदी 1968 - आर्शावाद (राष्ट्रपति का रजत कमल सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म) 1969 - प्यार का सपना, सत्यकाम (राष्ट्रपति का रजत कमल सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म) 1971 - आनन्द, बुढ़ा मिल गया, गुड़ी 1972 - बावर्ची, सबसे बड़ा सुख 1973 - अभिमान, नमक हराम 1974 - फिर कब मिलोगी, 1975 - चैताली, चुपके चुपके, मिली 1976 - अर्जुन पंडित 1977 - आलाप, कोतवाल साहिब 1978 - नौकरी 1979 - जुर्माना, गोलमाल 1980 - खूबसूरत 1981 - नरम गरम 1982 - बेमिसाल 1983 - नामुमकिन, रंगबिरंगी 1986 - झूठी, हम हिन्दुस्तानी 1988 - लाठी, 1992 - तलाश 1998 - झूठ बोले कौवा काटे

DADA SAHEB PHALKE AWARD WINNER OF 1999



Hrishikesh Mukherjee

Hrishikesh Mukherjee, popularly called Hrishida, is renowned for introducing editing conventions basic to Hindi films, such as the insertion of a close-up as a bridge between incompatible shots.

Born in 1922 in Calcutta, he graduated in science from Calcutta University, and started life as a teacher before becoming a freelance artiste in All India Radio. Inspired by Bimal Roy, he joined New Theatres studio in 1945 as a laboratory assistant and later turned film editor. In 1950 he did his first full assignment as an editor in the Bengali film **Tathapi**. He actively assisted Bimal Roy in the production of **Do Bigha Zameen** and subsequently went

on to edit most of Bimal Roy's films. His first directorial assignment **Anari**, made in 1959, starred Raj Kapoor and Nutan. This was followed by **Anuradha**, starring Balraj Sahni and Leela Naidu, and **Mem Didi**, an experimental film with character artistes Lalita Pawar, David and Jayant. During the '60s and '70s he successfully directed a number of social, family and comedy films that won him both critical and commercial acclaim. He also served as the Chairman of the Central Board of Film Certification and the National Film Development Corporation.

FILMOGRAPHY

1959 - Anari **1960** - Anuradha - Mem Didi **1961** - Aashiq - Asli Naqli **1964** - Sanjh Aur Savera **1965** - Do Dil **1966** - Anupama - Biwi Aur Makaan **1966** - Gaban **1967** - Manjhli Didi **1968** - Aashirwad **1969** - Pyar Ka Sapna, Satyakaam **1971** - Anand, Buddha Mil Gaya - Guddi **1972** - Bawarchi- Sabse Bada Sukh **1973** - Abhimaan- Namak Haram **1974** - Phir Kab Milogi **1975** - Chaitali - Chupke Chupke - Mili **1976** - Arjun Pandit **1977** - Alaap - Kotwal Sahib **1978** - Naukri **1979** - Jurmana - Golmaal **1980** - Khubsurat **1981** - Naram Garam **1982** - Bemisaal **1983** - Namumkin - Rang Birangi **1986** - Jhooti - Hum Hindustani **1988** - Laathi **1992** - Talash **1998** - Jhoot Bole Kauwa Kate

कथाचित्र Awards for
पुरस्कार Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

वानप्रस्थम (मलयालम)

निर्माता **वी मोहन लाल** को स्वर्ण कमल तथा 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **शाजी एन. करुण** को स्वर्ण कमल तथा 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार मलयालम फिल्म **वानप्रस्थम** को जातिवाद, कलासंरक्षण, गुरुशिष्य परंपरा एवं कलाकार की संकटापन्न पहचान के बहुपक्षीय चित्रण के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM

VAANAPRASTHAM (MALAYALAM)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to producer
V. MOHANLAL

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to director **SHAJI N.
KARUN**

Citation

The Award for the Best Feature Film of 1999 is given to the Malayalam film **VAANAPRASTHAM**, for its multilayered treatment of issues like caste system, patronage to the arts, guru shishya parampara, and the identity crisis of a performing artiste.

मोहनलाल

मोहनलाल ने वानप्रस्थम में अपनी कथकली की नृत्य प्रस्तुति को इस 'व्यवसाय की गुरुदक्षिणा' कहा है। इससे बड़ी प्रशस्ति और क्या हो सकती है! इस अभिनेता का जन्म 1 मई, 1960 को हुआ और इन्होंने 1980 में **मंजिल विरिन्ना पूवकल** से अभिनय के क्षेत्र में प्रवेश किया। इन बीस वर्षों में 250 फिल्मों में कार्य किया। अधिकतम फिल्मों में प्रमुख भूमिका निभाई और **हिज़ हाइनेस अब्दुला, किरीडम, चित्रम्, वास्तुहारा** और **इरुवर** जैसी सर्वप्रिय फिल्मों प्रस्तुत की।

1991 में भरतम् में अभिनय के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त मोहनलाल ने 1997 में **काला पानी** का निर्माण भी किया। अच्छे सिनेमा के प्रति लगाव के कारण मोहनलाल मम्मूटी जैसे अभिनेता की फिल्मों का वितरण भी करते हैं।

षाजी एन. करुण

1 जनवरी, 1952 को जन्मे षाजी एन. करुण, भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, पूना से निकले प्रमुख छायांकनकार और निर्देशक के रूप में उभरकर आए हैं। सातवें और आठवें दशक में जी. अरविन्दन की फिल्मों से इन्होंने छायांकन के क्षेत्र में प्रमुखता पाई। चालीस कथाचित्रों में किए कार्य के लिए षाजी सर्वोत्तम छायांकन के लिए ईस्टमैन कोडक पुरस्कार 1990 में हुए हवाई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में, से सम्मानित किए गए।

1988 में, षाजी ने अपनी प्रथम फिल्म **पिरावी** (द बर्थ) का निर्देशन किया जिसे 45वें अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय फिल्म समारोहों के लिए चुना गया और इन्होंने 31 पुरस्कार प्राप्त किए जिनमें एडनबरा में चार्ली चेपलिन पुरस्कार, लोकार्नो में सिल्वर लेपर्ड, 1989 के केन्स के कैमरा डि.आर. का विशेष उल्लेख, शिकागो में सिल्वर ह्यूगो और भारत के राष्ट्रीय पुरस्कार सम्मिलित हैं। इनकी दूसरी फिल्म, **स्वाहम** (माई ओन) केन्स फिल्म समारोह, 1994 की भारतीय प्रस्तुति थी।



Mohanlal

Mohanlal, born on May 1, 1960, made his debut in 1980 with **Manjil Virinja Pookkal**. In these 20 years he has acted in 250 films, mostly in the lead, and given super hits like **His Highness Abdullah, Kireedam, Bharatham, Vaastuhaara and Iruvar**.

Winner of the National Award in 1991, Mohanlal produced films like **Kaalapani**, winner of five National Awards in 1997. His love for quality cinema finds him distributing Malayalam films with actors like Mammooty.

Shaji N Karun

Born on January 1, 1952, Shaji N Karun is one of the leading cinematographers and directors to have emerged from the Film and Television Institute of India in Pune. He came to the centre stage with the films of G Aravindan. His work in 40 feature films won Shaji the **Eastman Kodak Award for Excellence in Cinematography**.

In 1988 Shaji directed his first feature film, **Piravi** (The Birth), which was selected for no less than 45 international and national festivals, and won 31 awards including the Charlie Chaplin Award at Edinburgh, the Silver Leopard at Locarno, the Special Mention of the Camera D'Or at Cannes 1989.



निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

डॉलर ड्रीम्स (अंग्रेजी) तथा

लाडो (हरयाणवी)

निर्माता शेखर कमला एवं कुमुद चौधरी को 25,500 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक शेखर कमला एवं अश्विनी चौधरी को 25,500 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए 1999 का इंदिरा गांधी पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म **डालर ड्रीम्स** तथा हरयाणवी फिल्म **लाडो** को संयुक्त रूप से दिया गया है। **डॉलर ड्रीम्स** में बुद्धिजीवी युवावर्ग का तकनीकी रूप से उन्नत देशों की ओर पलायन की ज्वलन्त समस्या का स्वाभाविक चित्रण है, जबकि **लाडो** में हरियाणा के पारम्परिक, रूढ़िवादी कृषीय समाज में नारी के अधिकारों का सशक्त चित्रण है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

**DOLLAR DREAMS (ENGLISH) AND
LAADO (HARYANVI)**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to producers **SEKHAR KAMMULA & KUMUD CHAUDHARY**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to directors **SEKHAR KAMMULA & ASHWINI CHAUDHARY**

Citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 1999 is being shared by two films, **DOLLAR DREAMS (English)** and **LAADO (Haryanvi)**. Dollar Dreams tackles in a very natural manner the burning problem of brain drain to the technologically developed world, while Laado takes a bold stand over women's rights in the traditionally orthodox agricultural community of Haryana.

शेखर कमला

मकेनिकल इंजिनियर शेखर कम्प्यूटर साइंस में मास्टर्स करने के लिए अमेरिका गये। सिनेमा में रूचि के कारण इन्होंने हावर्ड यूनिवर्सिटी से एम.एफ.ए. किया। इसी दौरान शेखर ने दो लघु फिल्मों **क्वार्टर** तथा **मनी** बनायीं। भारत वापस आकर एक साफ्टवेयर कम्पनी में वरिष्ठ साफ्टवेयर सलाहकार के रूप में कार्य करने लगे। व्यक्तिगत अनुभवों के फलस्वरूप **डालर ड्रीम्स** भारतीय युवक की दुविधा - विदेश या स्वदेश का रोचक निरूपण है।



Sekhar Kammula

A mechanical engineer who did a Masters in Computer Sciences from USA, Sekhar Kammula's interest in cinema led him to do an MFA in Cinema from the Howard University, USA. While still a student, he directed two short films, **Quarter** and **Money**. On returning to India, he joined a software company where he currently works as a senior software consultant. His debut film, **Dollar Dreams**, encapsulates his personal experiences and observations.

कुमुद चौधरी

कुमुद चौधरी ने दूरदर्शन के लिए, अन्य चैनलों के लिए तथा विभिन्न मंत्रालयों के लिए अनेक वृत्तचित्रों, लघु फिल्मों एवं टेलीफिल्मों का निर्माण किया है। इनमें 26 कड़ियों वाला **बीच बहस** में, प्रेमचन्द की कहानियों पर आधारित **भोर का सिपाही** तथा मैत्रेयी पुष्पा की पुरस्कृत कृति पर आधारित शैक्षणिक टेलीफिल्म **बासुमती की चिट्ठी** प्रमुख हैं। लाडो इनकी पहली फीचर फिल्म है।



Kumud Chaudhary

Kumud Chaudhary has produced a number of documentaries, current affairs series, short films and telefilms for Doordarshan, other television channels and various ministries. Prominent among them are a 26-episode current affairs series, **Beech Bahas Mein**, **Bhor Ka Sipahi** on the collected works of Premchand and **Basumati Ki Chitthi**.

अश्विनी चौधरी

अश्विनी चौधरी ने अपना कैरियर दूरदर्शन के समाचार धारावाहिक **बीच बहस** में से शुरू किया। **भोर का सिपाही** तथा **बासुमती की चिट्ठी** इनकी अन्य उल्लेखनीय फिल्में हैं। **दिल क्या करे** में प्रकाश झा के सहायक रहे 35 वर्षीय अश्विनी की यह पहली फीचर फिल्म है।



Ashwini Chaudhary

With roots in the print media, Ashwini Chaudhary started his directorial career with **Beech Bahas Mein**, a news-based weekly on Doordarshan. **Bhor Ka Sipahi** and **Basumati Ki Chitthi** are his other notable works. **Laado** is the first celluloid venture of the 35-year-old director.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाला सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

सरफरोश

निर्माता **जॉन मैथ्यु मात्तन** को स्वर्ण कमल तथा 40,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशन **जॉन मैथ्यु मात्तन** को स्वर्ण कमल तथा 40,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **सरफरोश** को दो समाजों में परस्पर संदेह तथा संबंधों में तिकता उत्पन्न करने वाले विद्रोही उपायों के खिलाफ संघर्ष करने वाले एक इमानदार पुलिस अधिकारी के सजीव चित्रण के लिए दिया गया है। प्रथम प्रयास होने के नाते मुख्यधारा सिनेमा में यह निर्देशक का सराहनीय प्रयास है।

BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLE-SOME ENTERTAINMENT

SARFAROSH (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to producer **JOHN MATHEW MATTHAN**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to director **JOHN MATHEW MATTHAN**

Citation

The award for the Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment of 1999 is given to the Hindi film **SARFAROSH** for its engrossing projection of an honest officer, who fights engineered subversion which fuels suspicion and sours relationship between two communities. A bold subject for the debut film of a director in mainstream cinema.

जॉन मैथ्यु मात्तन

मात्तन ने मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र में बी.ए. तथा जेवियर्स, मुम्बई से जनसंचार में कोर्स करने के पश्चात् बोस्टन फ़िल्म एवं वीडियो फाउन्डेशन, यू.एस.ए. से एक कोर्स किया। **आक्रोश** में गोविन्द निहालानी तथा रिचर्ड एटनबरो की **गांधी** में मुख्य सहायक रहे। तत्पश्चात् इन्होंने अपना निर्माण कार्य शुरू किया और विज्ञापन फिल्में बनाई, जिन्हें अनेक पुरस्कार मिले। **सरफरोश** इनकी पहली फ़ीचर फ़िल्म है जिसके लिए इन्हें कहानी, पटकथा एवं निर्देशन के लिए फ़िल्मफेयर तथा स्क्रीन अवार्ड मिले हैं।



John Mathew Matthan

After graduating in Psychology and Sociology, Matthan did a Mass Communications course at Xavier's, Mumbai before going on to do a short term course at the Boston Film and Video Foundation, USA. The training was reinforced with his experience of working as chief assistant to Govind Nihalani in **Aakrosh** and in the second unit of Attenborough's **Gandhi**. Subsequently he established his production house which specialised in advertising films and won the director several awards. **Sarfarosh**, Matthan's first directorial venture, has won him the Filmfare and Screen awards for story, screenplay and direction.

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नर्गिस दत्त पुरस्कार

शहीद ऊधम सिंह (पंजाबी)

निर्माता इकबाल डिल्लो को रजत कमल तथा 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक चित्रार्थ को रजत कमल तथा 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1999 का नर्गिस दत्त पुरस्कार पंजाबी फिल्म **शहीद ऊधम सिंह** को भारतीय जनमानस के अंतःकरण को उद्वेलित कर देने वाले जलियांवाला बाग हत्याकांड की नवीन एवं तथ्यपरक प्रस्तुति के लिए दिया गया है।

**NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE
FILM ON NATIONAL INTEGRATION**

SHAHEED UDDHAM SINGH (PUNJABI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to producer **IQBAL
DHILLON**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to director
CHITRAARTH

Citation

The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration of 1999 is given to the Punjabi film, **SHAHEED UDDHAM SINGH**, for opening a new window to the Jallianwala Bagh episode, which had jolted the conscience of the Indian people.

इकबाल हिल्लों

इकबाल हिल्लों पंजाबी सिनेमा के सभी क्षेत्रों में सक्रिय हैं। इन्होंने अब तक **माही मुन्डा पुत्त जट्टाँ दे**, **गभरू पंजाब दा**, **अनख जट्ट दी**, **बदला जट्ट दा**, **दिल दा मामला**, **बागी सूरमे**, **ललकारा जट्टी दा**, **तबाही** तथा **बगावत** का निर्माण तथा **सुखखा** एवं **खून दा दाज** का निर्माण एवं निर्देशन किया है। इकबाल **कचहरी** तथा **शहीदे मोहब्बत बूटा सिंह** की कार्यकारी निर्माता है। इन दोनों फ़िल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। इन्होंने **वैरी** फ़िल्म में संगीत भी दिया है।



Iqbal Dhillon

Iqbal Dhillon is active in many field of Punjabi cinema. He has produced 10 films in the last fifteen years i.e. **Mahi Munda**, **Putt Jattan De**, **Gabhroo Punjab Da**, **Anakh Jatt Di**, **Badla Jatta Da**, **Dil Da Mamlu**, **Baghi Soormay**, **Lalkara Jatti Da**, **Tabahi** and **Baghawat**. He has produced and directed **Sukha** and **Khoon Da Daaaj**. He has been the executive producer of national award winning films **Kachehari** and **Shaheede Mohabbat Boota Singh**. He has also scored music for **Vairi**.

चित्रार्थ

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से निर्देशन का डिप्लोमा करने के पश्चात् चित्रार्थ ने अपनी मातृभाषा पंजाबी में ही फिल्में बनाने का निर्णय किया। यद्यपि उन्होंने हिन्दी में दूरदर्शन के लिए कई धारावाहिक तथा अन्य कार्यक्रम बनाये किंतु उनकी दोनो फ़ीचर फिल्में **चन्न परदेसी** और **शहीद उधम सिंह** पंजाबी में ही हैं। **चन्न परदेसी** को 1981 की सर्वोत्तम पंजाबी फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। चित्रार्थ ने कई वृत्तचित्र बनाये हैं तथा अन्य निर्माताओं के लिए पटकथाएं लिखी हैं।



Chitraarth

Graduating in direction from the FTII, Chitraarth had made it a point to make feature films in his mother tongue. Consequently, despite extensively working in Hindi serials for television, both his feature films, **Chhann Pardesee** and **Shaheed Uddham Singh** have been in Punjabi. **Chhann Pardesee**, made in 1981, won the National Award for the Best Film in the language. Chitraarth has also made documentaries and written scripts for outside productions.

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

हरीभरी (हिंदी)

निर्माता परिवार कल्याण विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार को रजत कमल तथा 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक श्याम बेनेगल को रजत कमल तथा 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार हिन्दी कथाचित्र **हरी भरी** को भारत के एक कस्बे में, पारिवारिक जीवन जहाँ स्त्री का स्वास्थ्य एवं बालिका की शिक्षा तथा भरणपोषण अज्ञानता एवं अंधविश्वास से आवृत है, के बहुत से पक्षों को उजागर करने के लिए दिया गया है।

BEST FILM ON FAMILY WELFARE

HARI BHARI (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to producer, Department of Family Welfare, Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to director **SHYAM BENEHAL**

Citation

The award for the Best Film on Family Welfare of 1999 is given to the Hindi film **HARI BHARI** for unfolding several aspects of family life in an Indian town where awareness of women's health and upbringing of the girl-child is enveloped in ignorance and blind belief.

श्याम बेनेगल

62 वर्षीय श्याम बेनेगल का परिचय देने की जरूरत नहीं। 1974 में 'अंकुर' के जरिए भारत में मध्यम सिनेमा के अग्रदूत बने। पिछले 25 वर्षों से फिल्म महोत्सवों में वे महत्त्वपूर्ण रहते हैं। टेलीविजन के लिए 1986-91 में भारत के इतिहास पर 'भारत एक खोज' नाम से एक श्रृंखला बनाने के साथ उन्होंने 1984 में सत्यजीत राय पर वृत्तचित्र बनाया। वे 1980 और 1984 तथा 1989-92 में पुणे फिल्म संस्थान के चेयरमैन रहे। बेनेगल ने अपने 'कॉपीराइटर' को कहीं दूर छोड़ दिया। उन्होंने तेलुगु में 'अनुग्रहम', 1977 तथा अंग्रेजी में 'द मेकिंग आफ महात्मा' (1995) बनायी। उन्हें 1976 में पद्मश्री और 1991 में पद्म विभूषण से नवाजा गया। पिछले वर्ष उन्हें समर फिल्म के लिए सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1966 से 1973 तक उन्होंने मास कम्युनिकेशन पढ़ाया। तदुपरान्त भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान के अध्यक्ष बने। इन्हें सोवियलैंड नेहरू पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है।



Shyam Benegal

This is the 12th National Award for Shyam Benegal, who became pioneer of the new cinema in India with the release of his first film, **Ankur**. Almost all his films have been widely acclaimed, not only in India but in international festivals, for the last 25 years. From **Manthan** and **Mammo** to **Sardari Begum** and **Samar**, the films have tackled the problems of development and social change on many levels. Apart from feature films he has made documentaries on subjects ranging from cultural anthropology and industrialisation, to music and recreation of history. His work on television comprise several popular series from **Amaravati Ki Kathayen**, to the 53-part **Bharat: Ek Khoj**, based on Nehru's Discovery of India.

Starting as a copywriter in advertising, Benegal taught mass communication techniques between 1966 and 1973 and later, as the chairman of the Film and Television Institute of India, he actively shaped film education from 1980 to 1983, and again from 1989 to 1992.

For his contributions to Indian cinema, the Government of India has conferred on him the Padma Shri (1976) and the Padma Bhushan (1991).

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियां, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

कैरी (हिन्दी)

निर्माता परिवार कल्याण विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार को रजत कमल एवं 30,000 रुपये नकद पुरस्कार

निर्देशक अमोल पालेकर को रजत कमल एवं 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थ विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दे पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार हिन्दी कथाचित्र कैरी को शिक्षा के माध्यम से बालिका को एक सुरक्षित भविष्य प्रदान करने की आवश्यकता के सुंदर प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

**BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES
SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND
CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG
ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED
ETC.**

KAIREE (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the producer **DEPARTMENT OF FAMILY WELFARE, MINISTRY OF HEALTH & FAMILY WELFARE, GOVT. OF INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to director **AMOL PALEKAR**

Citation

The award for the Best Film on Other Social Issues such as prohibition, women and child welfare, anti-dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc. of 1999 is given to the Hindi film **KAIREE** for its charming portrayal of the need to give a secure future, through education, to the girl-child in the backwaters of the country.

अमोल पालेकर

सिनेमा तथा मंच दोनों में असाधारण विषयों को रुचिकर बना कर प्रस्तुत करना अमोल पालेकर की प्रतिभा है। अमोल एक चित्रकार भी हैं। 1967 में हिंदी और मराठी थियेटर में आये अमोल पालेकर ने 1974 से हृषिकेश मुखर्जी तथा बासु चटर्जी जैसे निर्देशकों की फिल्मों में अभिनय के साथ सिनेमा जगत में कदम रखा। 1981 में अक्रीत फिल्म का निर्देशन किया। तत्पश्चात् अनकही, थोड़ा सा रूमानी हो जायें, दायरा, बांगरवाड़ी इत्यादि फिल्मों को पुरस्कृत भी किया गया तथा देश विदेश में दिखायी गयीं।



Amol Palekar

Unusual themes, treated with a sombre sobriety; that seems to be the hallmark of Amol Palekar, a director and actor, both in cinema and on stage, besides being a professional painter.

A leading personality in Marathi and Hindi theatre since 1967, Palekar has been an acclaimed actor in cinema since 1974, having acted in films by noteworthy directors like Hrishikesh Mukherjee and Basu Chatterjee. However, since he directed **Akriet** in 1981, he has allowed the actor in him to be overshadowed by the filmmaker. The films, including **Ankahee**, **Thodasa Romani Ho Jaye**, **Daayera** and **Bangarwadi**, have been featured in several festivals, national and international.

पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

जलमर्मरम (मलयालम)

निर्माता लता कुरियन राजीव एवं राधिका सुरेश गोपी को रजत कमल तथा 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक टी.के. राजीव कुमार को रजत कमल तथा 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार मलयालम कथाचित्र जलमर्मरम को हमारे औद्योगिक नगरों एवं महानगरों में बढ़ते प्रदूषण के प्रति चिंता के विषय को परीकथा का काल्पनिक पुट देकर रोचक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

BEST FILM ON ENVIRONMENT CONSERVATION/PRESERVATION

JALAMARMARAM (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to producers **LATHA KURIEN RAJEEV & RADHIKA SURESH GOPI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to director **T.K. RAJEEV KUMAR**

Citation

The award for the Best Film on Environment Conservation/Preservation of 1999 is given to the Malayalam film **JALAMARMARAM** for handling a theme of great concern in the increasingly polluted environs of our industrial towns and cities, through the imaginative touch of a fairy tale.

**लता कुरियन राजीव
राधिका सुरेश गोपी**

शांतिनिकेतन में कला के इतिहास की रिसर्च फ़ैलो लता कुरियन ने अपना कैरियर जलमर्मरम् के निर्माण से ही आरम्भ किया है।

सह-निर्मात्री राधिका सुरेश गोपी संगीत में स्नातक व गायिका हैं तथा आल इंडिया रेडियो एवं दूरदर्शन की कलाकार हैं।



टी.के. राजीव कुमार

केरल यूनिवर्सिटी से प्राणी विज्ञान में स्नातक टी.के. राजीव कुमार ने जलमर्मरम् से पूर्व मलयालम में आठ फिल्मों बनायी हैं, चाणक्यन, क्षणकथु, महानगरम्, पवित्रम्, थचोली वर्गीस चैकवर, कन्नेजुथी पोट्टुम थोट्टु आदि जिनमें कमलहसन मम्मूटी एवं मोहन लाल सरीखे अभिनेताओं ने काम किया है। आजकल वे हिन्दी फिल्म राजा को रानी से प्यार हो गया बना रहे हैं जिनमें अरविन्द स्वामी एवं मनीषा कोइराला ने अभिनय किया है। राजीव ने बाइबिल की कहानियाँ की कुछ कड़ियों का निर्देशन भी किया है।



**Latha Kurien Rajeev
Radhika Suresh Gopi**

An MA and a research fellow in the history of Art, at Santiniketan, Latha Kurien turned producer with **Jalamarmaram**.

Her co-producer, Radhika Suresh Gopi is a professional singer who graduated in Music and is a regular artiste with AIR and Doordarshan.

T K Rajeev Kumar

A zoology graduate from the University of Kerala, 39-year-old Rajeev Kumar has a formidable filmography of eight Malayalam films

- **Chanakyan, Kshanakkathu, Mahanagaram, Pavithram, Thacholi Varghese Chekavar and Kannezhuthi Pottum Thottu** among them - featuring actors like Kamalahaasan, Mammooty and Mohanlal. He is now completing a Hindi film, **Raja Ko Rani Se Pyar Ho Gaya**, featuring Arvind Swamy and Manisha Koirala. He has also directed some episodes of the Hindi teleserial, **Bible Ki Kahaniyan**.

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र पुरस्कार

दि गोल (हिन्दी)

निर्माता बाल चलचित्र समिती, भारत को स्वर्ण कमल तथा 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक गुलबहार सिंह को रजत कमल तथा 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म दि गोल को एक ऐसे कोच को खेल भावना के लिए दिया गया है जो एक उपेक्षित, अशिक्षित एवं सामाजिक रूप से लाञ्छित उम्मीदवार को बिना किसी भेदभाव के प्रोत्साहित करता है।

BEST CHILDREN'S FILM

THE GOAL (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the producer
CHILDREN'S FILM SOCIETY, India

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to director **GUL
BAHAR SINGH**

Citation

The award for the Best Children's Film of 1999 is given to the Hindi film **THE GOAL**, for stressing the sportsmanship of a small town coach who supports, without any bias, the raw talent of an under-privileged aspirant with no education and with a social stigma.

गुलबहार सिंह

विज्ञान में स्नातक गुलबहार ने पांच वर्षों तक फिल्म निर्माण का अध्ययन किया। उन्होंने 1980 में अपनी प्रथम फिल्म "बीइस" बनाई, उसके बाद सामाजिक विषयों पर अनेक फ़ीचर एवं डॉक्यूमेंटरी बनाई।

उनकी फिल्म "अनुकरण" को 1986 के पुरस्कारों में विशेष उल्लेख से सम्मानित किया गया, "बायोटेक्नोलोजी सम पासिविलिटीज़" को 1992 में पुरस्कृत किया गया, तथा "भीत" को 1996 की सर्वोत्तम परिवार कल्याण फिल्म के लिए सम्मानित किया गया। गोटीपुआ नृत्य पर शोधित फिल्म के लिए पिछले वर्ष विशेष उल्लेख से सम्मानित किया गया है। उन्होंने दूरदर्शन के लिए मुंशी प्रेमचन्द के जीवन, समय एवं कार्य के ऊपर एक लम्बी डॉक्यूमेंटरी बनाई है। ओडिसी नृत्य परम्परा पर आधारित गोटीपुआ तथा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के लिए अपनी प्रथम फ़ीचर फिल्म "सुन्दरी" बनायी।



Gulbahar Singh

Since 1980, when he made his first film **Weeds**, Gulbahar Singh has bagged a number of National Awards. In 1986, he won it for **Ankuran**, and in 1992 for **Biotechnology: Some Possibilities**. While **Bheet** was adjudged the Best film on Family Welfare, **Gotipua** was accorded a special mention in the 45th National Award. His feature film, **Sundari**, was selected for an international festival in Russia. Recently he has completed a short film, **The Melody Man**, on the Carnatic maestro Balamurali Krishna. Earlier he had made a long documentary on Premchand for Doordarshan.

सर्वोत्तम निर्देशक पुरस्कार

बुद्धदेव दासगुप्ता

निर्देशक बुद्धदेव दासगुप्ता को स्वर्ण कमल तथा 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1999 का पुरस्कार बुद्धदेव दासगुप्ता को बंगला कथाचित्र **उत्तरा** में जीवन के विभिन्न तत्त्वों, रूपकों, प्रतीकों, एवं लोक कलाओं का तानाबाना बुनने के लिए दिया गया है। निर्देशक ने आज के इस धूर्त युग में मानवता की परिभाषा पर एक प्रश्नचिन्ह भी लगाया है।

BEST DIRECTION

BUDDHADEB DASGUPTA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to director
BUDDHADEB DASGUPTA

Citation

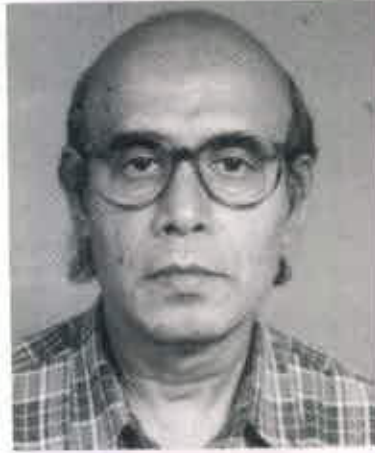
The award for the Best Direction of 1999 is given to Buddhadeb Dasgupta for the Bengali film **UTTARA**, for his skillful weaving together of different strands of life through metaphors, symbols and folk icons, to question the definition of humanity in our scoundrel times.

बुद्धदेव दाम गुप्ता

बुद्धदेव दाम गुप्ता एक मशहूर बंगला फिल्मकार हैं। सत्यजीत राय एवं ऋत्विक् घटक जैसे विलक्षण फिल्मकारों की परंपरा के हिस्से हैं। दाम गुप्ता की फिल्मों में उनकी जीवंत व्यक्तिवादिता झलकती है। जिसमें उनकी आश्चर्यजनक मौलिकता सम्मिलित होती है। उनकी फिल्मों ने भारत तथा विदेशों में अनगिनत पुरस्कार बटोरे हैं। उनकी तीन फिल्मों **बाघ बहादुर**, **लाल दरजा** तथा **चराचर** को वर्ष के सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है तथा ज्यादातर फिल्मों को विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में सम्मान के साथ दिखाया जा चुका है।

दूरत्व (1978), **नीम अन्नपूर्ण** (1979), **गृहजुधा** (1982), **अंधी गली** (1984), **फेरा** (1986), **तहादेर कथा** (1992) इनकी मुख्य फ़िल्में हैं।

अर्थशास्त्र अध्यापक रह चुके बुद्धदेव एक कवि तथा उपन्यासकार भी हैं। इनके उपन्यासों व काव्य संकलनों का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।



Buddhadeb Dasgupta

Buddhadeb Dasgupta is one of India's most eminent filmmakers today. What is of special interest about this filmmaker is not the extent to which he carries on the tradition set by Satyajit Ray, Ritwik Ghatak and the like, but the fact that he has consciously avoided incurring any debt to the founding luminaries of Indian art cinema or, for that matter, to any other filmmaker.

Beginning with **Duratwa** in 1978, and continuing with **Neem Annapurna** (1979), **Grihajuddha** (1982), **Andhi Gali** (1984), **Phera** (1986), **Bagh Bahadur** (1989), **Tahader katha** (1992), **Charachar** (1993) and **Lal Darja** (1996), his films have won numerous awards in India and abroad.

Once a teacher of Economics, Buddhadeb is also a distinguished poet and a novelist. He has to his credit seven volumes of poetry, many of which has been translated into different Indian and European languages. His novels have earned him a special berth in Bengali literature of recent times. He himself is the subject of three books: **Time and Dreams** by John W Hood, **Buddhadeb Dasgupta: Cinema of Imprinted Times** by Pradip Biswas and **A Poet with a Camera** by Ajoy Deb.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

मोहनलाल

अभिनेता मोहनलाल को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1999 का पुरस्कार मोहनलाल को मलयालम कथाचित्र वानप्रस्थम मे एक ऐसे कलाकार की संकटापन्न पहचान के सूक्ष्म चित्रण के लिए दिया गया है जिसे अपने निजी जीवन में भी पिता के रूप में पहचान एवं पैतृक अधिकारों से वंचित रहना पड़ा।

BEST ACTOR

MOHANLAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to actor **MOHANLAL**

Citation

The award for the Best Actor of 1999 is given to Mohanlal for the Malayalam film **VAANAPRASTHAM**, for his nuanced portrayal of the identity crisis experienced by a performing artiste who, in his personal life too, is torn between the denial of both, paternal identity and his own paternity rights.

मोहनलाल

मोहनलाल ने वानप्रस्थम में अपनी कथक्कली की नृत्य प्रस्तुति को इस 'व्यवसाय की गुरुदक्षिणा' कहा है। इससे बड़ी प्रशस्ति और क्या हो सकती है! इस अभिनेता का जन्म 1 मई, 1960 को हुआ और इन्होंने 1980 में मंजिल विरिन्जा पूक्कल से अभिनय के क्षेत्र में प्रवेश किया। इन बीस वर्षों में 250 फिल्मों में कार्य किया। अधिकतम फिल्मों में प्रमुख भूमिका निभाई और हिज्ज हाइनेस अब्दुला, किरीडम, चित्रम्, वास्तुहारा और इरुवर जैसी सर्वप्रिय फिल्मों प्रस्तुत की।

1991 में भरतम् में अभिनय के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त मोहनलाल ने 1997 में काला पानी का निर्माण भी किया। अच्छे सिनेमा के प्रति लगाव के कारण मोहनलाल मम्मूटी जैसे अभिनेता की फिल्मों का वितरण भी करते हैं।



Mohanlal

Mohanlal has described his performance as the Kathakali dancer in **Vaanaprastham** as a "guru dakshina to the profession". A befitting tribute, one could add. The actor, born on May 1, 1960, made his debut in 1980 with **Manjil Virinja Pookkal**. In these 20 years he has acted in 250 films, mostly in the lead, and given super hits like **His Highness Abdullah**, **Kireedam**, **Bharatham**, **Vaastuhaara** and **Iruvar**. Winner of the National Award in 1991 for **Bharatham** Mohanlal produced films like **Kaalapani**, winner of five National Awards in 1997. His love for quality cinema finds him distributing Malayalam films with actors like Mammooty.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

किरण खेर

अभिनेत्री किरण खेर को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार किरण खेर को बंगला फिल्म **बारीवाली** में एक प्रौढ़ा के जीवन्त अभिनय के लिए दिया गया है जिसकी अपरिपूरित आकांक्षाएं उसे एक सपनों के सौदागर के हाथों भावनात्मक शोषण के लिए खिलौना बना डालती हैं।

BEST ACTRESS

KIRON KHER

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to actress **KIRON KHER**

Citation

The award for the Best Actress of 1999 is given to Kiron Kher for Bengali film **BARIWALI** for the range of emotions she brings into play in living the role of an aging woman whose unfulfilled desires make her a game for emotional exploitation by a dream-merchant.

किरण खेर

स्टेज और सिनेमा की एक सशक्त अभिनेत्री ने इामा तथा अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया है। किरण ने 18 वर्ष की आयु में डिजायर अन्डर द एल्म्स में पहली बार अभिनय किया। तदुपरान्त बलन्त गार्गी, अमल अलना तथा नादिरा बब्बर जैसे निर्देशकों के साथ द स्ट्रेंजर स्ट्रिंडलबर्ग की मिस जूली तथा बैच की द गुड वुमेन ऑफ़ शेज्वन में अभिनय किया। श्याम बेनेगल की फिल्म सरदारी बेगम में अभिनय के इन्हें सर्वोत्तम सह अभिनेत्री का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। किरण ने कल्पना लाजमी की फिल्म दरमियाँ में भी अभिनय किया है। पुरुष क्षेत्र, किरण खेर टुडे तथा जागते रहो विद् किरण खेर इनके दूरदर्शन कार्यक्रम हैं। इन्हें महिला शिरोमणि पुरस्कार (1995) मिल चुका है। किरण एक दैनिक में महिला अधिकारों तथा समाज के निम्न वर्गों से संबंधित विषयों पर लिखती हैं।



Kiron Kher

A powerful actress on stage and screen, Kiron Kher did her Masters in English Literature before finishing drama school. She made her debut at the age of 18, playing the lead in **Desire Under the Elms**. Subsequently she has acted in Strindberg's **Miss Julie**, **The Stranger** and Brecht's **The Good Woman of Schezwan**, under directors like Balwant Gargi, Amal Allana and Nadira Babbar.

She won the National Award for her role in Shyam Benegal's **Sardari Begum**. She has also acted in Kalpana Lajmi's **Darmiyaan**, and anchored television shows like **Purush Kshetra**, **Kiron Kher Today** and **Jagte Raho with Kiron Kher**. Winner of the Mahila Shiromanee Award (1995), Kiron Kher writes for a daily on women's rights and issues pertaining to the underprivileged.

सर्वोत्तम सहअभिनेता पुरस्कार

अतुल कुलकर्णी

सहअभिनेता अतुल कुलकर्णी को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम सहअभिनेता का पुरस्कार अतुल कुलकर्णी को तमिल कथाचित्र हे राम में एक नृशंस एवं रूढ़िवादी व्यक्तित्व को निभाने के लिए दिया गया है जो विभाजन के उपद्रव से त्रस्त भारत में छाये हुए थे और महात्मा गांधी की हत्या के कारण बने।

BEST SUPPORTING ACTOR

ATUL KULKARNI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to supporting actor **ATUL KULKARNI**

Citation

The award for the Best Supporting Actor of 1999 is given to Atul Kulkarni for the Tamil film **HEY RAM** for his serious performance as a cold blooded fundamentalist stalking the cities during the turbulent years of partition, that led to the assassination of Mahatma Gandhi.

अतुल कुलकर्णी

अतुल कुलकर्णी को राष्ट्रीय पुरस्कार की आशा न थी किंतु जिन्होंने उन्हें 'गांधी विरुद्ध गांधी' में महात्मा के रूप में देखा है, उन्हें पूर्ण विश्वास था। नेशनल स्कूल आफ ड्रामा के स्नातक के 35 वर्षीय कुलकर्णी को अभिनय एवं निर्देशन के लिए राज्य पुरस्कार एवं आठ अन्य पुरस्कार मिल चुके हैं। टेलिविज़न में धारावाहिकों में काम करने के अतिरिक्त कुलकर्णी ने कन्नड़ फिल्म भूमिगीता तथा समाज सुधारक कर्वे के जीवन पर आधारित कल का आदमी में अभिनय किया। अमोल पालेकर की फिल्म कैरी में स्कूल अध्यापक की इनकी भूमिका अविस्मरणीय है।



Atul Kulkarni

Atul Kulkarni has gone on record saying he did not expect the National Award "in his wildest dreams," but anyone who had seen him on stage, acting as the Mahatma in **Gandhi Viruddh Gandhi**, knew he had it coming, sooner or later. A graduate of the National School of Drama, 35-year-old Kulkarni had bagged eight different awards for the role, besides winning the state government's award for acting and direction. Active in several television serials, Kulkarni has also acted in the Kannada film, **Bhumi Gita, Kal Ka Aadmi** on the social reformer Karve, besides the cameo of a handicapped school teacher in Amol Palekar's **Kaaree**.

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री पुरस्कार

सुदीप्ता चक्रवर्ती एवं सोहिनी हलदार

सहअभिनेत्री सुदीप्ता चक्रवर्ती एवं सोहिनी हलदार को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम सहअभिनेत्री पुरस्कार बंगला कथाचित्र **बारीवाली** के लिए सुदीप्ता चक्रवर्ती को तथा **पारोमीतार एक दिन** के लिए सोहिनी हलदार को संयुक्त रूप से दिया जा रहा है। सुदीप्ता चक्रवर्ती ने गंदी बस्ती से हवेली में आकर रहने वाली नौकरानी की जिजीविषा का चित्रण किया है। सोहिनी हलदार ने एक मानसिक रोगग्रस्त पुत्री, जो जानती है कि वह अपनी मां पर बोझ है, किंतु अस्हाय है, का जीवन्त अभिनय किया है।

BEST SUPPORTING ACTRESS

SUDIPTA CHAKRABORTY AND
SOHINI HALDAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to supporting actresses,
SUDIPTA CHAKRABORTY and **SOHINI HALDAR**

Citation

The award for the Best Supporting Actress of 1999 is shared by two young actresses, Sudipta Chakraborty and Sohini Haldar for the films **BARIWALI** and **PAROMITAR EK DIN** respectively. Sudipta Chakraborty essays the zest for life of a maidservant who comes from the slums and lives in a haveli. Sohini Haldar breathes life into the schizophrenic daughter who knows she is a burden on her mother, but cannot help it.

सुदीप्ता चक्रवर्ती

अपने पिता बिप्लव केतन चक्रवर्ती के निर्देशन में 24 वर्षिया सुदीप्ता ने स्टेज से शुरूआत की। बंगला समाचार कार्यक्रम खास खबर के लिए नियमित रूप से समाचार पढ़ती है। इन्होंने राजा दासगुप्ता, राजा सेन, श्यामानन्द जलान, अपर्णा सेन, गुलबहार सिंह, अंजन दत्त तथा अशोक विश्वनाथन जैसे निर्देशकों के साथ अनेक धारावाहिकों टेलिफिल्मों तथा फ्रीचर फिल्मों में काम किया है, जिनमें **संघात**, **सिराज** तथा **स्वप्नेर संघाने** शामिल हैं। सुदीप्ता ने वरिष्ठ अभिनेता उत्पल दत्त के साथ भी काम किया है।



Sudipta Chakraborty

Starting life on stage under the direction of her father, Biplab Ketan Chakraborty, this 24-year-old actress has gone on to perform under the legendary Utpal Dutt. A regular newscaster on **Khas Khabar**, the Bengali news and current affairs programme, she has acted in television serials and telefilms under established directors such as Raja Dasgupta, Raja Sen, Shyamanand Jalan, Aparna Sen, Gulbahar Singh, Anjan Dutt and Ashoke Viswanathan. **Sanghat**, **Siraj** and **Swapner Sandhaney** are the other feature films she has acted in.

सोहिनी हलदार

अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. सोहिनी हलदार ने तभी अभिनय आरंभ कर दिया था, जब वे जादवपुर यूनिवर्सिटी में थीं। विख्यात थियेटर ग्रुप नन्दीकर में आने के बाद उनके सभी मुख्य नाटकों में काम किया जिनमें **नगर कीर्तन**, **कोलकता** तथा **इ शहर इ समय** शामिल हैं। फ़िल्मी पर्दे पर अपर्णा सेन की **पारोमीता एक दिन** में मानसिक रूप से विक्षिप्त लड़की का कठिन रोल उनका पहला प्रयास है -जिसने उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार भी दिलाया है।



Sohini Halder

An MA in English literature, Sohini Halder had started acting while still at Jadavpur University. Since then she has joined the renowned theatre group, Nandikar and acted in several of their major productions, including **Nagar Keertan**, **Kolkata Kolkata** and **Ei Shahar Ei Samay**. She made her debut on screen with the difficult role of a schizophrenic in Aparna Sen's **Paromitar Ek Din** - and went on to win the National award.

सर्वोत्तम बाल कलाकार

अश्विन तम्पी

बाल कलाकार अश्विन तम्पी को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार अश्विन तम्पी को मलयालम कथाचित्र **जलमर्मरम** में एक परी के अस्तित्व में अबोध विश्वास तथा उसे एक सुरक्षित पर्यावरण प्रदान करने का आत्मविश्वास दर्शाने के लिए दिया गया है।

BEST CHILD ARTISTE

ASWIN THAMPY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000/- to child artiste **ASWIN THAMPY**

Citation

The award for the Best Child Artiste of 1999 is given to Aswin Thampy for Malayalam film **JALAMARMARAM** for essaying the innocent faith of a child in the existence of a mermaid, and his confident strides to provide it with a safe environment.

अश्विन तम्पी

एक स्कूल शिक्षिका माता एवं एकाउंटेंट पिता के सुपुत्र अश्विन तम्पी 1991 में जन्मे। प्राथमिक विद्यालय में पाठरत इस बालक की चतुर्गई एवं आत्मबल पर सर्वप्रथम निर्देशक जि.एस. विजयन के नज़र पड़ी। **साफल्यम** कथाचित्र में आपने कानन की भूमिका में इस आत्मप्रत्यय के साथ काम किया कि देखनेवाले दंग रह गये। अतः इस बालक को कई पुरस्कार मिले जिनमें प्रमुख है फिल्म समीक्षक पुरस्कार, मातृभूमि पुरस्कार एवं चलचित्र प्रशाखा समिति पुरस्कार। साथ ही अश्विन को मिला कई फिल्मों में अभिनय दक्षता दिखाने का मौका जिनमें से एक है **जलमर्मरम्**।



Aswin Thampy

Born on January 4, 1991 to a school teacher mother and an accountant father, Aswin studies in a primary school in Thiruvananthapuram. Receptive, intelligent and smart in games, Aswin was first noticed by G S Vijayan, the director of **Saphalyam** who was casting for the role of Kannan, a central character in the film. Although his debut role, Aswin essayed the character with such confidence that he became the cynosure of the viewers. This resulted in his winning the Best Child Artist award from several forums including the Film Critics, Chalachitra Prashakha Samithy, Asianet, Mathrubhoomi and the Film Fans Club. Consequent upon the success of **Saphalyam**, Aswin was entrusted with the role in **Jalamarmaram**, among many others.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

एम. जी. श्रीकुमार

पार्श्व गायक एम.जी.श्रीकुमार को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 1999 का सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार एम.जी.श्रीकुमार को मलयालम कथाचित्र वासन्तियुम लक्ष्मीयुम पिन्ने ज्ञानुम में चन्तु पोट्टुम गीत के मर्मस्पर्शी गायन के लिए दिया गया है।

BEST MALE PLAYBACK SINGER

M.G. SREEKUMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to male playback singer
M.G. SREEKUMAR

Citation

The award for the Best Male Playback Singer of 1999 is given to M.G. Sreekumar for a heartwarming rendition of the song Chantu Pottum in the Malayalam film **VASANTHIYUM LAKSHMIYUM PINNE NJAANUM.**

एम.जी. श्रीकुमार

एम.जी. श्रीकुमार वाणिज्य स्नातक हैं। उनका परिवार संगीतज्ञों का परिवार है। वे अब तक 200 से अधिक फिल्मों में लगभग 800 गाने गा चुके हैं। उन्हें फिल्म **किरीडम** के लिए केरल राज्य का सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार मिल चुका है। इन्होंने शास्त्रीय संगीत का अध्ययन किया है। वर्ष 1990 में हिज़ हाइनेस अब्दुल्ला में गायन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।



M.G. Sreekumar

M.G. Sreekumar, a Commerce graduate, belongs to a family of musician father, mother, brother and sister. He has sung about 800 songs in more than 200 films. Winner of the Kerala state award as the best male playback singer for **Kireedam**, he received training in Classical music. In 1990 he won the National Award for singing in the film **His Highness Abdullah**.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

जयश्री दासगुप्ता

पार्श्व गायिका जयश्री दासगुप्ता को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्वगायिका का 1999 का पुरस्कार जयश्री दासगुप्ता को बंगला फिल्म पारोमीतार एक दिन में हृदय अमार प्रोकाश होलो के गायन के लिए दिया गया है। गायिका ने टैगोर का यह गीत मानसिक रूप से विकल पात्र की मनःस्थिति का चित्रण करते हुए भावपूर्ण ढंग से गाया है।

BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

JAYSHREE DAS GUPTA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to female playback singer
JAYSHREE DAS GUPTA

Citation

The award for the Best Female Playback Singer of 1999 is given to Jayshree Das Gupta for the song *Hriday Aamar Prokash Holo (My Heart is Open to the Endless Sky)* in the Bengali film **PAROMITAR EK DIN**. This song of Tagore has been soulfully rendered by the singer expressing the inner world of a mentally challenged character in this film.

जयश्री दासगुप्ता

रवीन्द्र नाथ टैगोर के गीत को जयश्री दासगुप्ता के संयमित किंतु भावपूर्ण स्वर ने और भी सुंदर बना दिया है। सौंदर्यबोध, भावाभिव्यक्ति और स्वर की कोमलता ने जयश्री की स्वरीयता में चार चाँद लगा दिये हैं। आश्चर्य होता है कि टाटा टी में काम करने वाली जयश्री के लिए गायन केवल एक शौक है। संगीत में रूचि रखते हुए जयश्री ने शास्त्रीय संगीत भी सीखा और इन्हें रबीन्द्र संगीत के देवव्रत बिस्वास, शैलजारंजन मजूमदार तथा बननी घोष जैसे विशेषज्ञों का संरक्षण मिला। जयश्री दासगुप्ता आल इंडिया रेडियो तथा दूरदर्शन की कलाकार भी हैं। इन्होंने मृणाल सेन एवं चिदानन्द दासगुप्ता सरीखे निर्देशकों के साथ काम किया है।



Jayashree Das Gupta

Restrained yet expressive, Jayashree Das Gupta is particularly adept at conveying the lyrical beauty of a Tagore song. Remarkable is her aesthetic sensibility, intensity of expression and the tenderness that marks her tonality. It comes as a bit of surprise that singing is a leisure time activity for this executive of Tata Tea.

Music, however, has always claimed the attention of this graduate in Economics. Starting with lessons in Classical music, she has enjoyed the tutelage of distinguished exponents of Rabindra Sangeet such as Debabrata Biswas, Sailajaranjan Majumdar and Banani Ghosh. Qualifying with distinction from Surangama, Jayashree Das Gupta has been a graded artiste of AIR and Doordarshan. In addition, she has performed for well known directors like Mrinal Sen and Chidanand Dasgupta.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

अनिल मेहता

छायाकार अनिल मेहता को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार फिल्म प्रीसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला एडलैब मुम्बई को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1999 का पुरस्कार अनिल मेहता को हिन्दी कथाचित्र हम दिल दे चुके सनम के लिए दिया गया है। छायाकार इस संगीतात्मक कथाचित्र के विभिन्न रंगविन्यासों द्वारा बदलती हुई भावदशाओं को दर्शाने में समर्थ हुआ है।

BEST CINEMATOGRAPHY

ANIL MEHTA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to cameraman **ANIL MEHTA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the laboratory processing the film **ADLABS**, Mumbai

Citation

The award for the Best Cinematography of 1999 is given to Anil Mehta for the Hindi film **HUM DIL DE CHUKE SANAM** for a wide range of tonal variations achieved by the cinematographer to express the changing moods of this musical in a given space and time.

अनिल मेहता

भारतीय फिल्म एवं टेलिविजन संस्थान के स्नातक अनिल मेहता अनेक विज्ञापन फिल्मों तथा वृत्तचित्रों के साथ साथ मणिकौल की क्लाउड डोर, संजय लीला भन्साली की खामोशी द म्यूज़िकल तथा आमिर खान की लगान के छायाकार हैं। इन्होंने होली, मिर्च मसाला तथा धारवाहिक मिस्टर योगी के निर्देशन में केतन मेहता को सहयोग भी दिया।



Anil Mehta

A graduate of the Film and Television Institute of India, Pune, Anil Mehta has been the director of Photography for Mani Kaul's **Cloud Door**, Sanjay Leela Bhansali's **Khamoshi The Musical** and currently for Aamir Khan's **Lagaan**, besides a number of advertising and corporate films and documentaries. He has also been associated with Ketan Mehta, assisting him in **Holi** and **Mirch Masala** and co-directing the television serial **Mr Yogi**.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

माडम्पु कुन्जुकुट्टन

पटकथा लेखक माडम्पु कुन्जुकुट्टन को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1999 का पुरस्कार माडम्पु कुन्जुकुट्टन को मलयालम कथाचित्र **करुणम्** के लिए दिया गया है। संवेदनशील पटकथा पर आधारित करुणम की हृदयस्पर्शी कहानी एक वृद्ध दम्पति के इर्द-गिर्द अत्यधिक संजीदगी एवं निपुणतापूर्वक बुनी गई है।

BEST SCREENPLAY

MADAMPU KUNJUKUTTAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to screenplay writer
MADAMPU KUNJUKUTTAN

Citation

The award for the Best Screenplay for 1999 is given to Madampu Kunjukuttan for the Malayalam film **KARUNAM**. The touching story of Karunam was expressed with extreme economy and skillful cinematic treatment based on a sensitive screenplay woven around an old couple.

माडम्पु कुन्जुकुट्टन

संस्कृत एवं मलयालम के स्कॉलर माडम्पु कुन्जुकुट्टन एक लेखक हैं तथा केरल साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। इनके द्वारा लिखी गयी पटकथाओं में देशाडनम् को राष्ट्रीय पुरस्कार तथा करुणम को अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ है।



Madampu Kunjukuttan

A Sanskrit and Malayalam scholar, Madampu Kunjukuttan is a leading writer whose works in the language has won him the Kerala Sahitya Academy award. Among his screenplays, **Desadanam** got the National Award while **Karunam** won the Golden Peacock at the International Film Festival of India in 2000.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

अनूप मुखोपाध्याय

अंतिम मिक्सड साउंड ट्रेक के पुनः रिकार्डिंग करने वाले अनूप मुखोपाध्याय को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1999 का पुरस्कार अनूप मुखोपाध्याय को बंगला फिल्म उत्तरा के लिए दिया गया है। ध्वनि आलेखक फिल्म के नितान्त कठोर दृश्यों में ध्वन्यात्मकता लाने में सफल हुआ है। अंतिम मिक्सड ट्रेक द्वारा फिल्म अत्यधिक प्रभावशाली बन गई है।

BEST AUDIOGRAPHY

ANUP MUKHOPADHYAY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Re-recordist of the final mixed track **ANUP MUKHOPADHYAY**

Citation

The award for the Best Audiography of 1999 is given to Anup Mukhopadhyay for the Bengali film **UTTARA**. The audiographer has created the ambience of sound in different layers to create an atmosphere in support of the stark visuals. The final mixed sound track has enhanced the effect of viewing the film enormously.

अनूप मुखोपाध्याय

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से ध्वनि आलेखन में डिप्लोमा में प्रथम श्रेणी प्राप्त अनूप मुखोपाध्याय दूरदर्शन, राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम एवं पश्चिम बंगाल सरकार के रूपायन में ध्वनि आलेखन से संबंधित विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं। तीन वर्षों तक सत्यजित राय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान के डीन भी रह चुके हैं। इसी दौरान अनूप ने सत्यजित राय, बुद्धदेव दासगुप्ता तरुण मजूमदार, तपन सिन्हा, मृणाल सेन, अपर्णा सेन, नबेन्दु चटर्जी, गौतम घोष, प्रभात राय भवेन्द्र नाथ साँकिया, विक्टर बैनर्जी, अन्जन चौधरी बीरेश चटर्जी इत्यादि जैसे निर्देशकों के साथ 250 से अधिक फ़ीचर फ़िल्मों तथा वृत्तचित्रों में ध्वनि आलेखन किया है। वे इस समय कलकत्ता की एक कम्पनी चैनल एट में तकनीकी निर्देशक हैं।



Anup Mukhopadhyay

An FTII graduate in Sound Recording and Sound Engineering, Anup Mukhopadhyay has worked in Doordarshan, NFDC and Rupayan, WBFDC Govt. of West Bengal. During his film career at these institutions he has designed, recorded or re-recorded (final mixing of sound track) for more than 250 feature films and documentaries made by many eminent filmmakers, namely, Satyajit Ray, Buddhadev Dasgupta, Tarun Mazumdar, Tapan Sinha, Mrinal Sen, Aparna Sen, Nabyendu Chatterji, Gautam Ghosh, Prabhat Ray, M.S. Sathyu, Dr. Bhabendra Nath Saikia, Gautam Bora, Manmohan Mahapatra, Pradip Kishen, Victor Banerji as well as mainstream filmmakers like Anjan Chowdhury, Swapan Saha, Biresh Chatterji, Salil Dutta, Arabinda Mukherji.

सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार

श्रीकर प्रसाद

संपादक श्रीकर प्रसाद को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संपादन का 1999 का पुरस्कार श्रीकर प्रसाद को मलयालम कथाचित्र **वानप्रस्थम** के लिए दिया गया है। संपादक ने आकार एवं विषय की वांछित एकात्मकता को छवि एवं ध्वनि का लयात्मक एवं पूर्ण सामञ्जस्य बिठाते हुए सम्प्रेषित किया है।

BEST EDITING

SREEKAR PRASAD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to editor **SREEKAR PRASAD**

Citation

The award for the Best Editing of 1999 is given to Sreekar Prasad for the Malayalam film **VAANAPRASTHAM**. The editor has maintained the required unity of form and content by putting images and sound tracks in perfect harmony and rhythm for this film.

ए. श्रीकर प्रसाद

सन् 1963 में चेन्नई में जन्मे श्रीकर प्रसाद मद्रास विश्वविद्यालय से साहित्य में डिग्री हासिल करने के पश्चात् अपने पिता, ए. संजीव से सम्पादन का काम सीखे। तत्कालीन 20 फिल्मों में उनके सहायक रहने के बाद आप स्वयं सम्पादन करने लगे। अब तक आपने कश्मीर से केरल तक फैले चित्रकारों के लिए 150 फ़ीचर एवं वृत्तचित्रों का सम्पादन किया है। इनमें से कई फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है, जिनमें प्रधान है राख (हिन्दी, 1988); राग विराग (असमिया, 1996); नौका चरित्ररामु (अंग्रेजी लघुचित्र, 1996) एवं द टेरिस्ट (तमिल, 1996)। पिछले साल करुणम चित्र के लिए आपको केरल राज्य का पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्रीकर ने डिजिटल नॉन लीनियर संपादन तकनीक की संपादन यूनिट की स्थापना की है।



A Sreekar Prasad

Born in 1963 in Chennai, Sreekar Prasad graduated in literature from the University of Madras. His training in editing was under his father, A Sanjivi, whom he assisted in 20 feature films before independently editing more than 150 feature and documentary films, "for filmmakers from Kerala to Kashmir." He has already won the National Award for four films: Hindi feature film, **Raakh** (1988); Assamese feature film, **Raag Birag** (1996); English Documentary **Nauka Charitramu** (1996) and the Tamil feature film **The Terrorist** (1998). Last year he won the Kerala State Award for **Karunam**. He has set up his own editing unit installed with the latest technology in Digital Non-linear Editing.

सर्वोत्तम कला निर्देशन

नितिन देसाई

कला निर्देशक नितिन देसाई को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कलानिर्देशन का 1999 का पुरस्कार नितिन देसाई को हिन्दी कथाचित्र **हम दिल दे चुके सनम** में परम्परागत हवेली के परिवेश की नवीन प्रस्तुति तथा विद्यमान संरचना के साथ उसका तालमेल बिठाने, सैट्स के अलंकरण तथा क्षेत्र की सर्वोत्तम जीवनशैली के पुनर्सृजन के लिए दिया गया है।

BEST ART DIRECTION

NITIN DESAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to art director **NITIN DESAI**

Citation

The award for the Best Art Direction of 1999 is given to Nitin Desai for the Hindi film **HUM DIL DE CHUKE SANAM** for recreating the haveli ambience and matching it with the existing structure used, the decor of the sets, and for recreating the best of lifestyles of the region.

नितिन चंद्रकांत देसाई

मंसूर खान की 'जो जीता वही सिंकदर' से स्टूरला गनरसन की 'सच ए लांग जर्नी', गोविंद निहलानी की 'द्रोहकाल' और जान कैम्पियन की 'होली स्मोक' तक कई फिल्मों में नितिन देसाई का कला निर्देशन देखा जा सकता है। उन्होंने संजय लीला भंसाली की 'खामोशी' के बैक ड्राप डिजाइन में मदद की जिसका सेट गोवा में लगाया गया था जिसके लिए इन्हें फिल्म फेयर पुरस्कार मिला। गुलजार ने आतंकवाद ग्रस्त पंजाब पर 'माचिस' बनायी जिसके सेट श्री देसाई ने बनाए। उन्होंने 'चाणक्य' और 'गीता रहस्य' जैसे धारावाहिकों के सेट भी बनाए। नितिन देसाई अब तक दो स्क्रीन और दो फिल्म फेयर एवार्ड जीत चुके हैं। उन्हें 'सच ए लांग जर्नी' के सर्वोत्तम कला निर्देशक के लिए जिनी एवार्ड के लिए नामजद किया गया था। बाबा साहेब अम्बेडकर के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।



Nitin Chandrakant Desai

National Award for **Dr Babasaheb Ambedkar**. Filmfare award for **Khamoshi** and **1942 A Love Story**. Upton award for the teleserial **Chanakya**. Nomination for the Prix Genie Award for **Such a Long Journey**, by the Academy of Canadian Cinema and Television. These tell their own story. As do the films Nitin Desai has worked for: **Salaam Bombay**, **Kamasutra**, **Holy Smoke** (directed by Jane Campion), **Drohkaal**, **Parinda**, **Jo Jeeta Wohi Sikandar**, **Maachis**, **Kareeb**, **Hu Tu Tu**, **Josh...** If each of these films impressed the viewers with their authentic recreation of period and place, it was in **Dr Babasaheb Ambedkar** that he truly excelled himself, with sets bringing to life the flavour of by-gone years (1890-1940) and distant locations in London and America of the pre-Independence years.

The assurance of such quality work has increased the demand for Nitin Desai, who is often required to design stage for state and national occasions, even outside India.

सर्वोत्तम वेशभूषाकार पुरस्कार

सारिका कमल हासन

वेशभूषाकार सारिका कमल हासन को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषाकार का 1999 का पुरस्कार सारिका कमल हासन को तमिल कथाचित्र हे राम में लाहौर, कलकत्ता, चेन्नई एवं दिल्ली जैसे विविध क्षेत्रों को समसामयिक वेशभूषाओं को आधुनिक परिदृश्य में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

BEST COSTUME DESIGNER

SARIKA KAMAL HAASAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to costume designer
SARIKA KAMAL HAASAN

Citation

The award for the Best Costume Designer of 1999 is given to Sarika Kamal Haasan for recreating in **HEY RAM** a range of period costumes worn by characters from regions as varied as Lahore, Calcutta, Madras and Delhi, and coming down to present times.

सारिका कमल हासन

बचपन से ही अभिनय करने वाली सारिका ने अपने पति को फिल्म निर्माण एवं निर्देशन में सहयोग देने का निर्णय किया। हे राम से पूर्व सारिका ने गुना, थेवर मगन, कादला कादला, चाची 420, कुरुती पुनाल एवं लेडीज़ ओनली में वस्त्रसज्जा का काम किया। फिल्में देखकर यह पता चलता है कि प्रत्येक वेशभूषा के लिए इन्होंने समय, स्थान और व्यक्तित्व के बारे में पूरी रिसर्च की है, चाहे वह समसामयिक विषय हो या ऐतिहासिक।



Sarika Kamal Haasan

A shining star of the Mumbai film industry of the 1980s, Sarika chose to assist her husband Kamal Haasan in his passion, filmmaking. Taking to costume designing, she set for herself a standard that has won her rave reviews and now, a National award. **Guna, Thevar Magan, Kadhala Kadhala, Chachi 420, Kurudhi Punal, Ladies Only** and **Hey Ram**: The films show that her work is backed by research into the time period and the location against which the film is set - be it contemporary or a page out of history.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

इस्माईल दरबार

संगीत निर्देशक **इस्माईल दरबार** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1999 का पुरस्कार इस्माईल दरबार को हिंदी कथाचित्र **हम दिल दे चुके सनम** में शास्त्रीय संगीत से लेकर लोक संगीत की भारतीय छवि को संपूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित करने तथा फिल्म की संगीतात्मकता को संवारने के लिए दिया गया है।

BEST MUSIC DIRECTION

ISMAIL DARBAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to music director (songs and background music score), **ISMAIL DARBAR**

Citation

The award for the Best Music Direction of 1999 is given to Ismail Darbar for the Hindi film **HUM DIL DE CHUKE SANAM**, for an innovative score that blends in the entire spectrum of Indian music, from classical to folk, to embellish the film's musical narrative.

इस्माईल दरबार

1977 में युवक इस्माईल दरबार सूरत से मुम्बई वायलिन सीखने आये और 12 वर्षों की ट्रेनिंग के पश्चात संजय लीला भंसाली की 'खामेशी द म्यूज़िकल' के लिए संगीत दिया। भंसाली का साथ ही 'हम दिल दे चुके सनम' के संगीत में फलीभूत हुआ। दरबार ने 'तेरा जादू चल गया' में भी संगीत निर्देशन किया है और अब 'देवदास, दीवानगी तथा महबूबा' में कार्य कर रहे हैं।



Ismail Durbar

In 1977, when he was barely into his teens, Ismail Durbar left Surat and came to Bombay to learn violin. After 12 years of training, as part of a musical team, he played for Sanjay Leela Bhansali's **Khamoshi The Musical**. That was the beginning of an association which flowered into his composing the music for **Hum Dil De Chuke Sanam**, where music is as important as one of the characters.

Durbar has subsequently scored the music of **Tera Jadoo Chal Gaya** and is currently composing for **Devdas**, **Deewangi** and **Mehbooba**.

सर्वश्रेष्ठ गीतकार पुरस्कार

वैरामुत्तु

गीतकार वैरामुत्तु को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 1999 का सर्वश्रेष्ठ गीतकार का पुरस्कार वैरामुत्तु को तमिल पटकथा संगमम के गीत **मुत्तल मुराय किल्ली पारतेन्** के लिए दिया गया है। विख्यात कवि ने अपनी अनुकरणीय शैली में गीत को अद्भुत सौंदर्य प्रदान किया है।

BEST LYRICS

VAIRAMUTHU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to lyricist
VAIRAMUTHU

Citation

The award for the Best Lyrics of 1999 is given to Vairamuthu, for the lyric **Muthal Murai Killi Paarthen** in the Tamil film **SANGAMAM**. In his own imitable style, the renowned poet has imparted a certain lyrical charm to the song.

वैरामुत्तु

वैरामुत्तु को बचपन से ही कविताओं का शौक था। सुब्रमनियम भारती तथा भारतीदासन से प्रेरणा प्राप्त कर वैरामुत्तु की अब तक 24 कवितावें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके प्रभावशाली लेखन एवं कविताओं के लिए उन्हें कई पुरस्कार भी मिले हैं। भारतीराजा ने पहली बार उन्हें तमिल फिल्मों में 1980 में काम करने का अवसर दिया। 1985 में वैरामुत्तु को सर्वोत्तम गीतकार का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। तमिल वलार्ची मंड्रम ने उन्हें 'काव्यरसु' (कवियों के राजा) की उपाधि से नवाजा। अब तक वे 4000 से ऊपर गीत लिख चुके हैं। उनकी 30 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें से आठ काव्य संग्रह हैं।



Vairamuthu

This is the fourth time the National Award for the best lyrics is going to Vairamuthu, who won it earlier in 1986, 1992 and 1994. With numerous other state level awards going to him, Vairamuthu has become synonymous with quality songs in Tamil films.

No less worthy of recognition are his contributions to Tamil literature. He has published about 30 books, comprising eight anthologies of his poetical works, two of his lyrics, seven novels, eight collections of essays and an epic work on the life of Mahakavi Bharati. But before all this, at the age of 21, he wrote his autobiography - becoming perhaps the youngest to do so on the Indian subcontinent.

However, it is for the 4000 lyrics he penned since Bharathiraja introduced him in 1980, that the 47-year-old Vairamuthu is a household name today.

निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार

कलाभवन मणि (वासन्तियुम लक्ष्मीयुम पिनै ज्ञानुम)

अभिनेता कलाभवन मणि को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार अभिनेता कला भवन मणि को मलयालम कथाचित्र वासन्तियुम लक्ष्मीयुम पिनै ज्ञानुम में एक नेत्रहीन व्यक्ति के संवेदनशील एवं यथार्थपूर्ण अभिनय के लिए दिया है जो अपने सद्ब्यवहार किंतु दृढ़ता से कठिनाईयों का सामना करते हुए जीवन को सार्थक बनाता है।

SPECIAL JURY AWARD

KALABHAVAN MANI

(Vasanthiyum Lakshmiyum Pinne Njanum)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to actor **KALABHAVAN MANI**

Citation

The Special Jury Award of 1999 is given to the actor Kalabhavan Mani in the Malayalam film **VASANTHIYUM LAKSHMIYUM PINNE NJAANUM** for a sensitive and realistic portrayal of a blind man, complete with his behavioural and gestural distortions, as he copes with difficulties in making life meaningful.

कलाभवन मणि

स्टेज से फिल्मों में आये 29 वर्षीय अभिनेता कलाभवन मणि ने सैंकड़ों फिल्मों में हास्य कलाकार की भूमिका निभायी है। **वासन्तीयुम लक्ष्मीयुम पिन्ने ज्ञानम** में नेत्रहीन व्यक्ति की सद्भावना पूर्ण भूमिका के लिए इन्हें केरल राज्य सरकार का निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार तथा मातृभूमि पुरस्कार मिल चुके हैं।



Kalabhavan Mani

The 29-year-old actor who had started life on stage and gone on to act in hundreds of comedies, has arrived in Malayalam films with **Vasanthium Lakshmiyum Pinne Njaanum**. His efforts in mastering the gestures and mannerisms of a blind person have not gone unrewarded: he has already won the Kerala government's Special Jury award and the Mathrubhumi award, among many others, for the role.

सर्वश्रेष्ठ विशेष प्रभाव सृजन पुरस्कार

मैसर्स मन्त्र

प्रभाव सृजक **मैसर्स मन्त्र** को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

विशेष प्रभाव सृजन का 1999 का पुरस्कार मैसर्स मन्त्र को तमिल कथाचित्र **हे राम** में अतीत में रहने तथा भारतीय इतिहास के शीर्ष के साथ सम्पर्क की कल्पना में विशेष प्रभाव द्वारा वृद्धि करने के लिए दिया गया है।

BEST SPECIAL EFFECTS

M/S MANTRA (HEY RAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to **M/S MANTRA**

Citation

The Best Special Effects Award of 1999 is given to M/s Mantra for the Tamil film **HEY RAM** for judicious use of special effects to enhance the feel of living in the past and conversing with a legend of Indian history.



ராஜ்கமலின்...

வேராம்

கமல்ஹாசன்
இளையராஜா

सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन पुरस्कार

समीर तन्ना, अर्श तन्ना एवं वैभववी मर्चेन्ट

नृत्य निर्देशकों समीर तन्ना, अर्श तन्ना एवं वैभववी मर्चेन्ट को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम नृत्य निर्देशक का 1999 का पुरस्कार समीर तन्ना, अर्श तन्ना एवं वैभववी मर्चेन्ट को हिन्दी कथाचित्र हम दिल दे चुके सनम में नृत्य के साथ संगीत का समन्वय स्थापित कर उसके दृश्यात्मक सौंदर्य में अभिवर्धन के लिए दिया गया है।

BEST CHOREOGRAPHY

SAMEER TANNA, ARSH TANNA AND VAIBHAVI MERCHANT

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to choreographers **SAMEER TANNA, ARSH TANNA AND VAIBHAVI MERCHANT**

Citation

The award for the Best Choreography of 1999 is given to **Sameer Tanna, Arsh Tanna and Vaibhavi Merchant** for 'Dhol Baje' in the Hindi film **HUM DIL DE CHUKE SANAM** for combining musical elements in the dance number skillfully composed by the choreographer to enrich visual opulence.

अर्श तन्ना एवं समीर तन्ना

अर्श तन्ना ने बचपन में ही रोशन कुमारी से कथक नटवारी नृत्य सीखा तथा समीर तन्ना को लोक नृत्य विरासत में अपने पिता अनिरुद्ध तन्ना से मिला। दोनों ने फेस्टीवल ऑफ इंडिया तथा वर्ल्ड फोल्क फेस्टीवल, यू.एस.ए. में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1990 में इन्होंने कला निर्र्जरी नाम से अपना ग्रुप आरम्भ किया जो कई देशों में कार्यक्रम पेश कर चुका है। बिल क्लिंटन के मुम्बई आने पर इन्होंने गर्बा एवं रास का रंगारम कार्यक्रम प्रस्तुत किया।



Arsh Tanna Sameer Tanna

From a very young age, Arsh Tanna learnt Kathak Natwari Nritya under Roshan Kumari, while Sameer Tanna inherited the folk dance of his father, Aniruddh Tanna. They both represented India in the Festival of India and at a World Folk Festival in USA. In 1990 they founded their own group, Kala Nirjhari which has performed in many countries. They also performed the colourful garbha and raas dances for the American President Bill Clinton when he visited Mumbai.



वैभवी मर्चेन्ट

जयपुर घराने के कथक सम्राट सुन्दर प्रसाद की प्रपौत्री एवं नृत्य निर्देशक हीरालाल की पौत्री वैभवी भारतीय एवं पश्चिमी नृत्य दोनों में दक्ष हैं। इनकी शिक्षा रोहिन्टन कामा, चिन्नी प्रकाश तथा मार्था डा कुन्हा जैसे मास्टर्स के संरक्षण में हुई। सचिन शंकर बेल्ले यूनिट में नृत्य के अतिरिक्त वैभवी ने मलयालम फिल्म **स्नेह पूर्वम् अन्ना** में मुख्य भूमिका निभायी है। आजकल वे लगान, ना तुम जानो ना हम तथा फिलहाल के लिए नृत्य निर्देशन कर रही हैं।



Vaibhavi Merchant

Great grand daughter of Jaipur gharana Kathak maestro Sundar Prasad and grand daughter of film choreographer Hiralal, Vaibhavi trained in both Indian and Western classical dance, under masters like Rohinton Cama, Chinni Prakash and Martha Da Cunha. Besides performing in festivals organised by Sachin Shankar Ballet Unit, Kathak Kendra and Sangeet Natak Akademi, she has acted in the lead role of a Malayalam film, **Sneha Poorvam Anna**. Currently she is choreographing for **Lagaan, Na Tum Jaano Na Hum** and **Filhaal**.

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र

पोखी

निर्माता डॉलफिन कम्युनिकेशन्स को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक जाहनु बरुआ को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार **पोखी** फिल्म को एक अनाथ लड़की को पीड़ा के सुंदर चित्रण के लिए दिया गया है। फिल्म अन्ततः एक स्वार्थी जमींदार के हृदय परिवर्तन में बालिका की भूमिका को दर्शाने, सशक्त चरित्रचित्रण, कला निष्पादन इत्यादि में संतुलन स्थापित करने में सफल हुई है।

BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

POKHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to producer **DOLPHIN COMMUNICATIONS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to director **JAHNU BARUA**

Citation

The award for the Best Feature Film in Assamese of 1999 is given to **POKHI** for a beautifully structured film centered around the turmoil in the life of an orphan. The film finely balances the demands of characterisation, performance and storytelling to focus attention on the role played by the child in bringing about an attitudinal change in a selfish money lender.

जाहनु बरूआ

जाहनु बरूआ फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान के स्नातक हैं। उनकी प्रथम कथाचित्र अपरूपा (असमिया) को 1983 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। पापोरी और हलोधिआ चोराए बाओधन खाई भी सराहनीय थी। हलोधिआ चोराए बाओधन खाई को 1988 के राष्ट्रीय फिल्म समारोह में स्वर्ण कमल तथा लोकानो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में रजत पदक प्राप्त हुआ था। 1989 में टोकियो फिल्म समारोह में इस फिल्म को सर्वोत्तम एशियाई फिल्मों में दर्शाया गया था। 1990 में जाहनु ने बनानी और उसके बाद फिरिगोती बनाई। फिरिगोती को 1992 में रजत कमल मिला। उनकी फिल्म हखागोरोलोई बोहु दूर को सर्वोत्तम निर्देशन के लिए रजत कमल एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। फिल्मों से पहले वे भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन में काम करते थे। वे आजकल जेवियर इन्स्टीट्यूट ऑफ कम्प्यूनिकेशन, मुंबई में सिनेमा विषय को पढ़ाते भी हैं।



Jahnu Barua

Born in 1952, Jahnu Barua graduated in Science before joining the Film and Television Institute of India in 1974. As a television producer for the Indian Space Research Organisation he made more than 200 educational programmes for rural children. Having sharpened his skills with short and documentary films, he launched his first feature film in 1982. All the nine feature films he has made since, have won national or international recognition. **Halodhiya Choraye Baodhan Khaye** won Golden Lotus in India and the Silver Leopard in Locarno, in 1988. Later **Hkhagoroloi Bohu Door** won the National Award for Best Direction as also one at Brussels. **Aparooa, Papori, Banani** and **Firingoti** are among his widely acclaimed works.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र

पारोमीतार एक दिन

निर्माता राजेश अग्रवाल को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशिका अपर्णा सेन रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार पारोमीतार एक दिन को समाज एवं मानवीय संबंधों के बदलते प्रतिमानों को संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है। फिल्म एक सास और बहू के बीच बदलते समीकरणों को दर्शाती है, जो शुरू में तो प्रतिकूल थी, किंतु बाद में अन्तरंग मित्र बन जाती हैं।

BEST FEATURE FILM IN BENGALI

PAROMITAR EK DIN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to producer **RAJESH AGARWAL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to director **APARNA SEN**

Citation

The award for the Best Feature Film in Bengali of 1999 is given to **PAROMITAR EK DIN**. The changing temper of society and the changing balances of human relationships are very sensitively portrayed. The film highlights the changing equations between a mother-in-law and daughter-in-law, who begin as adversaries and become confidantes.

राजेश अग्रवाल

टेलिविज़न धारावाहिकों के मुख्य निर्माता राजेश अग्रवाल विष्णु पाल चौधरी की निजेर संगे देखा एवं स्वप्न निये के साथ सिनेमा में आये। इनके सीरियलों में **कोनो एक दिन**, **एकती सम्वाद**, **छाया छवि**, **वधु** **माता कन्या** अभिनेत्री तथा **इन्तज़ार** शामिल हैं।



Rajesh Agarwal

Rajesh Agarwal, a leading producer of television serials, had turned to cinema with Bishnu Pal Chowdhuri's **Nijer Sange Dekha** and **Swapna Niye**. His serials include **Kono Ek Din**, **Ekta Sambad**, **Chhaya Chhabi**, **Badhu Mata Kanya** in Bengali, besides **Abhinetri** and **Intezar Hai** in Hindi.

अपर्णा सेन

अपर्णा का जन्म सिनेप्रेमियों के परिवार में हुआ। इनके पिता सुप्रसिद्ध फिल्म लेखक एवं समीक्षक चिदानन्द दासगुप्ता कलकत्ता फिल्म सोसायटी के संस्थापक सदस्य थे। सत्यजित राय की फिल्म **तीन कन्या** में 1961 में अपर्णा ने पहली बार अभिनय किया, तब से इन्होंने मृणाल सेन, जेम्स आइवरी, रितुपर्णो घोष जैसे निर्देशकों के साथ कई फिल्मों में अभिनय किया। मृणाल सेन की फिल्म **महापृथ्वी** के लिए इन्हें मास्को फिल्म समारोह में सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार मिला।

निर्देशक के रूप में अपर्णा की पहली फिल्म **36 चौरंगी लेन** को निर्देशन एवं छायांकन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिले तथा मनीला में ग्रां प्री मिला। इसके पश्चात् **परोमा**, **सती युगान्त**, **पिकनिक** इत्यादि फिल्मों पुरस्कृत हुईं। वे महिलाओं पर आधारित बंगाली पत्रिका सनन्दा की संपादिका भी हैं। भारत सरकार ने इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया है।



Aparna Sen

Aparna Sen's father, noted film critic Chidanand Dasgupta, was a founder member of the Calcutta Film Society. It was in Ray's **Teen Kanya** that Aparna made her debut as an actress in 1961. She has since acted in films with several noted directors including Mrinal Sen, James Ivory and Rituparno Ghose. For her role in Sen's **Mahaprithibi**, she won the Best Actress award at the Moscow Film Festival.

Aparna's first directorial venture, **36 Chowringhee Lane** won the National Award for direction besides the Grand Prix at Manila in 1981. **Paroma**, **Sati**, **Yugant** and **Picnic** for Doordarshan have continued to win her awards and honourable mentions.

While continuing to direct and act, Aparna is editor of **Sananda**, the popular Bengali magazine for women. The Government of India conferred on her the Padma Shri in 1986.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र

शूल

निर्माता नितिन मनमोहन एवं रामगोपाल वर्मा को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक ई.निवास को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार शूल को सामाजिक एवं राजनीतिक तन्त्र के पूर्णतया पतन को अनावृत करने के लिए दिया गया है। फिल्म में दिखावटी प्रजातंत्र में एक अकेले नागरिक के दृढ़तापूर्वक संघर्षरत रहने का प्रभावशाली चित्रण है।

BEST FEATURE FILM IN HINDI

SHOOL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to producers **NITIN MANMOHAN & RAM GOPAL VARMA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to director **E. NIWAS**

Citation

The award for the Best Feature Film in Hindi of 1999 is given to **SHOOL**, for unveiling the complete collapse of the socio-political system. A very effective portrayal of the determined fight of a single citizen in the centre of a facade of democracy.

नितिन मनमोहन

जाने माने निर्माता नितिन मनमोहन ने अपना कैरियर 1986 में **बात बन जाए** से शुरू किया। उसकी सफलता से प्रेरित होकर 1987 में **इन्साफ** बनायी। तब से लेकर वे कई फिल्मों बना चुके हैं जिनमें **बोल राधा बोल, बागी, महासंग्राम, अंजलि, लाडला, ईना मीना डीका** आदि शामिल है। **चल मेरे भाई** इनकी नवीनतम फिल्म है।



Nitin Manmohan

Well-known producer Nitin Manmohan began his career in 1986 with **Baat Ban Jaye** which had a multiple starcast. Its success encouraged him to make **INSAAF** in 1987. Hence forth he made a number of movies **Bol Radha Bol, Baaghi, Mahasangram, Anjali, Laadla, Eena Meena Deeka** and his latest venture **Chal Mere Bhai**.

राम गोपाल वर्मा

राम गोपाल वर्मा जाने माने निर्माता निर्देशक हैं। इन्होंने **रंगीला, कौन, सत्या, मस्त** जैसी फिल्मों बनायी हैं। इनकी फिल्म **सत्या** को कई पुरस्कार मिले, जिसमें 1998 का मनोज वाजपेयी को सर्वोत्तम सह अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल है।



Ramagopal Varma

Ramagopal Varma a well known producer and director who made **Rangeela, Daud, Kaun, Satya, Mast** etc. His film **Satya** has won many awards which includes a National Award for Manoj Bajpai as best actor in the year 1998.

ई.निवास

आंखों में कुछ बड़ा आदमी बनने का सपना लिए तेरह वर्ष की आयु में अपने गांव से निकल कर आये ई.निवास ने अन्नपूर्णा स्टूडियो, हैदराबाद जाइन किया। एक दिन इनकी रामगोपाल वर्मा से भेंट हुई और उनके साथ काम करने की इच्छा जाहिर की। रामगोपाल वर्मा ने इनकी प्रतिभा को भांप लिया और अपना सहायक बना लिया। छः वर्षों तक उनके साथ काम करने के पश्चात सिनेमा के प्रति निवास के लगाव को देखते हुए निवास को **शूल** के निर्देशन का आफर दिया। ई.निवास को यकायक विश्वास नहीं हुआ। लेकिन **शूल** के रिलीज़ होने के साथ ही यह प्रमाणित हो गया कि ई.निवास में प्रतिभा है।



E. Niwas

At the tender age of thirteen a boy ran away from his village Anantpur, came to Hyderabad and joined Annapurna Studios to become something big in life. One day he met Ram Gopal Varma and told him of his dream. Ram Gopal Varma saw the fire in his eyes and accepted him as his assistant.

After six years his mentor, seeing his passion and technical maturity, offered him the prestigious project, **SHOOL**. With its release E.Niwas has proved himself.

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र

कानूरू हेगाडिती

निर्माता एच.डी.नारायण, सी.एम. नारायण एवं मल्लीगौड़ा को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक गिरीश कर्नाड को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार कानूरू हेगाडिती को ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित के.वी. पुटप्पा के महान उपन्यास को एक अन्य ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता गिरीश कर्नाड द्वारा फ़िल्म के रूप में उपाख्यानात्मक संक्षिप्तीकरण के लिए दिया गया है। बढ़ते पीढ़ीगत भेदभाव एवं लिंगभेद को तीन नारी पात्रों के माध्यम से संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN KANNADA

KANOORU HEGGADITHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to producers
H.G. NARAYANA, C.M. NARAYANA and I.P. MALLEGOWDA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to director **GIRISH R. KARNAD**

Citation

The award for the Best Feature Film in Kannada of 1999 is given to **KANOORU HEGGADITHI**, Jnanpith awardee K.V. Puttaappa's epic novel concised by another Jnanpith awardee Girish Karnad into a film with an episodic structure. Increasing gaps between generation and genders are very sensitively portrayed through the three main female characters.



H.G. Narayana



C.M. Narayana



I.P. Mallegowda

गिरीश कर्नाड

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त गिरीश कारनाड न केवल भारत के सर्वोत्तम नाट्यकारों में एक हैं। आप में 'रेनेसाँ व्यक्तिव्य' कहलाये जाते हैं। सिर्फ 23 साल के उम्र में ऑक्सफोर्ड में गणित में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के दौरान आपने **ययाति** लिखी। भारत लौटने के बाद आपने जो नाटक लिखी उनमें प्रमुख हैं **तुघलक हयवदन, नागमंडल, रक्त कल्याण** आदि। आपने **काडु, ओन्दानन्दु कालदल्लि, चेल्लुवी** जैसी फिल्मों भी बनाई, जो एक नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा बन गई। नाट्यकार से निर्देशक एवं कलाकार बने गिरीश का पुरस्कारों ने पीछा नहीं छोड़ा। पूणे स्थित भारतीय फ़िल्म एवं टेलिविजन इन्स्टीट्यूट एवं दिल्ली स्थित संगीत नाटक अकादमी के चेयरमैन रहने के बाद अब आप लंडन स्थित नेहरू सेन्टर के निर्देशक डायरेक्टर का किरदार निभा रहे हैं।



Girish Karnad

Jnanpith award winner Girish Karnad is not just India's foremost playwright. He lends real meaning to the term 'Renaissance figure.' He wrote his first play **Yayati** when he was just 23 and a Rhodes Scholar studying Mathematics in Oxford. On his return to India he continued to write plays, many of which have been performed abroad, including **Tughlak, Hayavadan, Nagamandala** and **Rakt Kalyan**. Meanwhile he also took to making films - **Kaadu, Ondanondu Kaladalli, Chelluvi** among others - that inspired a generation of filmmakers. Awards have chased Karnad even as he has moved from directing films to acting in them, from being the director of the Film and Television Institute of India to the chairman of the Sangeet Natak Akademi. He is currently the director of the Nehru Centre in London.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र

पुनरधिवासम्

निर्माता एन.पी. प्रकाश को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक वी.के. प्रकाश को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार पुनरधिवासम् को वैवाहिक संबंधों की जटिलता एवं भ्रामकता के बीच पारिवारिक संबंधों में नवीन सामञ्जस्य स्थापित करने की आवश्यकता के विषय में क्लिष्ट रूप से संरचित पटकथा के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

PUNARADHIVAASAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to producer
N.P. PRAKASH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to director
V.K. PRAKASH

Citation

The award for the Best Feature Film in Malayalam of 1999 is given to **PUNARADHIVAASAM** An intricately structured screenplay about the need for discovering new adjustments in family relationship and the complexities and fallacies of conjugal harmony.

एन.पी. प्रकाश

1960 में केरल में जन्मे एन.पी. प्रकाश इलेक्ट्रानिक्स इंजिनियर हैं।

1983 से 1989 तक कलिकट विश्वविद्यालय के प्रलेखन विभाग के लिए छायांकन का काम करते रहे। यहाँ से काम छोड़ कर बंगलौर में विज्ञापन फ़िल्में बनाने लगे। 1994 में वी. के. प्रकाश के साथ स्टैंडिज़ शुरू किया और लगभग 200 विज्ञापन फ़िल्मों का निर्माण किया। **पुनर्धिव्वासम्** इनकी पहली फ़ीचर फ़िल्म है।



N.P. Prakash

Born in Kerala on May 20, 1960 N.P. Prakash is a graduate of Electronics Engineering. From 1983-89 he worked at the school of Drama, Trichur. Later in Bangalore he worked for Advertising films. Together with V. K. Prakash he started Trends in 1994 where V.K. Prakash joined him as director. Trends has more than 200 advertising films before producing **Punaradhivaasam**.

वी.के. प्रकाश

कला एवं संस्कृति से समृद्ध केरल में जन्मे वी.के. प्रकाश कलिकट विश्वविद्यालय से नाट्यशास्त्र में शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् आपने कई नाटकों का निर्देशन किया और फिर विज्ञापन चित्र बनाने लगे। छह साल के बाद आपने अपना पहला चित्र, **पुनर्धिव्वासम्** का निर्देशन किया।



V.K. Prakash

V K Prakash comes from Kerala, a state abundantly rich in art and culture. Graduating from the School of Drama, Calicut University, he directed numerous acclaimed plays before moving on to advertising films. After six years in that field, he ventured into directing his first feature film, **Punaradhivaasam**.

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र

घरा बाहेर

निर्माता रतन मदन एवं नरेन्द्र शिंदे को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निदेशक संजय सुरकार को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार **घरा बाहेर** को व्यक्ति की अभिव्यक्ति सामाजिक एवं राजनैतिक स्थापनाओं के पूर्णतः विपरीत मिथ्यचार एवं सत्ता और लालच के लिए प्रतिवर्ती व्यवहार को दर्शाने के लिए दिया गया है। यह फिल्म नारी को अधिकारिता प्रदान किये जाने से जुड़ी समस्याओं की ओर भी ध्यान दिलाती है।

BEST FEATURE FILM IN MARATHI

GHAR-A-BAHER

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to producers **RATAN MADAN AND NARENDRA SHINDE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to director **SANJAY SURKAR**

Citation

The award for the Best Feature Film in Marathi of 1999 is given to **GHAR-A-BAHER** for depicting the hypocrisy exercised by man in complete contradiction of declared socio-political positions and a total reversal of behaviour when it comes to power and lust. It draws attention to the inherent problems in the empowerment of women.

रतन कुमार टी. मदन

रतन मदन एम. काम. के अतिरिक्त ड्रामाटिक्स में एम.एफ.ए. हैं। मदन ने घरा-बाहेर के निर्माण से पूर्व चार टेलिविजन धारावाहिकों **प्रेमसुधा**, **प्रारम्भ आवर्त** तथा **सुर** में अभिनय किया है।



Ratankumar T.Madan

An MFA in Dramatics, besides being an M.Com, Madan has acted in four television serials, **Prem Sudha**, **Prarambh**, **Avart** and **Sur**, before turning producer with **Ghar-a-Baheer**.

नरेन्द्र के. शिन्दे

अपने सह निर्माता की तरह शिन्दे भी एम.काम. एवं ड्रामाटिक्स में एम.एफ. ए. है तथा नाटकों एवं टेलीविजन धारावाहिकों में अभिनय करते हैं। इन्हें 1990 में **द व्हाइट आन्ट्स** में अभिनय के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।



Narendra K.Shinde

Like his co-producer, Shinde too did an MFA in dramatics besides M.Com, before acting in plays and tele-serials. He won a national award in 1990 for his play, **The White Ants**.

संजय सूरकर

संजय सूरकर फाइन आर्ट्स में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद 20 वर्षों से मराठी थियेटर में सक्रिय हैं। उन्होंने कई मराठी नाटकों का निर्देशन किया। तो एक क्षण उन्होंने 1990 में टीवी. सीरियल **नो प्रॉब्लम** का निर्देशन किया। उनके निर्देशन में मराठी फिल्म **चौकट राजा बनी** जिसे 1991 में इंडियन पैनोरामा के लिए चुना गया। उनकी फिल्म **आपली मानस** को 1992 में राज्य का वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिला। उनकी नयी फिल्म **तू तिथे मी** को 3 स्क्रीन अवार्ड, 5 फिल्मफेयर और 11 राज्य पुरस्कार तथा राष्ट्रपति का रजत कमल मिल चुका है।



Sanjay Surkar

When he directed **Tu Titha Mee**, Sanjay Surkar won two National and 12 state awards, besides numerous other awards. Likewise, the National award he won for his previous film **Rao Saheb** had capped the 14 state awards he had taken home. **Yadna**, **Apli Manas** and **Chaukat Raja** too had won him honours associated with quality cinema. After **Ghar-a-Baheer**, adjudged the Best Marathi Film of 1999, the filmmaker who started by directing plays on stage is now busy with the Marathi serial, **Gharkul**.

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र

बिस्वप्रकाश

निर्माता राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक सुशान्त मिश्र को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार बिस्वप्रकाश को दिया जा रहा है। यह फिल्म अपनी ही पहचान एवं दिशापरक जीवन की खोज में भटकते हुए युवक की कहानी है। फिल्म का छायांकन सुंदर है तथा गांव में सुविधाओं के अभाव पर प्रकाश भी डालती है।

BEST FEATURE FILM IN ORIYA

BISWAPRAKASH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the producer
NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION, Mumbai

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to director **SUSANT MISRA**

Citation

The award for the Best Feature Film in Oriya for 1999 is given to the film **BISWAPRAKASH**. The story of a young man in search of his identity and direction in life. The beautifully photographed film depicts the lack of opportunities in a small town.

सुशांत मिश्रा

सन् 1965 में जन्मे सुशांत मिश्रा पूणे स्थित भारतीय फिल्म एवं टेलिविजन इन्स्टिट्यूट से शिक्षा प्राप्ति के बाद **निश्चल बादल** नामक लघुचित्र (1989) एवं **धेनकनाल** नामक वित्तचित्र (1995) बनाई। 1997 में बनी कथाचित्र **इन्द्रधनुर छाई** ने विश्व सिनेमा में आपकी पहचान बनाई। उनकी फिल्में ओबेरहाउसन, कान्, लंदन, राटरडम, मास्को मॉन्ट्रियल तथा कैरो फिल्म समारोहों में दिखायी गयी।



Susant Misra

Born in 1965, Susant Misra graduated in screenplay and direction from the Film and Television Institute of India. Before making **Biswaprakash**, he made a short film **Nischal Badal** in 1989, a full length documentary **Dhenkenal** in 1995 and **Indradhanura Chhai** in 1997. His films have been shown at Oberhausen, Cannes, London, Rotterdam, Moscow, Montreal and Cairo.

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र

सेतु

निर्माता **ए. कन्दासामी** को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **बाला** को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार **सेतु** फिल्म के निर्देशक की मुख्यधारा सिनेमा के व्याकरण की सराहनीय ग्राह्यता के लिए दिया गया है। यह निर्देशक का प्रथम प्रयास है। प्रचलित एवं अपारम्परिक का सम्मिश्रण विशेष उल्लेखनीय है।

BEST FEATURE FILM IN TAMIL

SETHU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to producer
A. KANDASAMY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to director **BALA**

Citation

The award for the Best Feature Film in Tamil for 1999 is given to **SETHU**. An impressive debut by a director with a commendable grasp of the grammar of mainstream cinema, it deserves special mention for combining popular elements with the unconventional.

ए. कन्दासामी

40 वर्षीय कन्दासामी मदुराई में भवन निर्माण के व्यवसायी हैं। उन्होंने **सेतु** से ही फिल्म जगत में पदार्पण किया है। प्रथम प्रयास की सफलता ने इन्हें तमिल चित्रपट को कुछ और अच्छी फिल्में देने के लिए प्रेरित किया है।



A Kandasamy

A Kandasamy, a 40-year-old constructor from Madurai, entered the world of cinema with **Sethu**. The success of his maiden venture has spurred him to transfer some of the best works of Tamil on to the screen.

बाला

तमिल साहित्य के ग्रेजुएट 34 वर्षीय बाला ने आठ वर्षों तक बालू महेन्द्र के सहायक के रूप में **वीडू**, **सन्ध्या रागम**, **वन्ना वन्ना पूक्कल** आदि जैसी फिल्मों के लिए कार्य किया। इनमें से अधिकतर को राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले। इसी प्रक्रिया में उन्होंने बालू की तकनीकियों की समझ और अपनी मौलिक प्रतिभा का भी प्रयोग करते हुए **सेतु** फिल्म का निर्देशन किया। प्रथम प्रयास में ही बाला ने अपनी पहचान बना ली है।



Bala

After graduating in Tamil literature, this 34-year-old director from Madurai spent eight years assisting Balu Mahendru in films like **Veedu**, **Sandhya Ragam** and **Vanna Vanna Pookkal**, some of which won the National Award. In the process, Bala imbibed some of Balu's techniques. At the same time, he stamps **Sethu**, his debut film, with his own sensitivity that does not fight shy of depicting life in the raw, even in an asylum. This unwillingness to muffle his creative aspiration makes him a name to watch out for.

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र

कलीसुंडम्... रा

निर्माता **डी. सुरेश बाबु** को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **उदय शंकर** को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार कलीसुंडम्... रा को संयुक्त परिवार प्रथा को बनाए रखने तथा मिलजुल कर रहने की आवश्यकता के सामाजिक संदेश को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है। मुख्यधारा सिनेमा के युग में फिल्म की संरचना परम्परागत है।

BEST FEATURE FILM IN TELUGU

KALISUNDAM... RAA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to producer **D. SURESH BABU**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to director **UDAY SHANKER**

Citation

The award for the Best Feature Film in Telugu for 1999 is given to **KALISUNDAM... RAA**, a conventionally structured film in the genre of mainstream cinema which conveys in an entertaining manner the wholesome message of togetherness and the need for preserving the unit of the joint family.

डी सुरेश बाबू

सिनेमा संसार के दिग्गज डी. राम नायडू के पुत्र हैं - डी. सुरेश बाबू। **कलीसुंडम्...** रा से पूर्व सुरेश बाबू ने **बोबल्ली राजा**, **प्रेमिन्धुकुन्दम** रा तथा **गणेश** फिल्मों का निर्माण किया है। सभी फिल्में तेलुगु चित्रपट पर अत्यधिक सफल रही तथा **गणेश** को 1998 की सर्वोत्तम तेलुगु फिल्म का पुरस्कार भी मिला।



D Suresh Babau

Son of renowned D Rama Naidu, 42-year-old Suresh Babu was producer of **Ganesh**, the award winner for the best Telugu film of 1998. He has also produced **Bobbili Raja** and **Premindhukundam Raa**, both of which have been hits on the Telugu screen.

उदय शंकर

34 वर्षीय शंकर ने 1988 में फिल्म जगत में पदार्पण किया। **वीरा**, **बाघा** और **अन्नमलाई** में सहनिर्देशन के पश्चात उदय ने 1997 में **पूचुडवा** बनाई। **कलीसुंडम्...** रा इनकी दूसरी फीचर फिल्म है।



Uday Shanker

This 34-year-old filmmaker entered the world of moving images in 1988. After co-directing films like **Veera**, **Basha** and **Annamalai**, he directed **Poochudavaa** in 1997. **Kalisundam Raa**, his second directorial venture, gets him the National award for the best Telugu film.

विशेष उल्लेख

मंजु बोरा (बैभव)

कविता लंकेश (देवीरि)

मोहन जोशी (घरा बाहेर)

प्रशस्ति

निर्णायक मण्डल ने मराठी कथाचित्र **घरा बाहेर** में मोहन जोशी द्वारा एक भ्रष्ट राजनेता के सुंदर एवं नियंत्रित अभिनय के लिए, निर्देशिका मंजु बोरा को अपने प्रथम प्रयास असमिया कथाचित्र **बैभव** में काव्यात्मक अभिव्यक्ति के लिए तथा कविता लंकेश का कन्नड़ कथाचित्र **देवीरि** के सशक्त निर्देशन के लिए विशेष उल्लेख किया है।

SPECIAL MENTION

MANJU BORAH (BAIBHAB)

KAVITA LANKESH (DEVEERI)

MOHAN JOSHI (GHAR-A-BAHER)

Citation

A special mention for 1999 is given by the jury to Mohan Joshi for his wonderfully controlled performance of a corrupt politician in the film **GHAR-A-BAHER**. The jury also makes special mention of the director Manju Borah for her poetic expression in her debut film **BAIBHAB** and **KAVITA LANKESH** for her exuberant debut as a director in the film **DEVEERI**.

मंजु बोरा

मंजु बोरा गुवाहाटी युनिवर्सिटी से दर्शन में एम.ए. हैं तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर नियमित रूप से लिखती रहती हैं। इन्होंने पूर्वोत्तर भारत की जनजाति नाम **फेक्स** पर आधारित एक वृत्तचित्र का निर्देशन किया है। टेलीफ़िल्म **एखोन सुजिया खमोर चिठी** का निर्देशन करने के अतिरिक्त इन्होंने **पार्थुगेट रिंगाई** का कला निर्देशन किया है। 1996 में **सपोन** के निर्देशन में सहयोग दिया। **वैभव** उनकी पहली फीचर फिल्म है तथा ढाका अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वोत्तम फिल्म चुनी गई है।



Manju Borah

An MA in Philosophy from Guwahati University, Manju Borah is a regular writer of short stories and articles on the cultural ethos and social customs of diverse ethnic groups of North Eastern India. She has also directed a documentary on Nam Phakes, a North Eastern tribe, besides the telefilm **Ekhon Seujia Khamor Chithi**.

मोहन जोशी

1999 में **तू तिथे मी** 1998 में **रावसाहेब**, 1997 में **मृत्युदंड** के लिए पुरस्कार जैसे हर वर्ष की परम्परा हो। इस 47 वर्षीय कलाकार ने बचपन से ही अभिनय करना शुरू कर दिया था तथा **ती फुलरानी** और **कटयार काळजात घुसली** जैसे नाटकों में अभिनय किया। मराठी सिनेमा और धारावाहिकों ने नियमित मोहन जोशी से हिन्दी दर्शक भी अपरिचित नहीं। उनकी हिन्दी फ़िल्मों में **मेजर साहब**, **इश्क**, **गुलामे मुस्तफा**, **गोपी किशन** और **एलान** शामिल हैं।



Mohan Joshi

In 1999, Mohan Joshi won an award for his performance in **Tu Titha Mee**; in 1998 for **Rao Saheb**; in 1997 for **Mrityudand...** Awards and citations seem to have become a habit for this 47-year-old thespian who started acting as a child, and went on to make his mark with classics of professional theatre such as **Tee Phulrani** and **Katyar Karjaat Ghusali**, besides Hindi films like **Mrityudand**, **Major Saab**, **Ishq**, **Ghulam e Mustafa**, **Gopi Kishan** and **Elan**.

कविता लंकेश

कविता लंकेश जाने माने फिल्म निर्देशक पी. लंकेश की पुत्री हैं तथा 30 से अधिक वृत्तचित्रों, लघु फिल्मों का पटकथा लेखक निर्देशन कर चुकी हैं।

फिल्मों के विषय विभिन्नता लिए हुए हैं जैसे पर्यावरणविद् इंदिराप्रिय दर्शिनी पुरस्कार प्राप्त तुलसी, अफ्रीका की सिद्धी जनजाति, बेनरहघाटा नेशनल पार्क, सैंगसेसे पुरस्कार प्राप्त के.वी.सुब्बना पर आधारित **निनासम्**, कर्नाटक की महिला लोक गायिकाएं, मंचविभूति बी. जयश्री, कलाकार पुष्पमाला, निर्देशिका प्रेमा कारन्थ, अभिनेत्री जयन्ती, लेखिका वैदेही और नर्तक त्रिपुरा कश्यप।

इनकी पहली फ़ीचर फिल्म **देविरि** पी. लंकेश की उपन्यासिका पर आधारित है तथा 1999 का अरविन्दन पुरस्कार एवं केरल अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह का फिप्रेसी पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है।



Kavitha Lankesh

Kavitha Lankesh's interest in the art of cinema led to the setting up of an audio-video production house which has produced more than 30 corporate films and documentaries, including for the government of Karnataka, all by the 36-year-old screenplay writer-director.

The films are on subjects that range from Tulasi, a barefoot ecologist who won the Indira Priyadarshini award; the Siddhi tribe of African origin; the Bannerghatta National Park; Ninasam, an experiment in rural theatre by the Magsaysay award winner K V Subanna; Hasekale, a fast vanishing rural art form; women folk singers of Karnataka, and six dynamic women of Karnataka - theatre person B Jayashree, artist Pushpamala, director Prema Karanth, actress Jayanthi, writer Vaidehi and contemporary dancer Tripura Kश्यप.

Deveeri, her first feature film based on a novella by the celebrated P Lankesh, has won the Aravindan Puraskar for the best debut director of 1999, and the FIPRESCI award at the International Film Festival of Kerala.

गैर-कथाचित्र Awards for
पुरस्कार Non-Feature Films

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र

दुई पाटन के बीच में

निर्माता अरविन्द सिन्हा को स्वर्ण कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक अरविन्द सिन्हा को स्वर्ण कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र का 1999 का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म **दुई पाटन के बीच में** को उत्तरी बिहार में पर्यावरण की अनर्थकारी क्षति एवं नदी तटों पर प्रगति के अंधारोपण के कारण विस्थापित एवं दुविधाग्रस्त लोगों की पीड़ा के गूढ़ चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

DUI PAATAN KE BEECH MEIN (BETWEEN THE DEVIL AND THE DEEP RIVER)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the
Producer : **ARVIND SINHA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the
Director : Arvind Sinha

Citation

The award for the best Non-Feature Film of 1999 is given to Arvind Sinha's Hindi film **DUI PAATAN KE BEECH MEIN** (Between the Devil and the Deep River) for its indepth portrayal of an environmental disaster in North Bihar, of lives uprooted and rendered 'amphibian' due to the blind imposition of the development model of embankment of rivers.

अरविन्द सिन्हा

अजीत एवं द रेक्लूज नामक फ़िल्मों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त अरविन्द सिन्हा देश-विदेशों में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। कलकत्ते के किसी घर में काम करने वाले आठ साल के एक लड़के की कहानी पर बनी अजीत को 22 फिल्म महोत्सवों में दर्शाया गया। इसे यूनिसेफ़ ट्रॉफी एवं स्पेन का स्वर्ण मिकेलिडि पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। इसी फिल्म के लिए सिन्हा 1996 लाईपज़िग फेस्टिवल के सर्वोत्तम वृत्तचित्रकार माने गए। न्युयार्क एक्सपोज़िशन में आपको 1990 में जूरी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। शास्त्रीय संगीतकार उस्ताद नाज़िर अमीनुद्दिन डागर पर बनी द रेक्लूज 150 से अधिक देशों में दर्शाई गई। सेराईकेल्ला के मुखौटा नृत्य पर बनी सिन्हा की पहली फिल्म छौ को भी देश विदेशों में दर्शाया गया था।



Arvind Sinha

Recipient of two National Awards for the films **Ajit** and **The Recluse**, Arvind Sinha is among the filmmakers acclaimed both in India and abroad. **Ajit**, about an eight-year-old working in a Calcutta household, was selected for 22 international film festivals and received the UNICEF trophy and the Gold Mikeldi Award in Spain. For the same film Sinha was adjudged the most promising Documentary filmmaker of 1996 at the Leipzig Festival in Germany. He also received the Jury Award at the New York Exposition of Short Films in 1997.

The Recluse, on the classical vocalist **Ustad Nasir Aminuddin Dagar**, was shown in more than 150 countries. Sinha's first film, **Chhau**, about the masked dancers of Seraikella, a tribal belt bordering Bihar and West Bengal, was also extensively exhibited in India and abroad.

निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैरकथाचित्र

दैवंगल पडियिरंगुम्बोल

निर्माता **प्रदीपकुमार** को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **प्रदीपकुमार** को रजत कमल एवं 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैरकथाचित्र का पुरस्कार **दैवंगल पडियिरंगुम्बोल** को वायनाड क्षेत्र की जन जातियों के जीवन एवं परिवर्तन की प्रक्रिया में उनके कमजोर पड़ते अस्तित्व के गहन अध्ययन के लिए दिया गया है।

THE AWARD FOR THE BEST FIRST NON- FEATURE FILM OF A DIRECTOR

DEIVANGAL PADIYIRANGUMBOL (When Gods
deaprt)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
Producer : **PRADEEP KUMAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
Director : **PRADEEP KUMAR**

Citation

The award for the First Non-Feature Film of a Director is given to Pradeep Kumar's Malayalam film **DEIVANGAL PADIYIRANGUMBOL** (When the Gods Depart) for its objective and well-researched point of view on the lives of tribes in the Wayanad region; it captures their fragile existence caught in the process of change.

प्रदीप कुमार

अंग्रेजी साहित्य में पोस्ट ग्रेजुएट प्रदीप कुमार ने पत्रकार के रूप में शुरुआत की तथा विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के लिए सात वर्ष तक कार्य किया। फिर केरल में भरतन, टी.वी. चन्द्रन तथा रवीन्द्रन जैसे निर्देशकों के साथ कार्य करने लगे। वे अंग्रेजी और मलयालम की पत्रिकाओं में अब भी लिखते हैं। **दैवंगल पडियिरंगुम्बोल** इनकी पहली फिल्म है।



Pradeep Kumar

A post graduate in English literature, Pradeep Kumar started life as a journalist. He spent seven years working as a film critic for different dailies and journals. He then returned home to Kerala and worked with noted filmmakers like Bharathan, T V Chandran and Raveendran. He continues to contribute to leading English and Malayalam journals. This is his first film.

सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय/जनजातीय फिल्म

कोयहातिर धुलिया तथा सुरभि

निर्माता सत्यव्रत कलिता (कोयहातिर धुलिया) तथा के. जयदेव (सुरभि) प्रत्येक को रजत कमल एवं 5000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक हेमन्त दास (कोयहातिर धुलिया) तथा के.एन.टी. शास्त्री (सुरभि) प्रत्येक को रजत कमल एवं 5000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/जनजातीय फिल्म का 1999 का पुरस्कार असमिया फिल्म कोयहातिर धुलिया एवं तेलुगु फिल्म सुरभि को संयुक्त रूप से दिया गया है। कोयहातिर धुलिया को संगीतज्ञ मोहन भावरिया के एक कला को विस्मृति के गर्त से निकाल कर प्रचारित करने तथा परम्परागत कला में प्रासंगिक विषयवस्तु के समावेश में योगदान को चित्रित करने के लिए दिया गया है। सुरभि मंच के कलाकारों के सांस्कृतिक विकास एवं उनके कला निष्पादन का महत्वपूर्ण प्रतिपादन है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ETHNOGRAPHIC FILM

KOIHATIR DHULIA (ASSAMESE)

SURABHI (TELUGU)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
Producer : **SATYABRAT KALITA** of **KOIHATIR DHULIA** and **K. JAYDEV** of **SURABHI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
Director : **HEMANTA DAS** of **KOIHATIR DHULIA** and **K.N.T. SASTRY** of **SURABHI**

Citation

The award for the best Anthropological/Ethnographic film of 1999 is given to Hemanta Das' Assamese film **KOIHATIR DHULIA** (Koihatir's Drummer) and K.N.T. Sastry's Telugu film Surabhi. To **Koihatir Dhulia** for its portrayal of the maestro Mohan Bhawria and his contribution to the revival of an art form from oblivion, its dissemination and its incorporation of topical themes within a traditional art form. To **Surabhi** for being an important document of a family-community of theatre performers and of cultural growth within the community and its performances.

के. जयदेव

के. जयदेव पत्रकार हैं तथा सिनेमा में रूचि रखते हुए हैदराबाद के फिल्म सोसायटी मूवमेन्ट से जुड़े हैं। निर्माता के रूप में **सुरभि** इनकी पहली फिल्म है। निर्देशक के.एन.टी. शास्त्री के साथ उन्होंने एक अन्य वृत्तचित्र **द मैन ऑफ सिनेमा** बनायी है।



के.एन.टी. शास्त्री

1989 के सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक एवं 1995 में सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक के प्रकाशक शास्त्री की पूर्व उपलब्धियाँ हैं। सिनेमा में कवि को लेखन तक सीमित न रखते हुए इन्होंने बी. नरसिंग राव की पुरस्कृत फिल्मों **दासी** तथा **मा ओरू** की पटकथा लिखी। इन्होंने अनेक टेलीविजन धारावाहिकों की पटकथा लेखन तथा दक्षिण भारतीय सिनेमा पर एक सीरिज का निर्देशन भी किया है।



सत्यव्रत कलिता

मंच कलाकार सत्यव्रत कलिता ने 50 से अधिक नाटकों का निर्देशन करने के बाद **कायहातिर धुलिया** के साथ सिनेमा की दुनिया में पर्दापण किया। इस समय वे दो वृत्तचित्रों तथा एक टेलिविजन धारावाहिक के निर्माण एवं निर्देशन में व्यस्त हैं।



हेमन्त दास

असम में फिल्म सोसायटी मूवमेन्ट के साथ जुड़े हेमन्त दास लंबे समय से सिनेमा की गुणवत्ता के लिए संघर्षरत हैं। असम के सांस्कृतिक जीवन में रूचि ने उन्हें कई लघु फिल्मों एवं दूरदर्शन धारावाहिक बनाने के लिए प्रेरित किया है। **सर्कल्स ऑफ शोम्बल्स** (1988) उनकी पहली वृत्तचित्र तथा **तथापिओ नदी** (1989) पहली फीचर फिल्म है।



K Jayadev

K. Jayadev is a journalist by profession. A film buff, he is actively associated with film society movement in Hyderabad. **Surabhi** is the maiden venture of this producer for which he was also the Assistant Director. He is associated with the director of **Surabhi** in his other documentary, **The Man of Cinema**.

K N T Sastry

Sastry has won the National Awards for the Best Film Critic (1989) and the Publisher of the Best Book on Cinema (1995). However, his interest in cinema has not remained restricted to critical writing. He has worked as the script writer for the National Award winning **Daasi** and **Maa Ooru**. Having scripted a number of teleserials, he directed a series on South Indian Cinema, and another on Telugu poets, for the national channel.

Satyabrata Kalita

A performing stage artiste and the director of more than 50 plays, Satyabrata Kalita entered the celluloid world with **Koihatir Dhulia**. He is currently engaged, as both producer and director, in the making of two other documentaries and a television serial.

Hemanta Das

One of the captains of the film society movement of Assam, Hemanta Das has long been striving for the cause of quality cinema. His interest in the cultural life of Assam has led him to direct several short films and teleserials. **Circle of Shambles** (1988) was his first documentary film and **Tathapio Nadi** (1989) first feature film.

सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म पुरस्कार

नोट्टम एवं मल्लिका साराभाई

निर्माता बीना नारायण (नोट्टम) एवं फिल्म प्रभाग (मल्लिका साराभाई) प्रत्येक को रजत कमल एवं 5000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक एम.आर. राजन (नोट्टम) एवं अरुणा राजे पाटिल (मल्लिका साराभाई) को रजत कमल एवं 5000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म पुरस्कार नोट्टम एवं मल्लिका साराभाई को संयुक्त रूप से दिया गया है। नोट्टम सुप्रसिद्ध कथकली नर्तक कीडपाडम कुमारन नायर का कला में अमूल्य योगदान, उनकी श्रद्धा, उनका गौरव, कला, जीवन एवं प्रकृति के प्रति उनकी गहन दृष्टि के चित्रण के लिए दिया गया है। निर्देशिका अरुणा राजे पाटिल समकालीन नारी के जीवन एवं कला को मल्लिका साराभाई के माध्यम से प्रस्तुत करने में सफल हुई है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

NOTTAM AND MALLIKA SARABHAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to the
Producer : **BINA NARAYAN** of **NOTTAM** and **FILMS DIVISION**
of **MALLIKA SARABHAI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to the
Director : **M.R. RAJAN** of **NOTTAM** and **ARUNA RAJE PATIL**
of **MALLIKA SARABHAI**

Citation

The award for the Best Biographical film of 1999 is given jointly to **Nottam** and **Mallika Sarabhai**

Nottam portrays the renowned Kathakali actor Kizhpadam Kumaran Nair, his valuable contribution to the art form, his devotion, dignity and his insights into nature, art and life.

Aruna Raja Patil succeeds in her vibrant presentation of a contemporary woman's life and art, through the perspective of **Mallika Sarabhai**.

बीना नारायण

बीना नारायण ने जाधवपुर विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र में एम.ए. किया है। फिल्म प्रेमी होने के नाते पढ़ाई के दौरान जब भी अवसर मिला वह फिल्म निर्माण में किसी न किसी रूप में हिस्सा लेती रही। इन्हीं अनुभवों के आधार पर इन्होंने स्वतंत्र रूप से पहली फिल्म नोट्टम का निर्माण किया।

एम.आर. राजन

एम.आर. राजन ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान पुणे से निर्देशन में डिग्री हासिल की। राजन ने 1989 में डिप्लोमा फिल्म दूरम बनाई। उनकी फिल्मों छाया तथा पकनीट्टम : अम्मन्नूर प्रेमजी इतिहासतिले कसक तथा उनरविन्डे कालम - एम.आर.बी. को राष्ट्रीय पुरस्कार दिये गये। उनकी सभी फिल्में मंच और उसके कलाकारों से जुड़ी हैं।

अरूणा राजे पाटील

1969 भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से ग्रेजुएशन करने के पश्चात अरूणा राजे ने फीचर फिल्मों - शक, गहराई, रिहाई, पतित पावन, पतित पावनी और भैरवी बनायीं। सभी को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली तथा कई पुरस्कार भी मिले। इसके अतिरिक्त अरूणा ने 25 वृत्तचित्र तथा 100 विज्ञापन फिल्मों बनायीं हैं। अरूणा ने अपनी फिल्मों के अतिरिक्त वंश वृक्ष, गिद्ध, फणियम्मा का संपादन किया है तथा रिहाई, पतित पावन, पतित पावनी और बंद झरोखे की पटकथा भी लिखी है।



Bina Narayan

Bina Narayan has done her masters in Political Science from Jadavpur University. A film enthusiast all along her academic life, continues its pursuance by being of part film productions as and when possible. Experience of earlier stints in various other capacities ventures her into this maiden venture as a producer for the film NOTTAM.

M R Rajan

Since he graduated from the Film and Television Institute, Pune in 1988, M R Rajan has directed eight documentaries, all of them relating to the stage or the screen. People dedicated to classical theatre and actors who transform the stage for social reform people his films. Rajan's films are thus relevant not just in terms of documentation, but also in evolving a broader understanding of theatre by focusing on it from various angles.

Aruna Raje Patil

After graduating from the Film and Television Institute of India in 1969, Aruna Raje has made seven feature films: **Shaque, Gehrayee, Situm, Rihaee, Patita Pavana, Patita Pavani and Bhairavi**. All the films have been to festivals abroad and also won awards and honours. In addition, she has made 25 documentaries and 100 advertising films. She has also edited films **Vamsha Vriksha, Giddh, Phaniyamma**. Besides editing her own films, she has written the scripts for **Rihaee, Patita Pavana, Patita Pavani and Bandh Jharokhe**.

सर्वोत्तम कला (सांस्कृतिक फ़िल्म पुरस्कार)

थंग टा - द मार्शल आर्ट ऑफ मणिपुर

निर्माता इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला संस्थान को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक अरिबम श्याम शर्मा को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार.

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म पुरस्कार अंग्रेजी फ़िल्म थंग टा को मणिपुर की पारम्परिक मार्शल आर्ट की भावातिरेक सिनेमाई प्रस्तुति के लिए दिया जा रहा है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

THANG TA-THE MARTIAL ART OF MANIPUR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
producer **INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE
ARTS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to
director **ARIBAM SYAM SHARMA**

Citation

The award for the Best Arts/Cultural film of 1999 is given to Aribam Syam Sharma's English film **THANG-TA** (The Martial Art of Manipur) for its passionate cinematic expression of the traditional martial art of Manipur.

अरिबम श्याम शर्मा

उत्तर-पूर्व के सुप्रसिद्ध फ़िल्मकार हैं। वे लम्बे समय से संगीत, नृत्य, थियेटर तथा लोक-कलाओं से जुड़े हैं। मणिपुरी भाषा में बनी पहली फ़िल्म **मातंगो मणिपुर** में आपने अभिनय एवं संगीत निर्देशन का काम किया है। अरिबम श्याम शर्मा ने कई फ़ीचर फ़िल्में तथा वृत्तचित्र बनाये। इनमें से अधिकतर सभी को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। **इमागी निन्थम** को नान्स समारोह का ग्रां प्री पुरस्कार; **ईशानऊ** को कॉन् का सर्टेन रिगार्ड पुरस्कार; **संगाई** को अन्तर्राष्ट्रीय वाइल्ड लाइफ़ फ़िल्म समारोह के पाँच पुरस्कार मिल चुके हैं। अरिबम श्याम शर्मा की फ़िल्मों का भारतीय पैनोरमा में शामिल होना तथा राष्ट्रीय पुरस्कार तो जैसे परम्परा बन चुका है।



Aribam Syam Sharma

He has come from teaching philosophy at the university to become one of India's widely recognised film directors thanks mainly to his lifelong involvement with music, dance and the theatre. He was associated with the production of the first Manipuri feature film, **Matango Manipur**, as an actor and music director. For his own feature films and documentaries he has been winning National Awards consistently, receiving five for his feature films and another five for the non-feature films. Many of these films have been shown in the Indian Panorama.

Sharma's **Imagee Ningthem** (My Son, My Precious) won the Grand Prix at Nantes 1982. **Isanou** (The Chosen Ones) was shown in *Un Certain Regard*, Cannes 1991.

Sangai (The Dancing Deer of Manipur) received five prizes at the International Wildlife Film Festival, Montana, USA; and it was declared the Outstanding Film of the Year 1989 by the British Film Institute.

पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

एण्ड द बैम्बू ब्लूम्स

निर्माता **फ़िल्म प्रभाग** को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निदेशक **जोशी जोसेफ** को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म का 1999 का पुरस्कार जोशी जोसेफ की अंग्रेजी फ़िल्म **एंड द बैम्बू ब्लूम्स** को मणिपुर एवं मिज़ोरम के लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में बांस की उपयोगिता के प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT CONSERVATION/PRESERVATION FILM (IN- CLUDING AWARENESS)

AND THE BAMBOO BLOOMS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
producer **FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to
director **JOSHY JOSEPH**

Citation

The award for the Best Environment Conservation/Preservation film of 1999 is given to Joshy Joseph's English film **AND THE BAMBOO BLOOMS** for its creative approach to the importance of bamboo in the economic and social lives of the people of Manipur and Mizoram.

जोशी जोसेफ

37 वर्षीय जोशी जोसेफ मलयालम साहित्य में स्नातक हैं। उन्होंने मलयालम भाषा के जाने माने फिल्मकार अडूर गोपालकृष्णन को **कथापुरुषन** के निर्माण में सहयोग किया। 1985 में वे फिल्मज्ञ डिविजन में नियुक्त हुए और 10 वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है। **सेन्टेन्स ऑफ साइलेन्स** नामक समाचार पत्रिका के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।



Joshy Joseph

Joshy Joseph is a 37-year-old graduate in Malayam literature. He assisted the Malayam maestro Adoor Gopalakrishnan in the making of **Kathapurushan**. He joined the Films Divisions in 1985 where he has scripted and directed nine documentaries. He had won the National award last year for the newsreel **Sentence of Silence**.

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार (जैसे मद्य निषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज, विकलांग कल्याण इत्यादि)

आतंक का अंधकार

निमाता फ़िल्म प्रभाग को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक राजीव कुमार को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 की सामाजिक मुद्दों पर आधारित सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार राजीव कुमार की हिन्दी फिल्म आतंक का अंधकार को बिहार में जातिगत राजनीति एवं फलस्वरूप पनपती हिंसा के सामाजिक मुद्दे के प्रलेखन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

(Such as prohibition, women and child welfare, dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc.)

ATANKA KA ANDHAKAR (DARKNESS OF TERROR)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the producer **FILMS DIVISON**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to director **RAJIV KUMAR**

Citation

The award for the Best Film of Social Issues (such as prohibition, women and child welfare, and dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc.) of the year 1999 is given to Rajeev Kumar's Hindi film **DARKNESS OF TERROR** for its documentation of the social issue of caste politics and the ensuing ruthless violence in Bihar.



Atanka Ka Andhkar

निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार

दीप प्रकाश

प्रशस्ति

1999 का निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार दीप प्रकाश को डिप्लोमा फ़िल्म ऑफ़ कन्फ़्यूशियस, एस-स्पोर्ट्स एण्ड टायगन्स में आधुनिक जीवन, हिंसा एवं समकालीन मीडिया के शैलीपरक, आलेखीय एवं मनोरंजक प्रस्तुतीकरण के लिए दिया है।

SPECIAL JURY AWARD

DEEP PRAKASH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to director
Deep Prakash for **Of Confucius, S-Sports and Toyguns**

Citation

The Special Jury Award of 1999 is given to Deep Prakash's diploma film **OF CONFUCIUS, S-SPORTS AND TOYGUNS** for its stylised, graphic and playful narrative on modern life, violence and the contemporary media.

दीप प्रकाश

1994 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से निर्देशन में डिप्लोमा करने से पूर्व दीप प्रकाश ने बुद्धिस्ट स्टडीज में एम.ए. किया है। 1994 में उन्होंने अपनी पहली लघु फिल्म **विडम्बना** बनायी।



Deep Prakash

Thirty two years old, Deep Prakash did his Masters in Buddhist studies before graduating in direction from the FTII in 1994. **Vidambana** (1994), his first short film, had traced the agony of a conformist.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म

ब्लाइन्ड फोल्डेड

निर्माता ए. श्रीराम को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक एस. श्रीराम को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम लघुकल्पित फिल्म का पुरस्कार **ब्लाइन्ड फोल्डेड** को भावनापूर्ण एवं समाज से संबद्ध विषय को संरचनात्मक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

BLIND FOLDED

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
producer **A. SRIRAM**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to
director **S. SRIRAM**

Citation

The award for the best Short Fiction Film of 1999 is given to the
Tamil film **BLIND FOLDED** by S. Sriram for its creative controlled
treatment of an emotional and socially relevant theme.

ए. श्रीराम

प्रसाद प्रोडक्शन्स, चेन्नई में अपना कैरियर शुरू करते हुए ए. श्रीराम ने तमिल, तेलुगु तथा ओड़िया फिल्मों में सहायक निर्देशक के रूप में कार्य किया है। ये 1978 में **सती अनुसूया** (उड़िया) तथा 1997 में **द टेररिस्ट** (तमिल) के सह निर्माता है। **द टेररिस्ट** को कैरो में 1998 में गोल्डन पिरामिड अवार्ड मिला तथा इसे भारतीय पैनोरमा में भी शामिल किया गया है।



A Sriram

Starting life with Prasad Productions, Chennai in 1963, A Sriram worked as associate director for Tamil, Telugu and Oriya films. He coproduced **Sati Anasuya** (Oriya) in 1978, before producing **The Terrorist** (Tamil) which won the Golden Pyramid Award at Cairo in 1998.

एस. श्री राम

कालेज से छुट्टियों के दिनों में समय बिताने के उद्देश्य से संतोष सिवन के सहायक निर्देशक बने एस. श्रीराम की सिनेमा में रूचि जाग्रत हुई। चार वर्षों तक संतोष सिवन के साथ कार्य करते हुए इन्होंने पुरस्कृत फिल्मों **टेररिस्ट** एवं **मल्ली** कला निर्देशन भी किया। **ब्लाइन्ड फोल्डेड** का स्वतन्त्र निर्देशन करने से पहले इन्होंने कई विज्ञापन फिल्मों तथा दो फ्रीचर फिल्मों के लिए काम किया है। इस फिल्म से इन्हें राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली है। ये अड्यार फिल्म इन्स्टीट्यूट, चेन्नई के स्नातक हैं।



S Sriram

It was only to while away his time during college vacations that he took up the part time job of an assistant director. It got him hooked to cinema. For, the director was none other than ace cinematographer Santosh Sivan. During the four years he worked with Sivan, Sriram also did the art direction for the award winning **The Terrorist** and **Malli**. Later he shot several ad films and two feature films before directing **Blind Folded**. The debut film has won the 32-year-old graduate of the Adyar Film Institute of Chennai both national and international recognition.

सर्वोत्तम छायांकन

रवि वर्मा

छायाकार **रवि वर्मा** को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
प्रोसेसिंग लैब **प्रसाद फ़िल्म लेबोरेट्रीज़**, चेन्नई को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद
पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार रवि वर्मा को मलयालम फिल्म **कलामण्डलम गोपी** में
काल्पनिक एवं अतिसुन्दर दृश्यात्मकता को संगतिपूर्वक प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

RAVI VARMA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
Cameraman **RAVI VARMA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
Laboratory Processig the film **PRASAD FILM LABORATORIES**,
Chennai

Citation

The award for the best Cinematography for a non-feature film of
1999 is given to Ravi Varma for the Malayalam film
KALAMANDALAM GOPI for the imaginative and excellent visual
quality rendered with consistency.

रवि वर्मा

स्वयंवरम के छायांकन के लिए वर्ष 1971 का सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार पाने वाले रवि वर्मा ने अदूर गोपालकृष्णन की प्रत्येक फ़िल्म का छायांकन किया है। जैसे एस्थापन, एलिपत्तायम, मतिलुकल, विधेयन इत्यादि। ये सभी फ़िल्मे राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशस्ति का पात्र रहे हैं। कलामण्डल गोपी के लिए यह उनका दूसरा राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Ravi Varma

Beginning with **Swayamvaram**, for which he got the National Award in 1971, Ravi Varma has been the cinematographer of each and every one of Adoor Gopalakrishnan's films : **Esthappan, Elipathayam, Mathilukal, Vidheyam**. And now the non feature **Kalamandalam Gopi** gets him his second Rajat Kamal.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

चिन्मय नाथ

फाइनल मिक्स्ट्रैक की पुनरिकार्डिंग करने वाले चिन्मय नाथ को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

चिन्मय नाथ को वेहीकल विथ द सोल आफ ए मैन में पिट्टू के कठोर एवं क्लान्त कर देनेवाले श्रम को ध्वनि एवं मीन के मिश्रण एवं ध्वनि डिजाइन के द्वारा ग्रहण करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

CHINMOY NATH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
Re-recordist of the final mixed track : **CHINMOY NATH**

Citation

The award for the best Audiography in a non-feature film of 1999 is given to Chinmoy Nath for the film **THE VEHICLE WITH A SOUL OF A MAN** for imaginatively capturing the hard labour and tediousness of the Pitthu through the sound design achieved through an appropriate synthesis of sound and silence.

चिन्मय नाथ

बाड़ीवाली, गुड़िया, दहन, उनिसे अप्रैल, शून्य थेके शुरू, महापृथ्वीबि, श्वेत पाथेर थाला, अन्तरीन, युगान्त, कहिनी - चिन्मय नाथ की फिल्मों की सूची लम्बी और प्रभावशाली है। 1986 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से ग्रेजुएशन के पश्चात् चिन्मय ने पश्चिम बंगाल फिल्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन में ध्वनि आलेखन का कार्य करना शुरू किया। इन्होंने मृणाल सेन, तपन सिन्हा, अपर्णा सेन, गौतम घोष, रितुपर्णा घोष, अशोक विश्वनाथन जैसे वरिष्ठ निर्देशकों के साथ कार्य किया है। इनकी फिल्मों में कई असमिया और मणिपुरी फिल्में भी शामिल हैं।



Chinmoy Nath

Bariwali, Gudia, Dahan, Unishe April, Shunya Theke Shuru, Mahaprithibi, Shwet Patharer Thala, Antareen, Yuganta, Kahini... the list of films Chinmoy Nath has worked for is as impressive as its length. Graduating from the FTII in 1986, this Sound Recordist and Engineer joined the West Bengal Film Development Corporation. He has since then worked with almost every award winning filmmaker in Bengal, from Mrinal Sen, Tapan Sinha and Aparna Sen to Gautam Ghose, Rituparno Ghose and Ashoke Vishwanathan.

In addition, he has worked for numerous Assamese and Manipuri films.

सर्वोत्तम सम्पादन

अजित कुमार

संपादक अजित कुमार को रजत कमल एवं 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम संपादन का पुरस्कार ऑफ कन्क्यूशियस, एस. स्पोर्ट्स एंड टायगन्स के लिए अजित कुमार को कल्पना, जो फिल्म के उद्देश्य की पूरक है, के रचनात्मक एवं सुस्पष्ट सन्निधान के लिए दिया गया है।

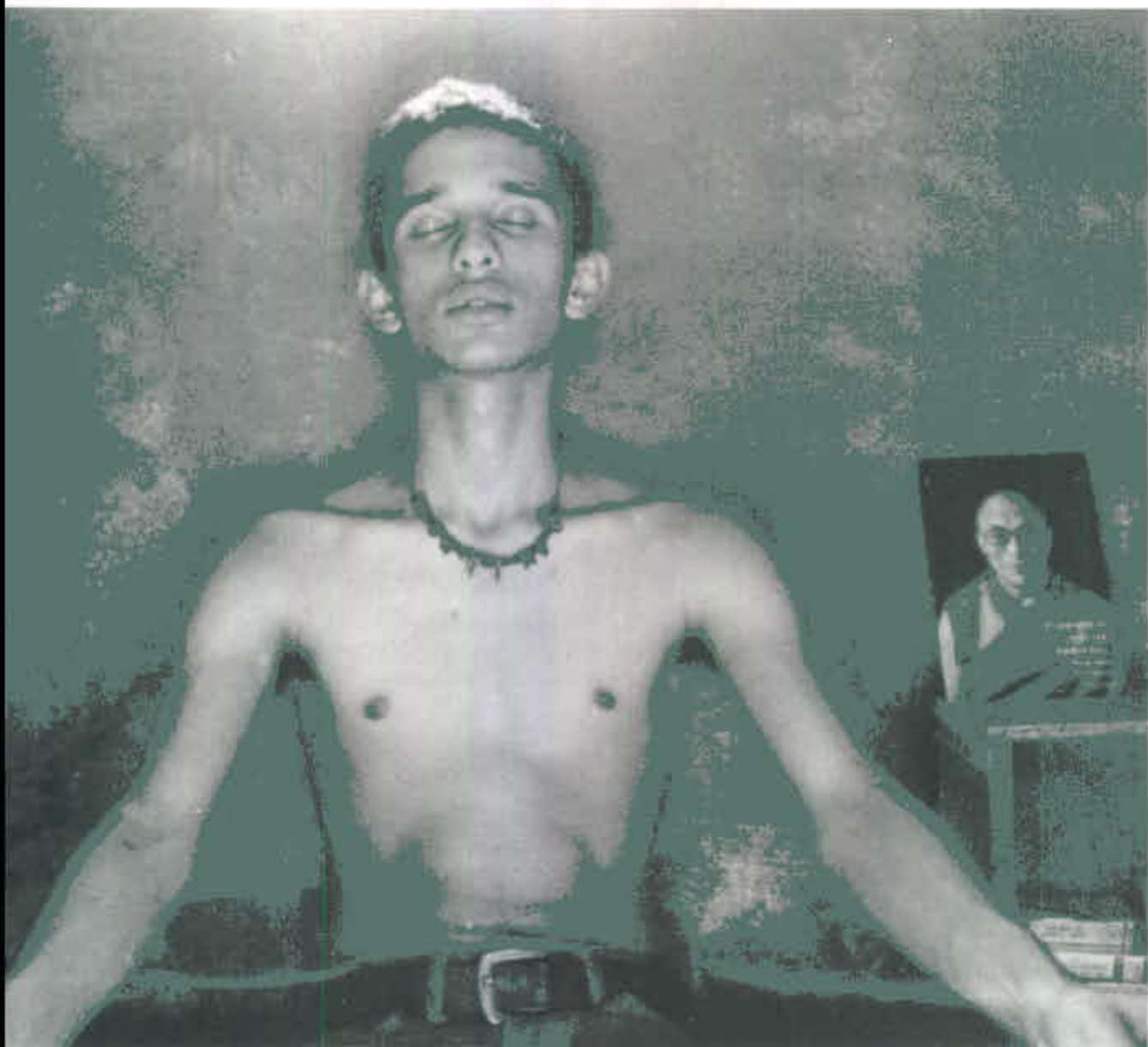
AWARD FOR THE BEST EDITING

AJITH KUMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the
Editor : **AJITH KUMAR**

Citation

The award for the Best Editing of a Non-Feature Film of 1999 is given to Ajith Kumar for the film **Of CONFUCIUS, S-SPORTS AND TOYGUNS** for the creative and crisp juxtaposition of imagery which complements the theme of the film.



Of Confucius, S-Sports and Toyguns

विशेष उल्लेख

विनोद सुब्रमण्यन्

प्रशस्ति

निर्णायक मण्डल ने विनोद सुब्रमण्यन् का अंग्रेजी-हिन्दी डिप्लोमा फ़िल्म **फ़ायर** में उद्देश्य के काल्पनिक एवं बहुपक्षीय चित्रण के लिए विशेष उल्लेख किया है।

SPECIAL MENTION

VINOD SUBRAMANIAN

Citation

The Non-Feature Film Jury makes a Special Mention for 1999 of Vinod Subramanian for the English-Hindi diploma film **Fire** for its imaginative and multifaceted presentation of the theme.

विनोद सुब्रमण्यन्

फायर 30 वर्षीय साउंड इंजिनियर विनोद सुब्रमण्यन् की डिप्लोमा फिल्म है। इन्होंने फिजिक्स में स्नातक होने के पश्चात भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान ज्वाइन किया।



Vinod Subramanian

Fire is the diploma film of Vinod Subramanian, the 30-year-old sound engineer who joined the FTII in Pune after graduating in Physics.

पुरस्कार जो नहीं दिये गये

1. सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म
2. सर्वोत्तम प्रवर्तक फ़िल्म (पर्यटन, निर्यात, उद्योग इत्यादि सहित)
3. सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म
4. सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फ़िल्म
5. सर्वोत्तम शैक्षिक/अभिप्रेरक फ़िल्म
6. सर्वोत्तम गवेषणात्मक रोमांचक फ़िल्म
7. सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म
8. सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म
9. सर्वोत्तम परिवार कल्याण फ़िल्म
10. सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

AWARDS NOT GIVEN

1. Best Scientific Film
2. Best Promotional Film (To cover Tourism Exports, Crafts Industry etc.
3. Best Agricultural Film
4. Best Historical Reconstruction/Compilation Film
5. Best Educational Motivational/Instructional Film
6. Best Exploration/Adventure Film
7. Best Investigative Film
8. Best Animation Film
9. Best Film on Family Welfare
10. Best Music Direction

सिनेमा Awards for
लेखन Writing on
पुरस्कार Cinema

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार

लेखक मधु एरवंकरा तथा अरूणा अनंत दामले को स्वर्ण कमल एवं 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार प्रकाशक डी.सी. बुक्स एवं अनिल दामले को स्वर्ण कमल एवं 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन का पुरस्कार मलयाल सिनेमायुम् साहित्यवुम को साहित्य एवं फिल्म के संबंध के गृह्य विश्लेषण के लिए तथा मराठी चित्रपट संगीताची वाटचाल को मराठी चित्रपट में संगीत परम्परा के सतर्क अनुसंधान के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the authors **MADHU ERAVANKARA** (for Malayala Cinemayum Sahithyavum) and **ARUNA ANANT DAMLE** (for Marathi Chitrapat Sangeetachi Vatchal)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Publishers **D.C. BOOKS** (for Malayala Cinemayum Sahithyavum) and **ANIL DAMLE** (for Marathi Chitrapat Sangeetachi Vatchal)

Citation

The award for the Best Book on Cinema, 1999 goes to **Malayala Cinemayum Sahithyavum** for its indepth analysis of the relationship between literature and film; its thorough understanding of the medium, rigorous research and high readability and to **Marathi Chitrapat Sangeetachi Vatchal** for its meticulous research, its understanding of musical tradition in Marathi film and accessible style.



मधु एरवन्करा

कैमिस्ट्री तथा जनरलिज्म एवं मास कम्युनिकेशन्स में मास्टर मधु एरवन्कर को मलयालम साहित्य और सिनेमा के संबंध पर अनुसंधान करने के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म अभिलेखागार से रिसर्च फेलोशिप मिली है। यह पुस्तक उसी रिसर्च का परिणाम है। इनके रिसर्च गाइड हैं अडूर गोपालकृष्णन। फ़िल्म लेखन के अतिरिक्त मधु फ़िल्म जगत की अन्य विधाओं से भी जुड़े हैं। इन्होंने मलयालम फ़िल्म **नंकोरम** तथा कुछ वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है। **स्नानखट्टंगल** नाम से इनका लघु कथासंग्रह प्रकाशित हो चुका है।

Madhu Eravankara

With Masters in Chemistry, Journalism and Mass Communication, Madhu Eravankara received a fellowship from the National Film Archive of India to do research under Adoor Gopalakrishnan on the topic **Malayala Sinimayum Sahityavum**. The book is a result of that research. Madhu has also directed the Malayalam film **Nankooram**, other documentaries and short films, besides publishing **Snanakhatangal**, a collection of short stories.

अरुणा अनन्त दामले

संगीत अरुणा दामले की पहली पसंद है और वह ग्रामोफोन रिकार्ड को बहुत ही ध्यान से सुना करती थी। शास्त्रीय संगीत का अध्ययन करते हुए उन्हें संस्कृत साहित्य में कला और संगीत के संदर्भों का भी ज्ञान हुआ। इन सबसे प्रेरित होकर इन्होंने मूक फिल्मों के युग से लेकर मराठी सिनेमा में संगीत के सफर को लिपिबद्ध किया।

Aruna Damle

Music has been the first love of Aruna Damle, who used to carefully listen to gramophone records when watching movies was a taboo. This love was reinforced when she was married to the son of Vishnu Govind Damle, one of the founders of Prabhat Films. Her husband, Anant Damle, provided him opportunities to understand its subtle nuances. Leading classical music helped her to comprehend the references to arts and music in Sanskrit literature. All this has inspired her to record the musical transformation glimpsed through Marathi films of the silent era.

अनिल अनन्त दामले

वन्यजीवन एवं प्रकृति पर्यटन अनिल अनन्त दामले के दो शौक हैं। अनिल पुणे में प्रकृति संबंधी विषयों के लेखक हैं तथा इनकी फोटोग्राफी और वीडियो फ़िल्मिंग को रोटरी क्लब द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। मराठी पत्र-पत्रिकाओं में लिखने के अतिरिक्त वे तीन पुस्तकें लिख चुके हैं - **भारतालील अभयारण्य**, **केन्यन सफारी** तथा **निसर्ग यात्रा**।

Anil Anant Damle

Wildlife and nature tourism are the twin love of Anil Anant Damle, a well known nature writer from Pune, whose nature photography and video filming, has been awarded by Rotary Club. He has written several articles on this subject in leading Marathi newspapers and weeklies and also authored 3 books : **Bharatalil Abhayaranye**, **Kenyan Safari** awarded as the best book on tourism and **Nisarga Yatra**.

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक पुरस्कार

आई. शण्मुख दास

फिल्म समीक्षक आई. शण्मुख दास को स्वर्ण कमल एवं 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1999 का सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक का पुरस्कार आई. शण्मुख दास को सिनेमाई कला के इतिहास की समझ तथा फिल्मों की सौंदर्यपरकता के मौलिक निरूपण के लिए दिया है।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC 1999

I. SHANMUGHA DAS

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the
Film Critic : I. SHANMUGHA DAS

Citation

The award for the Best Critic of 1999 goes to I. Shanmugha Das for his understanding of the history of the art of cinema, his commitment to excellence in films, his grasp of film aesthetics and his originality of vision.

आई. षण्मुख दास

गवर्नमेन्ट कालेज, त्रिचूर में अंग्रेजी के प्राध्यापक, 46 वर्षीय षण्मुख दास मलयालम में सिनेमा पर तीन पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। **स्नोइंग इन द माउन्टेन्स** मृत्यु एवं निर्वाण से संबंधित विश्व सिनेमा की 10 फिल्मों की चर्चा है। **रोड टू सिनेमा** सिनेमा के सौंदर्य पर है तथा **द होम ऑफ द ट्रेवलर** सत्यजित राय की फिल्मों पर आधारित है। इस पुस्तक को राज्य सरकार का 1997 का सर्वोत्तम पुस्तक का पुरस्कार भी मिला है।

इस समय वे अरुन्धती राय की पुस्तक **द गॉड ऑफ स्माल थिंग्स** पर काम कर रहे हैं। केरल की विभिन्न फिल्म सोसायटियों से जुड़े षण्मुख दास ने नवचित्र फिल्म सोसायटी, त्रिचूर का गठन किया। वे इस सोसायटी के मासिक बुलेटिन **समीप दृश्यम** का संपादन भी करते हैं।



I. Shanmughadas

Born on June 4, 1954 in Kerala. Shanmugha Das did his masters in English and is a lecturer in the language. I. Shanmughadas has published three books on cinema in Malayalam: **It's Snowing In The Mountains** on ten films from world cinema related to death and resurrection, **On the Road to Cinema** on the aesthetics of Cinema with special focus on sound and **The Home of the Traveller** on the films of Satyajit Ray. This last won the State Award for the Best Book on Cinema in 1997.

At present he is working on a book based on **The God of Small Things** by Arundhathi Roy.

उल्लेख

उमा जे. नायर

निर्णायक मण्डल ने इकोनामिक आसपेक्ट ऑफ फिल्म इन्डस्ट्री इन केरला के लिए उमा जे. नायर को उनके फ़िल्मों के आर्थिक पक्ष को लेकर किये गये मौलिक अनुसंधान के लिए विशेष उल्लेख किया है।

SPECIAL MENTION

UMA J. NAIR

The Jury makes a special mention of Uma J. Nair for her **Economic Aspects of Film Industry in Kerala** with its original interdisciplinary research.

उमा जे. नायर

सुप्रसिद्ध अभिनेता, निर्माता एवं स्टुडियो मालिक मधु की पुत्री उमा जे. नायर मलयालम सिनेमा से बचपन से परिचित हैं। पिता ने कई फिल्में बनाई, अतः उमा ने फिल्म निर्माण से संबंधित आर्थिक पक्ष को बहुत निकट से देखा और समझा। केरल यूनिवर्सिटी से अर्थशास्त्र में पी.एच.डी. करने के लिए इकोनामिक आस्पेक्ट ऑफ फिल्म इन्डस्ट्री विषय चुनने की प्रेरणा भी इसी से मिली। इस विषय पर अध्ययन भी कम हुआ है। अतः उमा की यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।



Uma J. Nair

Born in 1965 to Madhu, an eminent actor, director, producer and studio owner, Uma was exposed to the environment of Malayalam film industry since early childhood. With her father involved in the production of number of films, she witnessed serious discussions on financing problems, risks and other issues connected with film making. Therefore **Economic Aspect of Film Industry in Kerala** is a natural choice for the research she undertook for completing her PhD in Economics. It is an area in which few studies have been conducted. Uma's work thus is a prime source of reference and take off point for further studies in this regard.

कथासार: **Synopses :**
कथाचित्र **Feature Films**



बाइब/असमिया/117 मिनट

नाता, निर्देशक : मंजु बोरा पटकथा : रंजित
छायाकार : मृणाल कान्ति दास कला :
टंक बरूआ, दिगन्त मजूमदार संपादक : ए.
कर प्रसाद संगीतकार : आर.डी. ऋषि
लाकार : अशोक मेधी, दिलीप बोरा

मीरन चौधरी एक प्रचुर धन सम्पत्ति वाले व्यक्ति
बेटा है तथा शिलांग में अंग्रेजी का प्राध्यापक
वह अंग्रेजी में कविताएं लिखता है किंतु उसे
पता है कि वह इस भाषा में अपनी भावनाओं
अभिव्यक्त नहीं कर पाता। समीरन का बचपन
सदियों से भरा था। समीरन के पिता ने उसे
नसिक परेशानियों से दूर रखने के लिए शिलांग
जा किंतु इससे कोई लाभ नहीं हुआ। भावुक
ने पर समीरन हकलाने लगता है। बचपन को
स्त विभास उसकी इस समस्या को समझता है
र उसे समीरन की ही कविताएं सुनाता है।

क दिन घर पर सी.बी.आई. का छापा पड़ता है
र पता चलता है कि पिता परीक्षित चौधरी के

यह सारी धन सम्पत्ति भ्रष्टाचार से जुटायी है।

समीरन पिता का यह रूप जानकर बहुत दुखी
होता है। अपनी दूसरी असमिया कविता बैभव
लिखते हुए समीरन पूरी तरह ध्वस्त है। क्योंकि
पिता जेल जा चुके हैं, पत्नी छोड़ कर जा चुकी
है, अन्तरंग मित्र विभास ने उसे स्वार्थी कहा है।
समीरन सब को छोड़कर अपने 'स्वत्व' की खोज
में निकल पड़ता है।

BAIBHAB

(A Scam In Verse)

Assamese/117 Min.

Producer, Director: Manju Borah
Screenplay: Ranjit Sarma
Camera: Mrinal Kanti Das **Art:**
Phatik Barua, Diganta Majumdar
Editor: A Sreekar Prasad **Music:**
R D Rishi **Cast:** Ashok Medhi, Dilip Borah

३३

Samiran Choudhury is the son of a well-to-do officer with vast property and money. Samiran used to teach English literature in a college in Shillong and write poetry in English. But feeling that he is unable to truly express himself in this language, he leaves his job and returns to Guwahati to imbibe the culture and language of his land.

Samiran had a disturbed childhood. His father sent him away to the alien environment of Shillong hills to save him from psychological problems. But the exile doesn't help and Samiran develops a stammer which becomes marked whenever any emotional issue crops up. Samiran's childhood friend Bibhas knows this and so helps Samiran by reciting his poems.

Meanwhile, a CBI raid on their house reveals that Parikshit Choudhury had amassed his huge wealth through massive corruption. The poet is shocked to know this side of his father's character.

By the time Samiran writes his second poem, Baibhab, his life is in a turmoil. His father is taken to jail. Bibhas's mother also dies at this time. He runs away from all to find his self and his roots.



बारीवाली/बंगला/150 मिनट

निर्माता : अनुपम खेर **निर्देशक एवं पटकथा :** रितुपर्णो घोष **छायाकार :** विवेक शाह **कला :** इन्द्रनील घोष **संपादक :** अर्घ्य कमल मित्र **संगीतकार :** देबज्योति मिश्र **कलाकार :** चिरंजीत चक्रवर्ती, किरण खेर, सुर्या चटर्जी, रूपा गांगुली, सुदीप्ता चक्रवर्ती

हवेली ने कभी अच्छे दिन देखे थे। अब उसमें एक अघेड़ अविवाहिता रहती है, जिसके होने वाले पति की विवाह से एक दिन पहले मृत्यु हो गई थी। बड़ती महंगाई के कारण वह हवेली का एक हिस्सा एक फ़िल्म यूनिट को शूटिंग के लिए देने पर मजबूर हो जाती है। अजनबियों की भीड़ उसकी एकान्तता में दिनरात विघ्न डालते हैं - खासकर निर्देशक खुद। उसका आकर्षक व्यक्तित्व हवेली की मालकिन की दबी हुई आकांक्षाओं को फिर से जगा देता है और अपने स्वार्थ साधन के लिए वह स्त्री का उपयोग करना भी जानता है। वह उसे अपनी फ़िल्म में एक छोटा सा रोल

करने के लिए मना लेता है।

शूटिंग खत्म हुए बहुत दिन हो चुके हैं और वह इंतजार करती है। पत्रों का कोई जवाब नहीं आता। अन्ततः एक पत्र आता है जिसमें लिखा है - फिल्म की कुटेज आवश्यकता से अधिक हो जाने के कारण फ़िल्म का वो हिस्सा काट देना पड़ा जिसमें उसका अभिनय था।

BARIWALI

Bengali/150 Min.

Producer: Anupam Kher **Director & Screenplay:** Rituparno Ghosh **Camera:** Vivek Shah **Art:** Indranil Ghosh **Editor:** Arghya Kamal Mitra **Music:** Debajyoti Mishra **Cast:** Chiranjeet Chakraborty, Kiron Kher, Surya Chatterjee, Sudipta Chakraborty, Rupa Ganguli

The old country mansion had seen better days. Not so its owner, a lonely middle-aged spinster who gave up hoping for a husband after her intended groom died a day before the wedding. Living with a retainer and a young maid, she is forced by rising taxes to rent out her home to a film unit. A sudden rush of strangers intrude upon her privacy night and day, foremost among them being the director himself. His apparently sensitive personality draws out all her suppressed longings, and he knows it. He is adept at handling women to suit his purposes. It's all in the interest of good cinema, after all.

The heroine of his present film holds a torch for him. But the lady of the house hopes to win his heart, especially after he persuades her to do a small role in the film. But long after the shooting is over, she keeps waiting in vain hope: all her letters go unanswered. And when a letter finally arrives, it brings the news that the little scene in which she had acted had been edited out to save footage...



बिस्वप्रकाश/उड़िया/148 मिनट

निर्माता : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम
निर्देशक, संपादक : सुशान्त मिश्र पटकथा :
सुशान्त मिश्र एवं देवदास छोटराय छायाकार :
जुगल देवता कला : महेन्द्र मिश्रा संगीतकार :
विकास दास कलाकार : संजीव समल, नन्दिता
दास, विनायक मिश्र

हिन्दु तीर्थ स्थलों में पावन माने जाने वाले तीर्थपुरी के रहने वाले एक युवक बिस्वप्रकाश की अंतर्व्यथा और अंतर्द्वंद का चित्रण है - बिस्वप्रकाश रूढ़िवादी मानसिकता को टुकराकर नये परिवेश में नई संस्कृति का आचरण करने वाला बिस्वप्रकाश समुद्र के पास एक छोटे घर में रहने वाली अंजलि से मिलता है। अंजलि अपन घर को होटल में बदलना चाहती है। दोनों के रिश्ते का अंत बीच में एक पुलिस कर्मी के आने से हो जाता है।

निराश बिस्वप्रकाश एक विदेशी युवती जून से यह सोचकर मिलता है कि वह उसको पुरी के

बाहर निकलने में मदद करेगी। जून के माध्यम से विदेशियों की मित्रता प्राप्त करने वाला बिस्वप्रकाश अपने समाज और मित्रों से दूर होता जाता है। जब जून और विदेशी मित्रों के जाने का समय आता है तो बिस्वप्रकाश अपने आप को जीवन यात्रा में नितांत अकेला पाता है।

BISWAPRAKASH

(The Young Rebel)
Oriya/ 148 min

Producer: NFDC **Director & Editor:** Susant Misra **Screenplay:** Susant Misra & Devdas Chhotray **Camera:** Jugal Devata **Art:** Mahendra Misra **Music:** Vikash Das **Cast:** Sanjeev Samal, Nandita Das, Binayaka Misra

Puri, one of the four major Hindu pilgrimages, attracts people for its

lovely beaches and archaeological heritage. The ancient town has an imposing culture of the Hindu joint family. Biswaprakash, a youth in his twenties, constantly clashes against its stranglehold. In an atmosphere where old values are giving way to consumer culture, he goes against the tradition of his Brahmin family and is alienated from his parents and sibling. Every time he has a conflict with his family, Biswaprakash goes away to the house of a friend Anjali, who lives with her mother in an old mansion near the sea. Anjali has turned her house into a holiday home and hopes to carry Biswaprakash along with her -- until a policeman comes between them.

Disheartened, Biswaprakash goes off to the beach where he meets June, a traveller from abroad who, he hopes, will help him escape the claustrophobic town. Through June he gets friendly with other foreigners. This alienates him from his own society and friends. When the time comes for June to leave Puri, Biswaprakash is trapped in a situation from where he has no way to return. The end finds him probing questions he should have asked at the beginning. What was the objective of his rebellion - and where did his journey take him to?



देवीरी/कन्नड/97 मिनट

निर्माता : भारती गौड़ा, कविता लंकेश, अराथी गडासल्ली, हनुमन्त रेड्डी **निर्देशक एवं पटकथा :** कविता लंकेश **छायाकार :** एस. रामचन्द्र **कला :** सशोधर अडपे **संपादक :** एम.एन. स्वामी **संगीतकार :** इसाक थॉमस **कोट्टुकपल्ली कलाकार :** नन्दिता दास, मंजा

देवीरी, एक 12 वर्ष के बच्चे क्यथा की नज़रों से आधुनिक संसार का चित्र है जिस में गरीबी और मासूमियत का कोई स्थान नहीं है। इस शोर शराबे से भरी झोपड़पट्टी में भी क्यथा खुशी ढूँढ लेता है। देवीरी जो उसके लिए बहन है, माँ है, उसके जीवन की धुरी है, परंतु वह अब अपनी मासूमियत खोकर एक छुटपैय्ये नेता के हाथों का खिलाती बन गई है। बेहतर जीवन स्तर की चाह ने देवीरी को शरीर बेचने के लिए प्रेरित कर दिया है। परंतु वह ये कड़वा सच क्यथा से छुपाने में प्रयासरत है।

छुटपन से ही व्यभिचार, दुराचार से साक्षात्कार

होने से क्यथा का बालपन वाधित हो जाता है। वह सिद्धांतों की खरीद-फरोख्त के साथ जोना सीख लेता है। पर जब देवीरी की असलियत उस पर खुलती है तो क्यथा व्यथित हो कर अनाथालय चला जाता है। पर वहाँ भी वह देवीरी और झोपड़पट्टी के जीवन को भूल नहीं पाता।

DEVEERI

Kannada/ 97 min

Producer: Bharathi Gowda, Kavitha Lankesh, Arathi Gadasalli, Hanumanth Reddy **Direction & Screenplay:** Kavitha Lankesh **Camera:** S Ramachandra **Art:** Shashidar Adape **Editor:** M N Swamy **Music:** Isaac Thomas **Kottukapally Cast:** Nandita Das, Manja

Kyatha, a 12-year-old boy, lives in the slums of Bangalore with Deveeri who is his sister, mother,

father, friend and enemy too. As the film unfolds, so does the sordidness of the modern world where poverty soon corrupts innocence.

Kyatha is unable to comprehend the nocturnal job of his sister. His world of dimly lit hovels is as bleak as the future of the inmates, as empty as the dripping taps. Yet, even in this tattered world, Kyatha finds happiness. In Paddi, an aspiring starlet who will go to any length in search of stardom. In Ranganna, a kind hearted drunkard who has lost his life to gambling. In the childless Sampoorana who scrapes her own empty life to fill the young boy's stomach. In Deveeri, the anchor of his life.

But Deveeri has lost her innocence. Her yearning for a better life for the two of them has made her a pawn in the hands of a small-time politician, his touts and his pimps. She is a sex worker who tries to hide the fact from her brother.

Kyatha's innocence dissolves as he learns of the various kinds of corruption surrounding him. Of bribes which form the backdrop to local elections. Of schools where donation is more important than education. Of linguistic movements which are nothing less than extortion. Of the dream world of cinema which is as sleazy as his sister's life. Kyatha wonders what Deveeri has to do with the pimps who hang around her. The day realisation dawns, the lad's world changes drastically. The sister too decides to go away, leaving the boy to fend for himself. A devastated Kyatha tries to hold on to his morals while surviving in the colourless world of an orphanage.



Usha, six youngsters in Hyderabad trying to decide whether or not to board the flight to the US.

When Ravi leaves for the US, the friends help his parents cope with life without their son. Balu is also keen to leave. Srinu tries to take his MBA entrance. Phani is married to Archana, an ideal housewife. Sardar, who runs a family business, is untouched by the hype about US. Instead, he tries to talk his friends into doing some business. Usha, studying journalism, chooses to do a project on people leaving for US.

Balu uses money, influence, fraud with the computer institutes - whatever - to get a visa to US, and finally succeeds. Srinu resists pressure from friends and parents but fails in the entrance test. Should he give up and go to US? He makes a choice. Phani makes a choice too, as he starts getting frustrated in his job when he sees mediocre friends doing better. Usha's pursuit gets her first hand information about the IT industry in the city.

Missing Ravi in every walk of life, his father has a heart attack. During the crisis Ravi stays back in the US. When he finally returns, he feels he has outgrown India, makes a choice. This profusely affects Balu who gets a US visa but makes a different choice.

There is a conscience to the movie called 'She.' She sympathises with the gang during their hour of need, and tries to provide resolution when they are in a dilemma. Above all, she acts like a Sutradhar for Dollar Dreams.

डालर ड्रीम/अंग्रेजी/100 मिनट

निर्माता, निर्देशक एवं पटकथा : शेखर कम्मूला
छायाकार : विजय कुमार
संपादक : वेंकटेश तथा माधव
संगीतकार : लक्की अली
कलाकार : अनीश कुरुविला, प्रियंका वीर, संतोष कुमार, सत्या

डालर ड्रीम की कहानी हैदराबाद के छह नवयुवकों की है जिनके सामने दो विकल्प हैं या तो अमेरिका जाना या कुछ अनोखा कर दिखाना।

इनमें से एक मित्र रवि अमेरिका जा रहा है। उस के विदाई समारोह के अवसर पर अन्य मित्र विशेषकर बालू इसी स्वप्न में जीना प्रारंभ कर देता है। केवल सरदार अन्य मित्रों को भारत में ही कुछ काम करने की सलाह देता है। पत्रकारिता की छात्रा, उषा इसी अमेरिकी स्वप्न को विषय बना कर एक शोध आरंभ करती है।

बालू अपने इस स्वप्न को साकार करने के लिए कम्प्यूटर इन्स्टीट्यूट, धन शक्ति यहां तक कि धोखाधड़ी का सहारा लेता है। जबकि श्रीनु पढ़ाई

के जरिये अमेरिकी स्वप्न को साकार करना चाहता है। इसी प्रकार सभी मित्र अमेरिका जाने के स्वप्न को मूर्त रूप देने में व्यस्त रहते हैं।

तभी रवि के पिता को दिल का दौरा पड़ता है। पर रवि अमेरिका से वापस नहीं आता। परंतु जब लौटता है तो एकदम बदला हुआ। बालू जिसे अब अमेरिका का बीजा मिल चुका है बदले हुए रवि को देखकर निर्णय बदल देता है।

DOLLAR DREAMS

English/ 100 min

Producer, Director, Screen-play: Sekhar Kammula
Camera: Vijaya Kumar
Editor: Venkatesh & Madhava
Music: Lucky Ali
Cast: Anish Kuruvilla, Priyanka Vir, Santosh Kumar, Satya

Dollar Dreams is about Ravi, Balu, Srinu, Phani, Sardar and



घरा बाहेर/मराठी/135 मिनट

निर्माता : रतन मदन तथा नरेन्द्र शिन्दे
निर्देशन : संजय सूरकर पटकथा : विजय कुवलेकर छायाकार : हरीश जोशी कला : अजित दांडेकर संपादक : विश्वास अनिल संगीतकार : श्रीधर फडके कलाकार : मोहन जोशी, सोनाली कुलकर्णी, सचिन खेदेकर, रीमा

जीवन मूल्यों के लिए संघर्ष तथा सत्ता की खातिर बदलते संबंधों की कहानी है घरा बाहेर।

अन्नासाहेब लंबे समय से एम.एल.ए. हैं तथा उन्होंने सत्ता में होने का भरपूर लाभ उठाया है। उनका बेटा बालासाहेब भी स्कूल, कॉलेज पंचायत - हर जगह पिता की शक्ति का दुरुपयोग करता है। समस्या तब आती है जब उनका चुनाव क्षेत्र 'महिलाओं के लिए आरक्षित' घोषित कर दिया जाता है।

अन्नासाहेब समाधान ढूँढ निकालते हैं और अपनी पुत्री को चुनाव लड़ने के लिए मना लेते हैं। अपने

पिता एवं भाई के कारणों से अनाभिज्ञ वसुधा सोचती है कि वह सच में ही अपने स्थानीय लोगों के लिए कुछ कर पायेगी। समय के साथ अपने कॉलेज के मित्रों के माध्यम से सत्य का पता चलता है। इस बात से नाराज बालासाहेब वसुधा के मित्र समाज सुधारक समीर का खून करवा देता है। पिता की इच्छा के विरुद्ध वसुधा भाई को गिरफ्तार करवा देती है और निश्चय कर लेती है कि अब पिता-पुत्री एक छत के नीचे नहीं रह सकते। घर से बाहर निकलते वक्त उसकी माँ भी उसके साथ है।

GHAR-A-BAHER

(Out of the Home)
Marathi/135 min

Producer: Ratan Madan & Narendra Shinde **Director:** Sanjay Surkar **Screenplay:** Vijay Kublekar **Camera:** Harish Joshi

Art: Ajit Dandekar **Editor:** Vishwas Anil **Music:** Shridhar Phadke **Cast:** Mohan Joshi, Sonali Kulkarni, Reema, Sachin Khedekar

Annasaheb is an MLA with a long innings in local politics and a standing in the party ruling the state. He has always manipulated to be at the power centre, and exploited his position to enrich himself. His son Balasaheb likewise misuses his position, indulging in objectionable activity at the school, college and gram panchayat institutions. Annasaheb's mistress too uses her henchmen to cover up the misdeeds of the father and son duo.

The cozy equation is challenged when the constituency is declared a 'reserved seat for women,' under the 33 per cent reservation scheme announced to empower women. Annasaheb works a way out of the possible loss of power by persuading his architect daughter to fight the elections.

Innocent of the machinations of her father and brother, Vasudha genuinely believes that she can contribute to the betterment of life at the local level.

However, friends from her university reveal the reality of her kith and kin. This prompts her brother to use local goons to kill Samir, a social worker.

Under pressure from Vasudha, the police arrest the goons who reveal that they were hired by Balasaheb. A shattered Vasudha gets her brother arrested. When her father appeals to her in the name of family honour, she declares that she could not share the same roof with him and leaves home.



द गोल/हिन्दी/90 मिनट

निर्माता : बालचित्र समीति, भारत **निर्देशक :** गुल बहार सिंह **पटकथा :** पार्थ बनर्जी तथा सुबीर मुखर्जी **छायाकार :** बरुण राहा **कला :** दिलीप चौधरी **निर्देशक :** उज्जल नन्दी **संगीतकार :** चन्दन राय **कलाकार :** मनोज मित्रा, इरफान खान, पुण्य दर्शन गुप्ता, संजय शर्मा

पश्चिमी बंगाल के छोटे से कस्बे में फुटबाल की दो टीमों बेंगु बीना तथा इलेवन बुलेट्स में मैच होना है। अनुपम इलेवन बुलेट्स का कोच है और टीम में से एक रत्न को पहचानता है जिसमें खेल की असीम प्रतिभा है। अनुपम जब मनु को फ़ाइनल मैच के लिए चुन लेता है तो टीम के बाकी लड़के व उनके अभिभावक इसलिए नाराज होते हैं क्योंकि मनु एक निम्न जाति का लड़का है तथा उसका पिता चोर है। क्लब का सचिव भी उनसे सहमत है। अनुपम का विचार है पिता के दुष्कर्मों की सजा उसके बच्चों को क्यों दी जाए,

इसलिए वह उसे दूसरी टीम में शामिल करवा देता है और मनु के कुशल खेल से वह टीम जीत जाती है। अनुपम को धोखेबाज समझा जाता है किंतु उसे कोई दुख नहीं - वह एक नयी प्रतिभा की खोज में निकल पड़ता है।

THE GOAL

Hindi/ 90 min

Producer: Children's Film Society, India **Director:** Gul Bahar Singh **Screenplay:** Partha Banerjee, Subir Mukherjee **Camera:** Barun Raha **Art:** Dilip Chaudhary **Editor:** Ujjal Nandy **Music:** Chandan Roy **Cast:** Manoj Mitra, Irfan Khan, Punya Darshan Gupta, Sanjay Sharma

The film brings into focus the soccer world in the small towns of West Bengal.

Two sporting clubs, Benu Beena and Eleven Bullets are pitted against each other for the final round of the Challenge Cup. Anupam, the ace coach of Eleven Bullets with an uncanny capacity to spot talent, notices a shabbily dressed boy, Manu, intently watching the game in progress. Anupam inducts Manu into the practice and he proves his mettle in no time. But when Anupam decides to include the young player in the team for the finals, the other boys strongly object. The son of a low caste, congenital thief should not be a fellow player, they feel. The Club Secretary too supports the boys. When Anupam pleads that a child should not be punished for his father's sins, the President vetoes the stand.

Anupam however, sticks to his guns. Bent upon grooming the talent in Manu, he takes the boy to Benu Beena where he is accepted. Manu's skill plays a big role in winning Benu Beena the Challenge trophy. Anupam is accused of betraying his own club. He resigns and goes away to another town, but with no regrets. Perhaps he will become the coach for another club, and save another talent from falling to unsporting considerations..



हरी भरी/हिन्दी/140 मिनट

निर्माता : परिवार कल्याण मंत्रालय **निर्देशक :** श्याम बेनेगल
पटकथा : शमा जैदी
छायाकार : राजेन कोठारी **कला :** नितीश राय,
 समीर चन्दा **संपादक :** असीम सिन्हा
संगीतकार : वनराज भाटिया **कलाकार :**
 शबाना आज़मी, सुरेखा सौकरी, नन्दिता दास,
 रजित कपूर, श्रीवल्लभ व्यास, ललित तिवारी,
 अलका तिवारी, राजेश्वरी सचदेव

शेख मुस्लिम समीदार परिवार की पाँच महिलाओं की कहानी है, हरी भरी, तीन पीढ़ियों- दादी, दो बहुएँ, एक बेटी और एक पोती में बटीं ये महिलाएँ जीवन के उतार चढ़ावों से अलग-अलग निपटती हैं। फिल्म का केन्द्रबिन्दु महिला स्वास्थ्य और अधिकार है।

परिवार की महिला मुखिया हसीना बीमार है। इस परिवार को उसका चेटा खलील और बार बार गर्भ धारण करने वाली उसकी पत्नी नजमा

चलाते हैं। परिवार में शिशुओं की मौत हो जाना एक आम बात है। हसीना का दूसरा बेटा खुर्शीद और उस की रूढ़िवादी पत्नी अफसाना और उसके दो बच्चे और एक बच्ची भी इसी घर में रहते हैं। हसीना की बेटी गज़ाला और नाती सलमा अपने पति से तंग आ कर उस के साथ रहने लगते हैं। इस घर में घटने वाली खट्टी मीठी बातों पर आधारित ये फिल्म मुस्लिम परिवारों में महिलाओं की समस्याओं को उजागर करती है।

HARI BHARI

(Fertility)
 Hindi/ 140 min

Producer: Dept of Family Welfare
Director: Shyam Benegal
Screenplay: Shama Zaidi **Camera:** Rajen Kothari **Art:** Nitish Roy,
 Sameer Chanda **Editor:** Aseem
 Sinha **Music:** Vanraj Bhatia **Cast:**

Shabana Azmi, Surekha Sikri,
 Nandita Das, Rajat Kapur,
 Srivallabh Vyas, Lalit Tewari, Alka
 Tewari, Rajeshwari Sachdev

Hari Bhari is the story of a Shaikh landholding family in the semi rural Badayun district of western Uttar Pradesh. The film deals with three generations of women: grandmother, her two daughters-in-law, a daughter and a grand daughter. Within the frame story are individual episodes dealing with the crises faced by each of them. Through it all, the film speaks of the need for women to develop an awareness of female health problems and their rights over their bodies as a necessary factor in their empowerment. Although a fictional saga of a family, Hari Bhari is based on actual case studies made in the region over a period.

Hasina is an ailing matriarch in a joint family which is run by her older son Khaleel Ahmed. His perpetually pregnant wife Najma has two young sons and a history of miscarriages and infant deaths. Hasina's second son Khurshid works in Meerut but his conservative wife Afsana and her two young sons and an infant daughter live in the same house. Hasina's daughter Ghazala, driven out by her husband Munir for not giving him a son, comes to stay with her. Her teenaged daughter Salma shuttles between this house and that of her erratic father. The bitter sweet events taking place in the house during the course of a year constitutes the film.



हे राम/तमिल/150 मिनट

निर्माता : राजकमल फिल्मस इन्टरनेशनल
निर्देशक एवं पटकथा : कमल हासन
छायाकार : तिरुनवुकरासु कला : साबु सिरिल
संपादक : रेणु सलूजा **संगीतकार :** इलयाराजा
कलाकार : कमल हासन, रानी मुखर्जी, शाहरूख खान, वसुन्धरा दास, नसीरुद्दीन शाह

नवीन भारतीय इतिहास के पन्नों से झांकती इस फ़िल्म में दम तोड़ता 89 वर्षीय साकेत राम देश के विभाजन के समय को याद करता है। जब देश के नेता विभाजन को लेकर वैचारिक मतभेद से जूझ रहे थे। अक्सरवादी धार्मिक कट्टरपंथियों ने इस मतभेद को क्षेत्रों का रंग दे दिया। कलकत्ते में रह रहे साकेत की पत्नी को उसके सामने मौत के घाट उतार दिया जाता है। दूसरा विवाह जो जाने पर भी भ्रमित साकेत राष्ट्र नेताओं को पत्नी की हत्या का जिम्मेदार मानता है। मन और आत्मा के द्वंद में कैसे साकेत के इन विचारों को कुछ ग़ैर जिम्मेदार व्यक्तियों का सहयोग मिलता है और

वह अहिंसा के सिद्धांत को मानव विरोधी मानने लगता है। परंतु 30 जनवरी 1948 को हुई हिंसा पर मानव मूल्यों की विजय उसका जीवन बदल देती है।

HEY! RAM

Tamil/ 150 min

Producer: Rajkamal Films International
Director: Kamal Haasan
Screenplay: Kamal Haasan
Camera: Thirunavukarasu
Art: Sabu Cyril
Editor: Renu Saluja
Music: Ilayaraja
Cast: Kamal Haasan, Rani Mukherjee, Shah Rukh Khan, Vasundhara Das, Naseeruddin Shah

The story begins at the deathbed of 89-year-old Saket Ram, who rides the waves of memory to go

back to the 1940s. Saket and his friend Amjad Ali Khan were archaeologists then, working under Mortimer Wheeler at the excavation sites of Mohenjodaro. In the Indus valley civilisation, born long before Ram, Christ or Mohammad, Saket and Amjad see no need for an absurdity like the making of the neo-Islamic state - Pakistan.

Gandhiji too did not like this division of India. He asked the nation to accommodate the Muslims within the country as brothers. But Jinnah's dreams of Pakistan could not agree to such a simple compromise. But before these learned men could come to a decision, in 1946, Calcutta became the alter of human sacrifice as both Hindus and Muslims decided to fight it out. A near civil war broke out when Jinnah announced 'The Direct Action Day' and Suhrawardy executed it.

Saket, then living in Calcutta, is an impotent witness to the slaughter of his wife. This Brahmin from Madras loses his bearing. He tries to reach back to a place called home. But a second marriage, arranged by concerned elders, fails to help him settle down. Saket blames his state on the statesman who made hurried decisions on behalf of his country. His criticism finds company, and while Gandhiji's philosophy of Ahimsa was engaging the attention of the world, Saket joins its bitter critics. But on January 30, 1948 he sees the triumph of human spirit over violence. He witnesses a different kind of crucifixion which changes him for life.



हम दिल दे चुके सनम/हिन्दी/190 मिनट

निर्माता, निर्देशक, पटकथा : संजय लीला भणसाली **छायाकार :** अनिल मेहता **कला :** नितिन देसाई **संपादक :** बेला सहगल **संगीतकार :** इस्माईल दरबार **कलाकार :** सलमान खान, अजय देवगन, ऐश्वर्या राय, विक्रम गोखले

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के आचार्य पंडित दरबार का बड़ा संयुक्त परिवार परम्परा एवं अनुशासन के साथ रहता है। चंचल पुत्री नन्दिनी को अपने संगीत की प्रेरणा मानते हैं। इटली से आने वाले पिता के शिष्य समीर के लिए नन्दिनी को अपना कमरा खाली करना पड़ता है। समीर अपने स्वभाव से सभी का दिल जीत लेता है। त्वीहारी के नाच गानों व रीति रस्मों के बीच समीर और नन्दिनी यह जान ही नहीं पाते कि कब वे एक दूसरे को चाहने लगे। इससे अनभिज्ञ परिवार नन्दिनी की सगाई वनराज के साथ तय कर देता है। नन्दिनी और समीर अपने प्यार को बचाने की कोशिश

करते हैं लेकिन पंडित दरबार के अनुशासन के आगे उनकी एक नहीं चलती। वनराज के साथ नन्दिनी का विवाह हो जाता है। वनराज पत्नी को बहुत चाहता है। नन्दिनी के हाथ में समीर के पत्र देखकर वह उन दोनों को एक करने की दान लेता है। वनराज और नन्दिनी समीर को ढूंढने के लिए इटली जाते हैं। समीर को ढूंढने की प्रक्रिया में नन्दिनी प्यार का वास्तविक अर्थ जान गई है वह वनराज के पास लौट आती है।

HUM DIL DE CHUKE SANAM

Hindi/140 Min.

Producer, Director, Screenplay: Sanjay Leela Bhansali **Camera:** Anil Mehta **Art:** Nitin Desai **Editor:** Bela Segal **Music:** Ismail Durbar **Cast:** Salman Khan, Ajay Devgun, Aishwarya Rai

Tradition is the household heritage

of Pundit Darbar and his large joint family, who live in a majestic haveli in Gujarat. The devotee of Hindustani music brings to his art a discipline that extends to his loved ones. His one weakness is Nandini, his passionate yet playful daughter.

Nandini's willful spirit rebels when she has to give up the comforts of her room to accommodate Sameer, who comes from Italy to study our music. But Sameer's refreshing candour and innate good nature prove irresistible. The two fall in love. As the seasons flow by, with their delightful songs and dance, Nandini and Sameer pledge themselves to a future together.

Unaware of this, the family finalises Nandini's marriage with the highly eligible Vanraj. She fights to save her love but Pundit Darbar's code of honour will not allow him to retract from a commitment. The intended marriage takes place.

Vanraj is deeply in love with Nandini and willing to wait till she reciprocates. His aspirations are shattered when Sameer's letters to Nandini fall into his hands. Vanraj's strong moral fibre decides to reunite her with her heart's true desire.

They travel to Italy together on an adventure that is frustrating, ironic and tender. After a painful search they get news of Sameer. Nandini and Vanraj arrive at the opera where Sameer is to perform. It is the moment of truth. Nandini realises that through the depth of Vanraj's self effacing love, she has learnt the true meaning of love. There is no turning back now. Together Nandini and Vanraj must create a lifetime to share.



जलमरमरम्/मलयालम/73 मिनट

निर्माता : लता कुरियन, राधिका सुरेश गोपी
निर्देशन : टी.के. राजीव कुमार **पटकथा :**
 टी.के. राजीव कुमार तथा बी. उन्नीकृष्णन
शायकार : रवि वर्मन **कला :** प्रकाश मूर्ति
संपादक : श्रीकार प्रसाद **संगीतकार :** शरत
कलाकार : अश्विन तम्पी, जी. गायत्री

उस्मान, जो पर्यावरण को बचाने के लिए संघर्ष करता रहा, को कैसर से मृत्यु हो जाती है। गाँव में बड़ी फैक्टरी है जिसका कचरा गाँव के मुख्य नदी के जल को इतना दूषित कर चुका है कि वह मौत की नदी बन चुकी है। उस्मान का आठ वर्षीय बेटा निर्मल पिता द्वारा खेल में सुनाई गई जलपरी की कहानी को सत्य समझता है और मन ही मन उसे नदी के प्रदूषण से बचना चाहता है।

निर्मल मेले में एक परी के खेल को देखकर उसे वास्तविक परी समझता है जो कि नदी के प्रदूषण से डरकर मेले में एक, छोटे से

पानी के टैंक में आकर रहने लगी है। वास्तव में मेले का मालिक एक छोटी लड़की को परी के रूप में पेश करने के लिए उसे जबरन घंटों पानी में रखता है। निर्मल का परी को स्वच्छ वातावरण देने का सपना सच होता है और वह उस लड़की को मेले के मालिक की कैद से छुड़ाने में सफल हो जाता है।

Jalamarmaram

(The Whisper of Water)
 Malayalam/ 73 min

Producer: Latha Kurien, Radhika Suresh Gopi **Director:** T K Rajeev Kumar **Screenplay:** T K Rajeev Kumar & B Unnikrishnan **Camera:** Ravi Varman **Art:** Prakash Moorthy **Editor:** Sreekar Prasad **Music:** Sharreth **Cast:** Aswin Thampy, G Gayathri

Jalamarmaram addresses itself to the basic issue of degradation of environment by powerful capitalists and the fatal effect of this on people and natural resources.

Usmaan, an environmental activist, was one of the many who lost their lives and their health because a factory in their village had converted water from the elixir of life to a river of death, by discharging polluting waste products.

Nirmal, Usman's eight-year-old son, immediately identifies the chemical factory as the "enemy of the people." As his mother gets involved in the mass movement against the factory, Nirmal finds solace in the fantasy world of mermaids who peopled the fables his father narrated to him.

The turning point in the narrative occurs when Nirmal goes to a carnival and finds a mermaid there, a popular sideshow in the carnival. He mistakes her for the real mermaid who, he believes, lives in a palace under the river now threatened by pollution.

From now on, the narrative shifts between the real and the fantastic as the little dreamer tries to live out his conviction that, in order to live on, the little mermaid needs a clean environment.



कैरी/हिन्दी/96 मिनट

निर्देशन : परिवार कल्याण मंत्रालय निर्माता :
अमोल पालेकर **पटकथा :** चित्रा पालेकर,
अमोल पालेकर **छायाकार :** देबू देवधर
कला : गुरुजी ब्रदर्स **संपादक :** वामन भोसले
संगीतकार : भास्कर चन्दावरकर **कलाकार :**
 शिल्पा नवलकर, योगिता देशमुख, मोहन
 गोखले, सोनाली कुलकर्णी

कैरी सुप्रसिद्ध कहानीकार जी.ए. कुलकर्णी की कहानी पर आधारित है।

माता पिता की मृत्यु के बाद अपनी तानी मौसी के घर आयी दस वर्षीया लड़की के खट्टे मीठे अनुभवों की कहानी है - कैरी। तानी मौसी, जिसका पति दुष्ट और चरित्रहीन है, किसी तरह बच्ची को बाहरी दुनिया की कठोरता से बचाये रखती है। तानी मौसी का सान्निध्य एवं स्नेह बच्ची के हृदय में एक नई आशा एवं आत्मविश्वास का संचार करता है। स्कूल के एक अध्यापक भी

एक प्रेरणास्रोत है। फ़िल्म का मुख्य संदेश है कि स्त्री को पुरुष की छाया से निकल कर अपने स्वतंत्र अस्तित्व को खोजना है तथा अपनी आन्तरिक शक्ति को उजागर करना है।

KAIREE

(The Raw Mango)
 Hindi/ 96 min

Producer: Dept of Family Welfare
Director: Amol Palekar **Screenplay:** Chitra Palekar, Amol Palekar **Camera:** Debu Deodhar
Art: Guruji Brothers **Editor:** Vaman Bhosale **Music:** Bhaskar Chandavarka **Cast:** Shilpa Navalkar, Yogita Deshmukh, Mohal Gokhale, Atul Kulkarni, Sonali Kulkarni

Kairee is based on a renowned Marathi short story by G A

Kulkarni, a most significant writer of our times.

The film narrates the sweet and sour experiences of a ten-year-old brought to her maternal aunt, Taani's house following the loss of her parents. Uprooted from a caring home, the girl struggles to cope with hostilities in her new environment. Taani Mausi, living a barren existence with a brute for her husband, tries single-handedly to preserve the child's innocence and sensitivity as together they face the unpleasantness and vulgarity of an adult world.

Kaleidoscopic images of intimacy and bonding unfold as Taani Mausi helps the girl create a world of their own.. A world full of love, beauty, and hope.. A world of sunshine, woods, streams, peacocks.. And a world of raw possibilities!

Told entirely from the subjective viewpoint of the girl child, the lyrical texture of the film conveys the innocence and sensitivity of the child. Yet, the simple story of two lonely people does not remain at a linear, narrative level of story telling. It rediscovers the inner strength of Woman. A strength that enables her to dream and hope against all odds in a male dominated Indian society. A strength that helps her to mould a beautiful tomorrow.



कलिसुन्दम... रा/तेलुगु/150 मिनट

निर्माता : डॉ. सुरेश बाबु निर्देशक, पटकथा :
 उदय शंकर छायाकार : के. रवीन्द्रबाबु कला :
 अशोक संपादक : के.ए. वेंकटेश, माधव
 संगीतकार : एस.ए. राजकुमार कलाकार :
 डी. वेंकटेश, सिमरन, के. विश्वनाथ, विजया
 कुमारी

राघवैया और राममोहन पुराने शत्रु हैं। राघवैया की बर्षौंपूर्ति के अवसर पर उस का पोता रघु अपनी विधवा माँ के साथ उस से मिलने आता है। राघवैया की पत्नी तरायु, कानून में उच्च शिक्षा प्राप्त रघु को परिवार के साथ मेल जोल रखने की

सलाह देती है। रघु अपनी चाची की पुत्री गंगा से मैत्री करता है। एक दिन मेला जाते समय वह गाँव के बांध के इंजीनियर को राममोहन के बेटे एराप्रभु से विवाद करते देखता है। इंजीनियर बांध ठीक करने के लिए पानी की धारा बंद करना चाहता है। रघु अपने दादा राघवैया के पक्षधर इंजीनियर को कचहरी से केस जीता देता है।

इसी के साथ रघु दोनों परिवारों की शत्रुता समाप्त करने का वचन लेता है। रामनवमी के अवसर पर वह दोनों वृद्धों को एक नाव में यात्रा करने पर मजबूर कर देता है। फलस्वरूप दोनों वृद्धों के बीच की कड़वाहट समाप्त होने लगती है। परंतु वापसी के समय सूचना मिलती है कि हाथी राममोहन के खेत तबाह कर रहे हैं तो दोनों वृद्ध हाथियों को रोकने की कोशिश करते हैं।

इसी समय रघु राममोहन को जान बचा कर दोनों परिवारों को मिला देता है।

पर रघु जब मंगा से विवाह करने की आज्ञा मांगना चाहता है तो उसे पता लगता है कि दोनों वृद्ध राममोहन के पोते से मंगा का विवाह तय कर चुके हैं। कुछ नाटकीय घटनाओं के बाद रघु अपने आप को बीच से हटा कर फिर पनपने लगी शत्रुता को समाप्त कर देता है।

KALISUNDAM... RAA

Telugu/ 150 min

Producer: D Suresh Babu **Director,** **Screenplay:** Uday Shanker
Camera: K Ravindrababu **Art:**
 Ashok **Editor:** K A Venkatesh,
 Madhav **Music:** S A Rajkumar
Cast: D Venkatesh, Simron, K
 Vishwanath, Vijaya Kumari

Raghaviah and Rammohan have a long standing rivalry that comes to the fore when the administration decides to repair a dam constructed during the British period. Rammohan's son Errababu protests, since his fields are located

there. But Raghaviah agrees and offers to make good Errababu's losses. The latter refuses to accept.

Meanwhile Raghaviah prepares to celebrate the 60th anniversary of his marriage. He invites every member of his large family, including Kowsalya, the widow of his estranged son. But he is cold to his grandson Raghu.

Raghu strikes a friendship with Manga, the daughter of his paternal aunt. He takes all the children to an exhibition. On the way he finds the engineers quarreling with Errababu, who has brought a stay order. Raghu argues and vacates the stay. This impresses Raghaviah but leads to an altercation with Errababu. Raghaviah chides Raghu for increasing the bad blood created by his father.

Raghu is crestfallen to hear the saga of the two families which once lived next to each other, and planned to marry Rammohan's daughter with Raghaviah's son. But the son, studying in Bombay, had secretly married Kowsalya. When the truth is revealed, Rajani sets herself on fire and her sister's husband perishes in the unrest that ensues. From that day Rammohan's family had sworn enmity with Raghaviah.

Deciding to reunite the two families, Raghu saves Rammohan's crops from elephants and the old man from the rampage that ensues. The affection this wins for Raghu is jeopardised when he seeks his grandfather's consent for his marriage with Manga. For, this time, the elders seeking to heal the wounds of the past, have fixed her marriage with Rammohan's grandson...



KANOORU HEGGADITHI

Kannada/ 140 min

Producer: H G Narayana, C M Narayana, I P Mallegowda **Director, Screenplay:** Girish Karnad **Camera:** S Ramachandra **Art:** Shashidar Adapa **Editor:** Basavaraj Urs **Music:** B V Karanth **Cast:** Girish Karnad, Thara, Harish Raju, Mallika

The story, set in 1930s, unfolds around Chandrayya Gowda, the master of the house of Kanooru who has brought home his third wife. Subbamma, younger to him and less sophisticated, is unable to get on with Chandrayya's children and widowed sister-in-law.

Chandrayya's son Ramayya studies with his nephew Hoovayya. When the two cousins come to Kanooru for a vacation, its already turbulent atmosphere gets further vitiated. Chandrayya feels threatened by Hoovayya who is an intelligent, well read liberal. Being impotent, Chandrayya suspects his wife of being attracted to Hoovayya. He is also troubled by Ramayya's emotional attachment to him. Things come to a head when Chandrayya gets Seetha, who loves Hoovayya, married to Ramayya.

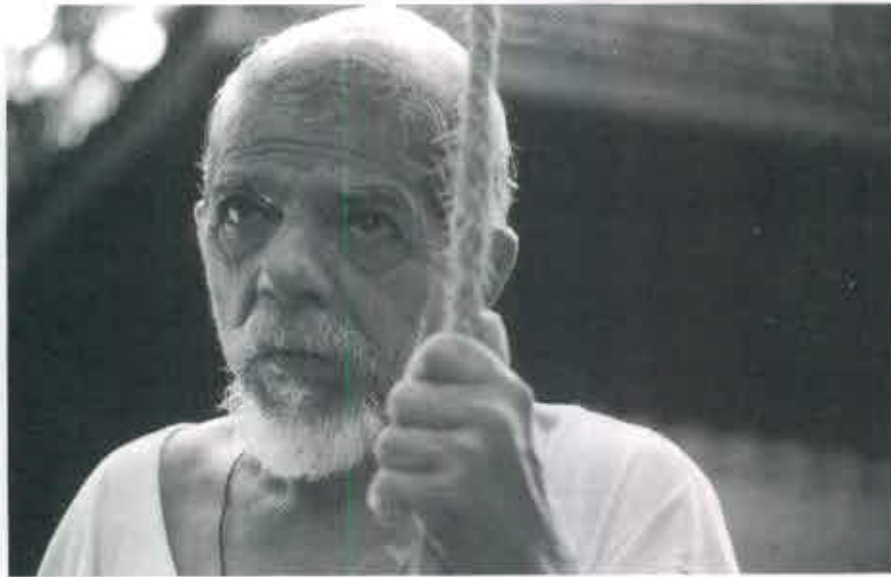
As the family's life worsens, Subbamma runs away to her father's house; Seetha seeks shelter in Hoovayya's house; Chandrayya dies and Ramayya, his sanity strained by misfortunes, commits suicide. Hoovayya is brought home to Kanooru by Seetha.

कानूरू हेगाडिथी/कन्नड/140 मिनट
निर्माता : एच.जी. नारायण, सी.एम. नारायण,
आई.पी. मल्लीगीड़ा निर्देशक, पटकथा :
गिरीश कर्नाड छायाकार : एस रामचन्द्र कला :
शशीधर अडापे संपादक : बासवराज असे
संगीतकार : बी.वी. कारन्थ कलाकार : गिरीश
कर्नाड, तारा, हरीश राजु, मल्लिका प्रसाद

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता के.वी. पुटप्पा के उपन्यास पर आधारित ये फिल्म सन् 1930 के आस पास की कहानी है। मालेन्दु के घने जंगलों में बसा है कानूरू वंश का पैतृक परिवार। परिवार का मुखिया चंद्रय्या गौड़ा अपने से कहीं छोटी तीसरी पत्नी सुब्बम्मा को घर लाता है। निम्न परिवेश की सुब्बम्मा घर के शेष सदस्यों से तालमेल नहीं रख पाती। परन्तु कहानी में मोड़ तब आता है जब चंद्रय्या का बेटा रामय्या और उसके भाई का बेटा हूवय्या छुट्टी पर शहर से घर आते हैं। वृद्ध चंद्रय्या सुब्बम्मा और हूवय्या के रिश्ते पर शक करता है जिसका अंत होता है घर के बटवारे

के साथ। हूवय्या अपनी मां के साथ दूसरे घर में रहता है परन्तु चंद्रय्या हूवय्या की प्रेमिका सीता का विवाह अपने बेटे रामय्या के साथ करा देता है।

उपर सीता और सुब्बम्मा अपने अपने घरों के भाग जाती हैं। दुखों से परेशान चंद्रय्या सुब्बय्या को वापस बुलाता है पर अपने प्रबंधक की महत्वाकांक्षा का शिकार हो कर दम तोड़ देता है। सुब्बम्मा कानूरू वंश को संभालने का जिम्मा लेती है परन्तु प्रबंधक सेरेगरी की वासना का शिकार हो कर जान दे देती है। रामय्या आत्महत्या कर लेता है। हूवय्या भी आत्महत्या की कोशिश करता है पर सीता द्वारा बचा लिया जाता है।



करुणाम/मलयालम/77 मिनट

निर्माता, निर्देशक : जयराज **पटकथा :** माहम्पु कुन्जुकुट्टन **छायाकार :** एम.जे. राधाकृष्णन **कला :** राधाकृष्णन **मंगलथ संपादक :** ए. श्रीकर प्रसाद **संगीतकार :** सनी स्टीफन **कलाकार :** ववाचन, एलियम्मा जोसेफ, बीजू मेनन

जीवन के अंतिम अध्याय की दशा पर तीखी टिप्पणी करती फिल्म करुणाम में बुजुर्गों की दशा का चित्रांकन है।

वृद्ध चाकोचन और चेचम्मा अपने पुत्र और उस के परिवार के विदेश से आने पर बहुत खुश है। घर को सजाया जाता है, बच्चों के लिए विशेषकर झूला लगाया जाता है पर अतिथि नहीं आते बल्कि न्यागरा घूमने चले जाते हैं। इतना ही नहीं, उनका पुत्र, उनसे पूछे बिना पारिवारिक घर को भी बेच देता है।

अपने प्रार्थनाघर से केवल एक क्रॉस को लेकर

वृद्ध माता-पिता एक वृद्धाश्रम में आ जाते हैं। पर वृद्धाश्रम के सख्त नियमों के बोझ तले चाकोकोचन दम तोड़ देता है। पुत्र चाकोचन के दाह संस्कार पर भी नहीं आता। दुखी मां सांत्वना की तलाश में एक मानसिक रूप से क्षीण बच्चों के घर में आश्रय लेती है।

श्वेत श्याम आवरणों से भरी इस कथा में contest का भरपूर प्रयोग किया गया है।

KARUNAM

(Pathos)
Malayalam/77 min

Producer-Director: Jayaraj
Screenplay: Madampu Kunju Kuttan
Camera: M J Radha Krishnan
Art: Radha Krishnan

Mangalath Editor: A Sreekar Prasad
Music: Sunny Stephen
Cast: Vavachan Eliyamma Joseph, Biju Menon

Karunam explores the tragic implications of a situation that is common in India now: of elders whose children are settled abroad.

Chacokochan and Chechamma prepare for a visit from their son and his family. A Mass is offered for the occasion, the house is spruced up, special food prepared and a swing put up for the children - all with the assistance of Pakkaran, a faithful servant. But the visitors proceed instead on a free trip to Niagara.

Worse: the parents learn that their children have sold off the family house and arranged an old age home for them. Bewildered and saddened, they leave the house where their children were born, taking with them only a Crucifix from the prayer room.

The home for the aged, with its rigid adherence to routine, strikes a chill in their hearts. Chackochan succumbs to it. His son does not come even for the funeral. Utterly bereft, the mother wanders away in search of consolation, which she finds in a home for mentally retarded children.

The story is told in a series of time shifts which move back and forth between the bright, hope filled period when the parents are awaiting the visit, and the painful loss of their home, their security, even their identity.



लाडो/हरयाणवी/135 मिनट

निर्माता : कुमुद चौधरी **निर्देशक :** अश्विनी चौधरी **पटकथा :** सुरिन्दर चौधरी, अश्विनी चौधरी **छायाकार :** अशोक बहल **संपादक :** अरविन्द त्यागी **संगीतकार :** ललित सेन **कलाकार :** आशुतोष राणा, अरन्धती, संजय सिंह

नवविवाहिता उर्मि का पति नौकरी के लिए कलकत्ता चला जाता है। परिवार में सास-ससुर नन्द प्रीति व देवर शमशीर हैं। सास-ससुर हमेशा जमीन के बारे में साबते रहते हैं, पति शहर में मकान लेने के लिए अधिक पैसा चाहिए, इसलिए पत्नी को साथ नहीं ले जाना चाहता। इनके सबसे बीच उर्मि की भावनाओं की कोई जगह न थी।

ऐसे में उर्मि इन्दर की ओर आकर्षित होती है। इन्दर ससुर के बड़े भाई का बेटा है जिनके पास काफी जमीन है तथा व गांव के सरपंच भी है।

एक रात जब घर में सास-ससुर नहीं थे। उर्मि

और इन्दर एक फिल्म देखने शहर जाते हैं। आधी रात को आने वाली वापसी की गाड़ी निकल जाती है। सुबह गांव पहुंचने पर, जब सारा गांव बहू को बंदूक रहा है, उर्मि को अपने और इन्दर के संबंध में बताना पड़ता है। इसे कोई स्वीकार नहीं करता। इन्दर भी पिता के दबाव में आकर चुप रहता है। उर्मि अपने पिता व भाई के सहयोग से पंचायत बुलवाती है, पंचायत पहले तो उर्मि को दोषी ठहराती है किंतु उर्मि दृढ़ता से अपने आत्मसम्मान के लिए लड़ती रहती है और अन्ततः सफल हो जाती है। फिल्म पुरुष प्रधान समाज में नारी की गरिमा एवं अधिकार के पक्ष को निरूपित करती है।

LAADO

Haryanvi/135 Min.

Producer: Kumud Chaudhary **Director:** Ashwini Chaudhary **Screenplay:** Surinder Chaudhary, Ashwini Chaudhary **Camera:** Ashok Behl **Art:** Chhail Paresh

Editor: Arvind Tyagi **Music:** Lalit Sen **Cast:** Ashutosh Rana, Arundhati, Sanjay Singh

Laado is the story of a village woman who is left behind, after marriage, to look after her in-laws while her husband Arvind returns to his job in Calcutta. Urmi's brother-in-law Shamsher is friends with Inder, the son of her father-in-law's elder brother, an influential landlord. One day the friends bring home a letter from Arvind and start teasing Urmi. Inder accidentally collides with Urmi and this leads him to think he is in love and wants to marry her. Urmi snubs him.

Arvind writes to say he will come home to fetch Urmi. This irks his father, who wants to acquire more farmland. Arvind wants to buy a plot for a factory in Rohtak. To fulfill both the wishes, Arvind must save, and so he leaves Urmi behind. Now her mother-in-law starts taunting Urmi, who is still without a child. Driven to the wall, Urmi finds solace in Inder's company.

One night when Urmi's in-laws go with Inder's parents to select a girl for him, the lovers slip off to see a film in Rohtak. They miss the midnight train they had planned to return by and reach the village only in the morning.

Confronted by her in-laws, Urmi reveals her relationship with Inder, only to be scoffed at. To settle matters, Urmi's brother calls a Panchayat, which declares Urmi guilty. Meanwhile Arvind arrives and has a discussion with Inder and Urmi. Following that, Inder owns up that he was the one Urmi had spent the night with. Arvind returns to Calcutta with Urmi.

PAROMITAR EK DIN

Bengali/133 Min.

Producer: Rajesh Agarwal **Director, Screenplay:** Aparna Sen **Camera:** Abhik Mukherjee **Art:** Nikhil Barua Sengupta **Editor:** Arghya Kamal Mitra **Music:** Jyotishka Das Gupta **Cast:** Soumitra Chatterjee, Aparna Sen, Rituparna Sengupta, Rajatabh Dutta, Sohini Halder

Young Paromita was married into a traditional Bengali family of North Calcutta. After marriage she discovers she does not have much in common with her husband Biresh. In fact his drinking habit and his ways seem unpalatable to her. However, she develops a special relationship with her mother-in-law Sanoka and the mentally retarded sister-in-law Khuku. Paromita's tragedy seems to multiply with the birth of her spastic son Bablu. Biresh finds this difficult to digest and becomes more irritable. Paromita and Sanoka come closer through this tragedy. The two develop a friendship that survives the death of Bablu, although it snaps the thin bond between Paromita and Biresh. He had already found solace in another woman, and she develops a liking for a filmmaker she had met at the Spastic Society. Sanoka is heart broken, not so much at the break up of her son's marriage as at the loss of Paromita. The friendship between the two has grown so strong that on her death bed, Sanoka finds peace only when the ex daughter-in-law returns to nurse her...



पारोमीतार एक दिन/बंगला/133 मिनट

निर्माता : राजेश अग्रवाल, **निर्देशक एवं पटकथा :** अपर्णा सेन **छायाकार :** अभिक मुखर्जी **कला :** निखिल बरूआ **सेनगुप्ता संपादक :** अर्घ्य कमल मित्रा **संगीतकार :** ज्योतिष्क दास गुप्ता **कलाकार :** सौमित्र चटर्जी, अपर्णा सेन, रीतुपर्णा सेनगुप्ता, रजताभ दत्ता, सोहिनी हलदार

युवती पारोमीता उत्तरीय कलकत्ता के एक पारम्परिक बंगला परिवार में ल्याही गई है। पीने की आदत के कारण पति बीरेश का पारोमीता के साथ कुछ तालमेल नहीं किंतु उसे अपनी सास सनोका तथा मानसिक रूप से विकृष्ट ननद खुकु के साथ विशेष लगाव हो जाता है। पारोमीता की त्रासदी और बढ़ जाती है जब वह एक स्पैस्टिक पुत्र को जन्म देती है। किंतु इस त्रासदी से सनोका और पारोमीता और निकट आ जाती हैं। उनकी यह मित्रता पुत्र बबलू की मृत्यु के बाद भी बनी रहती है, यद्यपि बीरेश और पारोमीता के बीच

संपर्क की अंतिम कड़ी भी टूट जाती है। बीरेश किसी अन्य स्त्री के पास जाने लगा है तथा पारोमीता भी एक फिल्मकार को पसंद करने लगी है। सनोका बिल्कुल टूट चुकी है। मरणासन्न स्थिति में उसे बहुत शांति मिलती है जब पारोमीता केवल सास की सेवा के लिए लौट आती है।



POKHI

(And The River Flows)
Assamese/90 Min.

Producer: Dolphin Communications **Director, Screenplay** Jahnu Barua **Camera:** P Rajar **Art:** Phatik Baruah **Editor:** Hue En Barua **Music:** Y S Moolky **Cast** Bishnu Khargoria, Bina Potongia Gargi

Pokhi is the story of an innocent orphan girl brought up by her aunt and uncle in a remote village in Assam. When they decide to shift to the city, they leave Pokhi behind in the care of a wealthy but childless elderly couple.

Pokhi gets quite attached to the old lady, a kindly soul. But the old man, a miserly shopkeeper who has made a pile through money lending, is quite annoyed at this new addition to his family. When his wife dies in an accident, the old man, Dayananda, takes the extraordinary stand that there is a curse upon Pokhi. However, the sheer beauty of the little girl's innocence and her protectiveness over him gradually win him over and also convinces the villagers that the cantankerous man has left his cynicism behind and turned a new leaf in life.

The Director's Note: Simplicity is something we generally tend to ignore. To me, the purpose of being intelligent, or acquiring knowledge is not to complicate things in life. We would do justice to our intelligence only when we could simplify the complexity of our life and also help others to do the same. Pokhi is about such wisdom.

पोखी/असमिया/90 मिनट

निर्माता : डॉलफिन कम्यूनिकेशन्स **निर्देशक एवं पटकथा :** जाहनु बरूआ **छायाकार :** पी. राजन **कला :** फटिक बरूआ **संपादक :** ह्यून बरूआ **संगीतकार :** वाई. एस. मूल्की **कलाकार :** विष्णु खरगोरिया, बीना पोतोंगिया, गार्गी

पोखी एक अबोध अनाथ लड़की है जिसका पालन पोषण उसके चाचा-चाची कर रहे हैं। शहर जाते हुए वे पोखी को गाँव के एक बुजुर्ग धनवान दम्पति के पास छोड़ जाते हैं। वृद्धा बहुत दयालू है और पोखी उनसे बहुत स्नेह करने लगी है किंतु उसका पति अपने परिवार में इस नये सदस्य को बिल्कुल पसंद नहीं करता। वह एक दुकानदार है। ब्याज पर पैसा देकर तथा भोलेभाले गाँव वालों को लूटकर उसने बहुत धन इकट्ठा कर लिया है। एक दुर्घटना में उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है और वृद्ध इसका जिम्मेदार लड़की की मनहूसियत को ठहराता है।

किंतु छोटी सी लड़की अपने धैर्य व भोलेपन से

उसका हृदयपरिवर्तन करने में सफल हो जाती है। यहाँ तक कि वे सब गाँववालों का, जो विद्रोह कर बैठे थे, रूख भी बदल देती है।

निर्देशक की टिप्पणी : सादगी को हम लोग अधिकतर भूल जाते हैं। केवल सादगी ही हमें आज के जीवन की क्लिष्टताओं से बचा सकती है।



Nandita Das, Lalu Alex, Praveena

Punaradhivaasam revolves around the fragility of human relationships and the constant struggle for inner peace.

Sudhakaran, bound to the city by his profession, leaves his ailing father in the village. The father sends letters weighted down with emotions. These evoke feelings of guilt and pain in Sudhakaran.

Savitri had nursed Sudhakaran's father. He compels Sudhakaran to marry Savitri, failing to perceive that she has her own aspirations. Seeking to be a wife and mother Savitri too moves to the city.

Sudhakaran is agonised. What had seemed a marriage of convenience for his father has turned out to be a burden for him. He seeks solace in his senior officer Shalini.

Shalini's life too has its own complexities. A deep sense of gratitude had prompted Shalini to become the live-in partner of Viswanathan, whose affluent household had supported her education. But their relationship is devoid of emotional attachment: they continue to live separate lives.

Shalini, with hazy memories of her dying father, sees a reflection in Sudhakaran's father. She seeks a pathway to peace by reaching out to and nursing the ailing man. As they set out for the village, Sudhakaran and Shalini's friendship flourishes. But even as they are drawn to each other, they find themselves being dragged deeper into the quagmire of insecurity. Even as Shalini struggles to stand her ground, Sudhakaran and Savitri create a world of their own.

पुनरधिवासम/मलयालम/100 मिनट

निर्माता : एन.पी. प्रकाश निर्देशक : वी.के. प्रकाश पटकथा : पी. बालचंद्रन छायाकार : रवि के. चंद्रन कला : साबु सिरिल संपादक : सुरेश अर्स संगीतकार : लुइ बैंक्स, शिवमणी कलाकार : मनोज जयन, नन्दिता दास, लालू अलैक्स, प्रवीणा

मध्यमवर्गीय परिवार में तनाव तथा मानवीय संबंधों की कहानी है पुनरधिवासम।

सुधाकरन अपने बीमार बूढ़े पिता को गांव में छोड़कर शहर में अपनी पत्नी सावित्री व पुत्री के साथ रहता है। पिता के भावुक पत्र सुधाकरण को एक अपराध बोध से भर देते हैं और वह पिता के पास गांव जाना चाहता है। यह बात पति पत्नी के बीच तनाव का कारण भी बनती है। तनावग्रस्त सुधाकरन अपनी बीस सालिनी के पास कुछ राहत महसूस करता है। शालिनी का जीवन भी कुछ सरल नहीं। वह विश्वनाथन के साथ रहती है जिसने रिसर्च

व नौकरी के लिए उसकी सहायता की थी। शालिनी और सुधाकरन गांव जाते हैं, जहाँ उस वृद्ध की सेवा कर शालिनी को बहुत शांति मिलती है। इधर सावित्री यह जानकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेती है। शालिनी और सुधाकरन एक दूसरे के ओर निकट आ जाते हैं किंतु फिर भी एक असुरक्षा की भावना दोनों को घेरे रहती है।

सुधाकरन, उसके पिता, सावित्री, शालिनी, विश्वनाथन सभी अपने धरातल की खोज में हैं।

PUNARADHIVAASAM

Malayalam/ 100 min

Producer: N P Prakash **Director:** VK Prakash **Screenplay:** P Balachandran **Camera:** Ravi K Chandran **Art:** Sabu Cyril **Editor:** Suresh Urs **Music:** Louis Banks, Sivamani **Cast:** Manoj Jayan,



संगमम/तमिल/165 मिनट

निर्माता : वी. नटराजन निर्देशक, पटकथा : सुरेश कृष्ण छायाकार : सर्वनन कला : कृष्णामूर्ति संपादक : सुरेश अर्स संगीतकार : ए.आर. रहमान कलाकार : रघुमन, विन्ध्या, मणिवन्नन, श्रीविद्या

संगमम कहानी है लोक और शास्त्रीय नृत्य धाराओं के अनुगार्थी दो परिवारों की - अवुदइपिल्लै और शिवशंकरन की। अवुदइपिल्लै की शैली लोक है, उस का पुत्र सेल्वम भी इसी शैली का नर्तक है। दोनों के पास धन नहीं है पर मान है। विशाखा पर्व में नृत्य प्रस्तुत करने आये दोनों परिवारों के बच्चों सेल्वम और शिवशंकरन की पुत्री अभिशर्मा में मित्रता हो जाती है।

सभी नृत्य समूह मिलकर कलाकारों के लिए एक मंच का निर्माण करना चाहते हैं। शिवशंकर द्वारा कहने पर कि उस को पुत्री का केवल एक कार्यक्रम इतना मंच बनाने के लिए पर्याप्त धन दे सकता है अवुदइपिल्लै इस शर्त को स्वीकार कर लेता है।

सेल्वम का ये नृत्य कार्यक्रम सफल होता देख कर शिवशंकर उस के पिता की हत्या करवा देता है। परंतु उस के बाद भी सेल्वम अपने पिता के मृत शरीर को सामने रख कर अभूतपूर्व नृत्य प्रदर्शन करता है।

शिवशंकर के पश्चाताप करने के बाद सेल्वम और अभिशर्मा का मिलन होता है।

SANGAMAM

Tamil/165 min

Producer: V Natarajan **Director,**
Screenplay: Suresh Krishna
Camera: Sarvanan **Art:**
Krishnamurthy **Editor:** Suresh
Urs **Music:** A R Rahman **Cast:**
Raghuman, Vindhya,
Manivannan, Srividya

Avudapillai's dance is based on a folk style. His son Selvam also fol-

lows the same style. They are popular and respected in the profession though their earning is meagre. They are invited to perform in a festival where Sivasankaran Moorthy is also to dance with daughter Abirami, a Bharatnatyam dancer. In the course of the festival Abirami and Selvam fall in love, despite the opposition of the wealthy Sivasankaran who wants a rich groom for his daughter.

Abirami finishes earlier in the festival. Nagaraj, the impresario, requests Sivasankaran to stay but he leaves, although Abirami stays on. Her love for Selvam grows when he saves her from rape by Nagaraj. However this turns Nagaraj into an enemy who makes common cause with Sivasankaran.

Meanwhile, the troupes decide to construct a hall. Sivasankaran brags he alone can fund the building. Avudapillai insists that everyone should donate. This is viewed as a challenge by Sivasankaran who asks Nagaraj to stop at any cost the fund raiser organised by Avudapillai and Selvam. Nagaraj kills Avudapillai when he goes to the temple. Selvam, reminded of his father's last wish, places his body on a chair and dances like one possessed. This wins the approval of everyone present, including Sivasankaran who now repents for his action. Consequently his cremation finds Selvam and Abirami paying their last homage to Avudapillai as a couple.



सरफरोश/हिन्दी/155 मिनट

निर्माता, निर्देशक एवं पटकथा : जॉन मैथ्यु
 मातन छायाकार : विकास सिवरामन कला :
 केस्टो मंडल संपादक : जेतु मंडल
 संगीतकार : जतिन-ललित कलाकार : आमीर
 खान, सोनाली बेंद्रे, नसीरुद्दीन शाह, मुकेश
 रूषि

वीरन को लूटपाट के लिए हथियार मुम्बई के
 अन्डरवर्ल्ड से मिलते हैं। चन्दनपुर में एक
 मैरिज पार्टी लूट ली जाती है - जाँच के लिए
 मुम्बई से टीम भेजी जाती है जिसका मुखिया
 अजय सिंह राठीड़ है। अजय एक इमानदार
 व साहसी पुलिस आफीसर है। अजय
 पाकिस्तानी गुलाफ़ाम हसन की गज़ल कन्सर्ट
 में जाता है जहाँ उसे अपने कालेज की पुरानी
 मित्र सीमा मिलती है। सीमा अजय का
 गुलाफ़ाम हसन से परिचय करवाती है और
 दोनों अच्छे मित्र बन जाते हैं।

गुलाफ़ाम हसन आजकल राजस्थान के सीमावर्ती

गाँव बाह्रिद में अपनी पुरानी हवेली में है।
 वास्तव में गुलाफ़ाम आइ.एस.आइ. का एजेंट
 है और एक स्थानीय डॉन मिर्ची सेठ भी उनके
 साथ है जो वीरन को हथियार भी भेजता है।
 गुलाफ़ाम ने अपने पाकिस्तानी अधिकारी को
 वचन दिया है कि वह ऐसे अनेक वीरन पैदा
 करेगा जो पूरे भारत में आतंक की लहर फैला
 देंगे। अजय अन्ततः मिर्ची सेठ, गुलाफ़ाम सबको
 घेरने में सफल हो जाता है बचाव का कोई
 रास्ता न देखते हुए गुलाफ़ाम हसन खुदकुशी
 कर लेता है।

SARFAROSH

Hindi/ 155 min

**Producer, Director, Screen-
 play:** John Mathew **Matthan Cam-
 era:** Vikas Sivaraman **Art:** Kesto
 Mondal **Editor:** Jethu Mondal
Music: Jatin-Lalit **Cast:** Aamir
 Khan, Sonali Bendre, Naseeruddin
 Shah, Mukesh Rishi

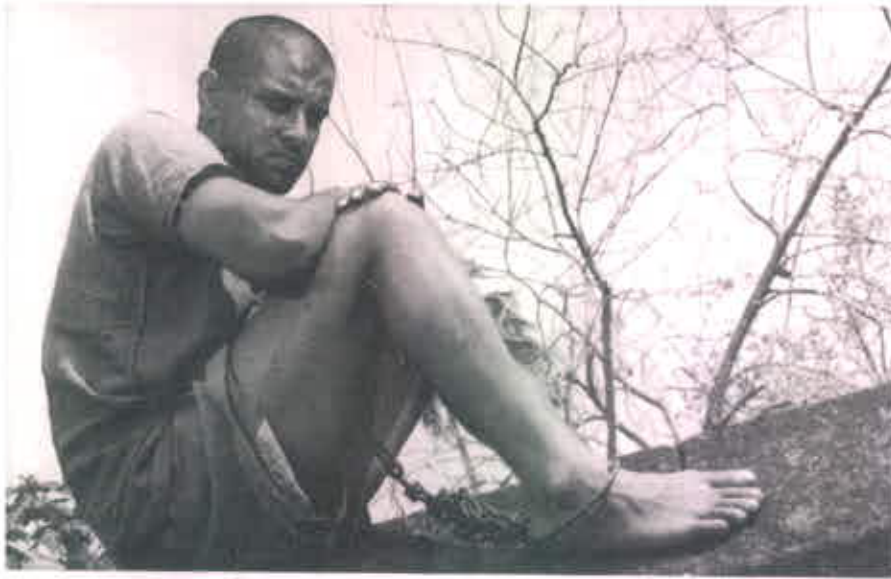
A tribal leader operating in the
 jungles of Telengana uses AK 47
 to kill and loot a marriage party in
 Maharashtra. The sophisticated
 weapons give away his links with
 the Mumbai underworld. A team
 from Mumbai's Crime Branch,
 headed by ACP Ajay Singh Rathod,
 is assigned to investigate.

One evening Ajay attends a concert
 by renowned Pakistani singer
 Gulfam Hassan. There he meets
 Seema, who was his classmate
 until he had to leave Delhi follow-
 ing a terrorist attack that killed his
 brother and maimed his father.
 The chance meeting rekindles
 Ajay's romance with Seema and
 also brings him in personal contact
 with Gulfam Hassan who sings ex-
 clusively for Seema's brother's
 music company in India.

Assisting Ajay in the case is a dare-
 devil Inspector Salim. But when an
 encounter with a drug smuggler is
 fouled up, Salim is accused on com-
 munal grounds and removed from
 the case. But Rathod knows of
 Salim's tremendous network of in-
 formers and requests him to con-
 tinue on the case.

Gulfam Hassan loves to live in
 Bahid, Rajasthan, though his an-
 cestral haveli in the border town is
 in disrepair. Gulfam actually is an
 ISI agent smuggles arms across the
 border. Local don Mirchi Seth then
 transports them across the land.

The investigations take on an edge
 as Salim helps Rathod track down
 evidence tying up the Mumbai drug
 mafia with Mirchi Seth. When a
 large consignment of arms arrives
 at Bahid, Rathod and his team raid
 Mirchi Seth's haveli and come face
 to face with Gulfam Hassan.



सेतु/तमिल/148 मिनट

निर्माता : ए. कंदासामी **निर्देशक, पटकथा :**
बाला छायाकार : आर. रत्नवेलु **कलाकार :**
विक्रम, शिवकुमार

चंचल युवा सेतु और ब्राह्मण लड़की अभिता के आकर्षण और प्रेम की ये कथा समाज की बुराईयों को उजागर करने का प्रयास करती है। प्रारंभ में दूरी रखने वाली अभिता सेतु द्वारा कई बार मदद करने पर उससे प्रेम करने लगती है।

पर अभिता की बहन को बचाने के कारण बने सेतु के कुछ शत्रु उसे घायल कर देते हैं। सर पर चोट के कारण सेतु को पागलखाने भेज दिया जाता है। होश आने पर वहाँ से भागने के प्रयास में एक बार फिर सेतु घायल हो जाता है।

इधर अभिता को समझ बुझा कर उसके विवाह की तैयारी की जाती है। सेतु फिर पागलखाने से भागकर विवाहस्थल पहुँचता है, पर अभिता का विवाह हो चुका है। परन्तु अभिता आत्महत्या कर

चुकी है। इन सब बातों से अनभिज्ञ सेतु टूटकर वापस अपने घर पागलखाने की तरफ मुड़ जाता है।

SETHU

Tamil/141 min

Producer: A Kandasamy **Director, Screenplay:** Bala **Camera:** R Ratnavelu **Music:** Cast: Vikram, Sivakumar

Chairman of the college students' union, Sethu is always up to some mischief. One day he decides to rag Abitha, a chaste Brahmin girl. But her sheer innocence spells a charm over him and he falls in love.

Abitha's elder sister is sent home by her husband who wants Rs 40,000 from his in-laws. The sister, being unable to bear the separation from her son, decides to put together the amount. Her desperation is exploited by some anti-social elements who lure her into a brothel near the agraharam. At the same time, a drunken visitor makes a grab for the sister of Sethu's friend. Sethu goes after the rowdy and comes across Abitha. Sethu escorts her home and also forces her husband to take her home without dowry.

Abitha's fiancee witnesses this and tells her Sethu deserves her love more than him. Abitha feels love blossoming in her heart. But the brothel owners gang up to give Sethu a brutal beating that leaves him a mental wreck. Sethu is admitted to an asylum. Here, chained and kept in unhygienic conditions, Sethu becomes half the man he was. When he regains his senses, he tries to escape and injures himself.

Meanwhile Abitha's father learns of her love for Sethu and begs his brother to convince Abitha to marry Ambi. When Sethu's family tells her all is lost, she loses hope.

On the day of her marriage, Sethu finally escapes from Pandimadam. He reaches the Agrahar to find Abitha, unable to forget him and unwilling to fight her father, has sought refuge in death.

Sethu feels cheated and decides to return to Pandimadam for life - a fate worse than death.



Director: Jagjit Singh, Sukhshinder Shinda **Cast:** Raj Babbar, Shatrughan Sinha, Juhi Chawla.

9 a.m. July 31, 1940. Uddham Singh alias Ram Mohammad Singh Azaad is executed in the Pentonville prison of London. He was charged with the murder of Sir Michael O'Dwyer, the Lt Governor of Punjab at the time of Jallianwala Bagh massacre who had hatched the conspiracy to 'teach a lesson to the revolting Indians.' But who was this selfless martyr?

December 26, 1899. A boy is born to Bibi Harnam Kaur and Sardar Tehel Singh of Patiala. The child, named Sher Singh at birth, lost his parents before he was seven and found shelter in Khalsa Dewan's orphanage near Amritsar, where he was baptised into Sikh brotherhood and given the name of Ude Singh. Along with theology he learnt carpentry, blacksmith and music. Yet he would have remained a non-entity, but for April 13, 1919.

On this bloody Baisakhi, Ude was one of the volunteers who had gathered in Jallianwala Bagh. He witnessed the butchering of 2000 Indians by the British army and also cremated the victims. This made him politically conscious. He accepted the methodology of the Ghadar Party, for which he worked in India and toured USA and Europe. On his return to India in 1927, he was arrested for illegal possession of arms and jailed for five years. After his release he went to England - to write the last and most glorious chapter of his life.

शहीद ऊधम सिंह/पंजाबी/165 मिनट
निर्माता : इकबाल हिल्लो **निर्देशक :** चित्रार्थ पटकथा : अतुल तिवारी **छायाकार :** राजेश जोशी **कला :** मनीश सप्यल **संपादक :** के. रविकुमार, सचिन अदुरकर **संगीतकार :** जगजीत सिंह, सुखशिन्दर सिंह **कलाकार :** राजबब्बर, शत्रुघ्न सिन्हा, जुही चावला, गुरदास मान

और उसे उदे सिंह नाम दिया गया। सरल हृदय उदे सिंह एक साधारण इंसान ही रहता किंतु जलियांवाला हत्याकांड ने उसे झड़कोर दिया। वह गदर पार्टी में शामिल हुआ, और पार्टी के लिए देश विदेश में काम किया। 1927 उसे जेल हो गई वहां भी वह कैदियों की सुविधाओं और अधिकारों के लिए लड़ता रहा। जेल से रिहा होने के पश्चात उदे सिंह अपने जीवन के स्वर्णिम पृष्ठ को लिखने के लिए इंग्लैंड चला गया।

SHAHEED UDDHAM SINGH

Alias Ram Mohammad Singh Azad
 Punjabi/ 165 min

Producer: Iqbal Dhillon **Director:** Chitraarth **Screenplay:** Atul Tewari **Camera:** Rajesh Joshi **Art:** Munish Suppal **Editor:** K Ravikumar, Sachin Adurkar **Mu-**

31 जुलाई 1940, प्रातः 9.00 बजे ऊधम सिंह उर्फ राम मोहम्मद सिंह आजाद को लंदन की पेन्टोविन जेल में फांसी दी जा रही है। वह सर माइकल ओ डायर को हत्या का दोषी है, जिसने जलियांवाला बाग हत्याकांड का षडयंत्र रचा था। परंतु यह शहीद कौन था?

बालक शेर सिंह ने माता-पिता का बचपन में ही देहान्त हो जाने के पश्चात बड़े भाई साधु सिंह के साथ अमृतसर के खालसा दीवान के अनाथालय में शरण ली। जब नियति ने बड़े भाई को भी छीन लिया तो शेर सिंह ने सिख धर्म धारण कर लिया



SHOOL

Hindi/ 140 min

Producer: Nitin Manmohan, Ram Gopal Varma **Director:** E Niwas
Screenplay: Anurag Kashyap
Camera: Hari Nair **Art:** Krishna
Editor: Bandi Banodaya **Music:** Shankar, Eshaan **Cast:** Manoj Bajpai, Raveena Tandon, Sayaji Shinde

In a small town in Bihar lives a man called Bachhu Yadav. The self styled anarchist has no remorse, no human sympathy: he lives life only to exercise power and please himself.

Into this town comes Samar Pratap Singh, a police inspector whose rights and wrongs are clearly defined. He is stubborn and rigid to the point of being harmful. His wife Manjari has to bear the brunt of her husband's wrath.

Problem starts brewing when Samar arrests some men for creating a riot. The men were Bachhu Yadav loyalists. The MLA cannot stomach the fact that an inspector, dares to touch his men. Yadav thinks Samar can be handled in a jiffy. But Samar blows up the whole issue. This hurts Bachhu Yadav's ego, and he uses all his connections to suspend Samar.

Once a hero, now a nobody, Samar becomes the butt of jokes and snide remarks. He can take it all up to a point, and then he snaps. He goes after them with a vengeance - but the process destroys his career, his family.. When his life reaches a dead end, it is time to go after the man who destroyed a man simply for doing an honest job.

शूल/हिन्दी/140 मिनट

निर्माता : नितिन मनमोहन, रामगोपाल वर्मा
निर्देशक : ई. निवास **पटकथा :** अनुराग कश्यप
छायाकार : हरि नायर **कला :** कृष्णा
संपादक : बंदी भानोदय **संगीतकार :** शंकर तथा ईशान **कलाकार :** मनोज बाजपेयी, रवीना टंडन, सायाजी शिंदे

बिहार के एक छोटे से कस्बे मणिहारी में एक भ्रष्ट नेता बच्चू यादव का राज है। यहाँ एक ईमानदार पुलिस अधिकारी समर प्रताप सिंह की नियुक्ति होती है। समर केवल कानून की भाषा जानता है और बहुत जिद्दी है। समर बच्चू यादव के आदमियों को दंगा करने के लिए गिरफ्तार कर लेता है। बच्चू से यह सहन नहीं होता और वह समर को निलंबित करवाने के लिए कई हथकंडे अपनाता है और अन्ततः सफल हो जाता है। समर लोगों की हँसी का पात्र बन जाता है। एक सीमा एक सहन करने के बाद समर अपने पर नियंत्रण नहीं रख

पाता और उसका प्रतिशोध शुरू हो जाता है - इसमें उसका परिवार नष्ट हो जाता है। हताश समर के पास बच्चू को समाप्त करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रह जाता।



उत्तरा/बंगला/99 मिनट

निर्माता, निर्देशक, पटकथा : बुद्धदेव दासगुप्ता
छायाकार : असिम बोस **कला :** अशोक बोस
संपादक : रवि रंजन मैत्रा **संगीतकार :** बिस्वदेव दासगुप्ता **कला :** तपस पाल, जया सील, शंकर चक्रवर्ती

बंगाल के एक गांव में एक छोटा सा स्टेशन है जहां दिन में केवल दो बार गाड़ी आती है। सिगनलमैन बलराम और गेटमैन निमई अन्तरंग मित्र, कुश्ती में अपना पूरा समय बिताते हैं। उनके गांव में अधिकतर आदिवासी रहते हैं। एक इसाई विधुर डाक्टर गांव वालों का इलाज करता है, उसने एक अनाथ मैथ्यू को अपना रखा है। बलराम का विवाह हो जाता है। निमई दो मित्रों के बीच किसी तीसरे को सहन नहीं कर पाता। कुश्ती का खेल गंभीर युद्ध बन जाता है। कुछ असामाजिक तत्व भी गांव में आ चुके हैं जो पादरी को मारना चाहते हैं। धीरे धीरे गांव का सौहार्दभरा वातावरण घृणा की आग में जलने लगता है। निमई और

बलराम एक दूसरे को खत्म करना चाहते हैं। गुंडों ने पादरी को मार दिया है और उत्तरा का मान हनन किया है।

किंतु फिर भी आशा की एक किरण है - मुर्खटा पहन कर नृत्य करने वालों का एक गुप है, जिनके गीतों में मानवता का संदेश है, ने मैथ्यू को अपना लिया है।

UTTARA

(The Wrestlers)
 Bengali/99 Min.

Producer, Director, Screenplay: Buddhadev Dasgupta **Camera:** Asim Bose **Art:** Asoke Bose **Editor:** Ravi Ranjan Maitra **Music:** Biswadeb Dasgupta **Cast:** Tapash Paul, Jaya Seal, Shankar Chakravarty

Living off a lonely flag station in rural Bengal, Balaram and Nimai occupy their endless hours in their

favourite pursuit - wrestling. Balaram is the signalman and Nimai the gateman at this desolate station where a train passes through twice a day. This rustic locality, populated by tribals has a Christian pastor serving as a minister to his small flock of converts as also a medical practitioner. The only family of the widower is an adopted tribal boy, Mathew.

A party of dwarfs passes through the nearby forest every morning, setting out from the colony on the other side of the hill to earn their daily bread. One of these is a train guard, an object of admiration for Nimai and Balaram, who dream of being promoted to that position. Also wandering through the forest is a troupe of masked dancers, seemingly self sufficient and content in their own art.

Cracks start to appear in this serene world when Balaram's aunt insists on his getting married. The happy occasion of his bringing home his bride Uttara fractures the hitherto sublime relationship with Nimai. Unwittingly, their wrestling takes on an uncharacteristic seriousness. Hatred also enters in the form of extremists who come to the village with an appalling mission: to exterminate the pastor.

Gradually but relentlessly, the small world of love, friendship and trust falls prey to intolerance. While Balaram and Nimai set out obsessively to destroy one another, the extremists incinerate the pastor in his church, brutally rape Uttara and slaughter the guard.

And yet there is hope. Mathew, rescued from the killers by the masked dancers, again finds someone to love and care for him.



Namboothiri, the lord of the manor. Kunhikuttan suspects he is Namboothiri's son, but Baghi refuses to reveal his father's identity.

After an arduous apprenticeship in Kathakali, Kunhikuttan's talent gains wide recognition. But the pain of not knowing his father is compounded by an unhappy marriage forced upon him by Namboothiri. This pain becomes the enigmatic power of his performances that charm the regent and his niece, the beautiful Subhadra who sees Kunhikuttan perform as the legendary Arjuna. Unable to distinguish between reality and fiction, Subhadra is consumed by her passion for the hero of the Mahabharata and falls in love, not with Kunhikuttan but with the persona he embodies on stage.

Kunhikuttan is deeply distressed by this, more so when Subhadra bears his child but refuses to let him see his son. A son deprived of a father, he is now a father deprived of a son. Devastated Kunhikuttan disappears after leaving a letter asking Subhadra to spare her son the pain of a lifelong torment by telling him the truth about his father.

After the film was completed, it struck director Karun that Piravi, Swaham and Vanaprastham form a trilogy around the relationship between father and son. "It may have a link with the fact that my own father was a distant man, unable to express his emotions."

वानप्रस्थम/मलयालम/79 मिनट

निर्माता : वी. मोहनलाल, पियरे असुलिन
निर्देशक : पाजी एन. करुण पटकथा : रघुनाथ पलेरी
छायाकार : रेनातो बेरता, संतोष सिवन
संपादक : ए. श्रीकर प्रसाद संगीतकार : जाकिर हुसैन
कलाकार : मोहनलाल, सुहासिनी, अर्चना

10 वर्षीय कथकली नर्तक कुन्हीकुट्टन अपने पिता की पहचान से वंचित हैं और उसका यह दुःख नम्बूदिरी द्वारा उस पर थोपी गई शादी से और बढ़ जाता है। यह दर्द पुत्री के जखम के बाद भी कम नहीं होता, जो उसकी कला की प्रेरणा है। भतीजी सुभद्रा कुन्हीकुट्टन को अर्जुन के रूप में देखकर बहुत प्रभावित हैं तथा उस पर मोहित हो जाती हैं।

कुन्हीकुट्टन इस संबंध से व्यथित हो उठता है जब सुभद्रा उसके पुत्र को जन्म तो देती है, लेकिन कुन्हीकुट्टन को उसे दिखाने से इन्कार कर देती है। कुन्हीकुट्टन को बहुत आघात

पहुँचाता है। पहले पुत्र पिता से वंचित और अब पिता पुत्र से वंचित। कुन्हीकुट्टन हमेशा के चला जाता है किंतु सुभद्रा के नाम एक पत्र छोड़ जाता है कि वह उसके पुत्र को पिता के बारे में सच्चाई अवश्य बताये ताकि उसे वह पीड़ा न झेलनी पड़े जो कुन्हीकुट्टन ने सही।

VAANAPRASTHAM

Malayalam/ 79 min

Producer: V Mohanlal, Pierre Assouline **Director:** Shaji N Karun **Screenplay:** Raghunath Palleri **Camera:** Renato Berta, Santosh Sivan **Art:** Prakash Moorthy **Editor:** A Sreekar Prasad **Music:** Zakir Husain **Cast:** Mohanlal, Suhasini, Archana

Kunhikuttan's mother, the low caste Baghi, was a servant of



Bharathi Screenplay: J Pallassery **Camera:** Azhagappan **Editor:** G Murali **Music:** Mohan Sithara **Cast:** Kalabhavan Mani, Praveena, Kaveri, Gopi

Ramu, a sightless man with a divine voice, has two bright spots in his life: his loving sister Vasanthy and his beloved Lakshmi.

Vasanthy, highly attached to her brother, is happy to know that the childhood friendship of Ramu and Lakshmi has blossomed into love. But her other brother Chandru is a troublemaker who snatches away even the little Ramu brings home through singing at a tea stall. Finding it difficult to make ends meet, Ramu's mother Bhavani Amma starts working as a maid servant to the local MP, Thomas Chacko.

Vinod, Chacko's friend from Delhi, happens to see Vasanthy and Lakshmi. Their virgin appeal fascinates him. Chacko, in his eagerness to please Vinod, plans a trap. Pretending to help Ramu regain his sight, he sends him to a nearby specialist and tactfully asks Bhavani Amma to send Vasanthy and Lakshmi to his bungalow for a photo session for marriage proposals. When Vasanthy and Lakshmi reach the bungalow, they are mercilessly molested. Unable to stand the shock, Vasanthy commits suicide. The entire village gathers for her funeral. Chacko also joins them. But when he tries to console the grief stricken Ramu, he strangles Chacko to death.

वासन्तियुम लक्ष्मीयुम पिनै ज्ञानुम्
निर्माता : कबीर, लतीफ, विन्ध्यान निर्देशक :
विनयन भारती पटकथा : जे. पल्लासरी
छायाकार : अझगप्पन संपादक : जी. मुरली
संगीतकार : मोहन सितारा कलाकार :
कलाभवन मणि, प्रवीणा, कावेरी, गोपी, जनार्धन

चाको का शिकार हुई वसन्ती आत्म हत्या कर लेती है।

सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए वसन्ती के दाह संस्कार में आने वाले चाको की रामू गला दबा कर हत्या कर देता है।

निर्देशक के इस फिल्म में मानवीय प्रेम और करुणा के साथ साथ जीवन के कठोर और कड़वे सत्यों का दक्ष चित्रांकन किया है।

VASANTHIYUM LAKSHMIYUM PINNE NJAANUM

(Vasanthi, Lakshmi and Myself)
Malayalam/130 min

Producer: Kabeer, Latheef,
Vindhyan **Director:** Vinayan

मधुर स्वर वाले अंधे रामू के जीवन में दो प्रकाश बिंदु हैं। उसकी बहन वसन्ती और प्रेमिका लक्ष्मी। तीनों की सुखद जीवन यात्रा तब भंग होगी है जब असामाजिक तत्व उनके सपने छीन लेते हैं।

रामू की मां भवानी अम्मा एक नेता चाको के घर नौकरानी का काम करती है। तभी चाको का एक मित्र विनोद वसन्ती और लक्ष्मी को देख कर उन पर मोहित होता है। रामू का इलाज कराने क बहाने चाको उसे एक डाक्टर के पास भेज देता है। इसी प्रकार भवानी अम्मा द्वारा बहाने से चाको लक्ष्मी और वसन्ती को अपने बंगले पर बुला भेजता है।

कथासार : **Synopses :**
गैर-कथाचित्र **Non-Feature Films**



एण्ड द बैम्बू ब्लूम्स/अंग्रेजी/21 मिनट

निर्माता : फ़िल्मज डिवीजन **निर्देशक :** जोशी
जोसफ छायाकार : के.एस. श्रीधर **आलेखक :**
टी.सी. मंजुनाथ, रामटेके संपादक : भुपेन्द्र म्हात्रे,
सदानंद राणे संगीतकार : दीनेश प्रभाकर

यह फ़िल्म जनजातियों के जीवन में बांस के महत्व को दर्शाती है। मणिपुर एवं मिज़ोरम की जनजातियाँ किस प्रकार बांस की खेती से अपने पर्यावरण एवं आर्थिक संतुलन को बनाए रखती हैं।

AND THE BAMBOO BLOOMS

English/ 21 Min.

Producer: Films Divisions **Director:** Joshy Joseph **Camera:** K S Sridhar **Audiography:** T C Manjunath, Ramteke **Editor:** Bhupendra Mhatre, Sadanand Rane **Music:** Dinesh Prabhakar

The film studies the kinship between the tribal and the bamboo as a relationship from birth to death. It further investigates the flowering of the bamboo in Manipur and Mizoram in its environmental, economic and political context.



आतंक का अंधकार/हिन्दी/

17 मिनट

निर्माता : फिल्मनट डिवीजन निर्देशक : राजीव कुमार
छायाकार : ओम चंद आलेखक : एस.के. प्रुष्टि संपादक : पी. एलप्पन

बिहार में पिछले बीस वर्षों से हजारों निर्दोष व्यक्ति महिलाएँ व बच्चे जातिवाद के दंगों में मारे जा रहे हैं। वे इसलिए मारे गये क्योंकि उन्हें मारा जाना सरल था। यह फ़िल्म ऐसे लोगों के त्रासदी की कहानी है।

ATANKA KA ANDHAKAR

Hindi/ 17 Min.

Producer: Films Division **Director:** Rajiv Kumar **Camera:** Om Chand **Audiography:** S K Prusty **Editor:** P Elappan

In Central Bihar, over last 20 years, more than thousand men, women an children have lost their lives in brutal caste massacres. Most of these innocent and unsuspecting villagers were killed only because it was easy to kill them. This film captures their tragic tale.



ब्लाइन्ड फोल्डेड/तमिल/22 मिनट

निर्माता : ए. श्रीराम निर्देशक एवं छायाकार : एस. श्रीराम आलेखक : एच. श्रीधर
संपादक : ए. श्रीकर प्रसाद संगीतकार : शरत

भारत के स्लम में रहने वाली अबोध बालिकाओं का प्रतिनिधित्व करती है सेल्वी। उसकी माँ एक घरेलू नौकरानी है और पिता धोबी, जो अपना समय और धन शराब में व्यर्थ कर देता है। सेल्वी अपने स्कूल को मेधावी छात्राओं में से है और स्कूल से कभी अनुपस्थित नहीं होती। अध्यापिका अमुधा भी उसे बहुत स्नेह करती है और अच्छे नम्बर आने पर सेल्वी को पुरस्कृत भी करती है। सेल्वी जायन्ट व्हील झूले के प्रति बहुत आकर्षित है लेकिन उसके पास झूलने के लिए दस रुपये नहीं है।

शाम को सेल्वी के पिता पत्नी को घर खर्च के लिए दस रुपये देते हैं। अगले दिन सेल्वी

को गणित में अच्छे अंक लाने के लिए अमुधा से पुरस्कार में मिलता है जायन्ट व्हील में झूलने का अवसर तथा एक खिलौना। घर आते ही सेल्वी को यह खुशी काझूर हो जाती है वह अपने माता-पिता को दस का नोट खोजने के लिए झगड़ते हुए देखती है। सेल्वी के हाथ में खिलौना दिखकर वे दोनों यही समझते हैं नोट सेल्वी ने ही चुराया है। दुखी सेल्वी अमुधा के पास लग जाती है। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।

BLIND FOLDED

Tamil/ 22 Min.

Producer: A Sriram **Director,**
Camera: S Sriram **Audiography:**
H Sridhar Editor: A Sreekar
Prasad Music: Sharreth

Selvi is the archetype of the millions of underprivileged girls in the

slums of India. Her mother works as a domestic help while her washerman father fritters away his time in drinking.

Selvi is among the top students in the neighbourhood school she never misses going to, in the face of opposition from her mother who views it as a waste of time. Despite the privations of poverty Selvi dreams of becoming a bureaucrat. School is also special because of her friend Amudha and an affectionate teacher who makes scoring high in tests a precious experience.

One day the girls are fascinated by the appearance of a giant wheel. But they have to admire it from a distance, since they cannot afford the ten-rupee entrance fee.

Back home, Selvi's father offers a ten-rupee note to her mother for household expenses. She contemptuously tosses it aside. Selvi notices the note and expresses her desire for a ride on the giant wheel. It invites drubbing from her mother.

The next day at school Selvi comes first in the maths test. Wishing to give her a prize, the teacher takes the girl and her friend out, and learning of their heart's desire. She gives them a ride on the giant wheel and buys them a toy each.

But the joy of the most memorable day in Selvi's life is short lived. She returns home to find her parents locked in a quarrel since the ten-rupee note is found missing. Seeing the toy in Selvi's hand, they conclude that she has stolen it. Her protests rent the air, but who cares to listen? Selvi runs to Amudha's place.. Who else can vouch for her innocence? But it is too late...



दैवंगल पडियिरंगुम्बोल/मलयालम/
47 मिनट
निर्माता, निर्देशक : प्रदीप कुमार छायाकार :
के.वी. मोहनन् आलेखक : कृष्णन उष्णी
संपादक : नारायणन् संगीतकार : देवीसार

18वीं शताब्दी में अंग्रेजों के राज से पूर्व वायनाड घने सदा हरे जंगलों से ढका था। शहरीकरण के साथ वहाँ की आदिवासी जनजातियों की जीवनशैली तथा जीवनरक्षक पर्यावरण का ह्रास होने लगा।

उनकी समझ में भूमि का कोई स्वामी नहीं था। वे यह जानते थे धरती उनकी माँ है। शोषणकारियों ने इन जनजातियों का सब कुछ छीन लिया - उनकी धरती, उनकी संस्कृति, उनका सामाजिक जीवन यहाँ तक कि उनके भगवान।

लगातार कटते जंगलों के कारण आदिवासियों की आजीविका के स्रोत - बांस, शहद, जंगलों का उत्पाद फल फूल इत्यादि नष्ट होने लगे। ट्रावनकोर

से आकर बसने वाले लोगों ने अपना धर्म, जीवनशैली और संस्कृति उन पर थोप कर उनका जीवन और भी कठिन बना दिया।

गरिमा का स्थान बुगईयों ने ले लिया है और देवता प्रस्थान कर चुके हैं।

DEIVANGAL
PADIYIRANGUMBOL
 (When Gods Depart)
 Malayalam/ 47 Min.

Producer, Director: Pradeep Kumar
Camera: K V Mohanan
Audiographer: Krishnan Unni
Editor: Narayanan
Music: Devissaro

Wayanad, a mountainous region on the Western Ghats, is a part of the Coorg Nilgiri plateau. Before the arrival of the early settler farmers from Kerala and Mysore, Wayanad

was covered by dense evergreen forests. And their original inhabitants, the Paniya, Mullakuramas, Kattunaikas, Kurichyas and Adiyas, moved about in a sylvan landscape of prehistoric beauty. When urbanity made inroads into the ranges, the tribals were dislodged from their their life-sustaining environs and time honoured lifestyle.

As the song of a Paniya chieftain unfolds the myth, the tribal ancestors were enslaved by the landlords and forced to work on farms. Till that time, the tribals had no idea that land could belong to anybody. All they knew was they belonged to the earth! But, before the ruthless ways of the fortune hunters, the tribes lost their land, social life, culture, even their gods..

The situation was aggravated by the arrival of settlers from Travancore in the 1920s. They imposed their social, cultural, economic and religious values upon the tribals. The last straw came in the form of shortsighted developmental schemes that have compounded the depletion of the life sustaining eco system while the rehabilitation schemes only helped the middlemen to corner the funds.

The gods of the outside world have also made their way into the tribal land through evangelism and exploitation. The new faiths have stamped these ancient groups as 'primitive' or 'savage.' This induced a sense of sin, which was hitherto unknown to the tribal psyche. Gradually, in the name of homogenisation, the tribal deities have receded into the primordial collective memory.



दुई पाटन के बीच में/हिन्दी/116 मिनट
निर्माता, निर्देशक : अरविन्द सिन्हा छायाकार :
असीम बोस आलेखक : शुभब्रत हालदार
संपादक : सुमीत घोष

तथाकथित विकास ने बिहार के लाखों लोगों की आजीविका के स्रोत को नष्ट कर दिया है।

मानवजनित बाढ़ तथा मानवाधिकारों के हनन से राज्य बुरी तरह आहत है। निर्दोष गरीब लोग शक्तिशाली राजनीतिज्ञों, अफसरों और ठेकेदारों के चुंगल में फंसे हैं। पर्यावरण का निरन्तर हास हो रहा है। लोग अपने पैतृक घरों को छोड़ कर अन्य स्थानों पर जाने के लिए मजबूर हो रहे हैं। वे श्रमिकों का कार्य करते हैं और उनके बच्चे भी बालश्रमिक बन जाते हैं।

यहां प्रत्येक वर्ष बाढ़ आती है। यह बाढ़ को नियंत्रण करने के लिए बने तटबन्धों के कारण आती है। बाढ़ से सुरक्षा के लिए बने तटबन्धों में पानी इकट्ठा है और लाखों एकड़ भूमि को उपजाऊ

शक्ति नष्ट हो चुकी है।

झूठे विकास और राजनीति के दो पाटों में गरीब पिस रहे हैं।

DUI PAATAN KE BEECH MEIN

(Between the Devil and the Deep River)
 Hindi/ 116 Min.

Producer, Director: Arvind Sinha
Camera: Asim Bose
Audiographer: Suvabrata Halder
Editor: Sumit Ghosh

This sad and angry film critiques the development models that have destroyed the livelihood of tens of millions of people in Bihar.

The state has been devastated by both, manmade floods and gross violation of human rights. The helpless poor are being trampled upon by the all-powerful politician-bureaucrat-engineer-contractor nexus. The environment has been ravished and a once-proud people are forced to leave their ancestral home and migrate to other parts of India. While they seek work as labourers, their children become child labourers.

They are left little choice by the floods that lash them every year. These are caused by the very embankments created to control floods! The land outside the mud embankments, which it is supposed to protect, is now waterlogged since the small rivers and streams that once flowed into the river no longer do so. Millions of acres of once-fertile farmland lies waterlogged. What is the way out, except the exodus?

The autobiographical flavour of the film comes from the fact that the filmmaker himself comes from Bihar, a neglected and backward state even by Indian standards. Why is no one bothered, wonders the filmmaker who views the complex situation in a historical perspective and also places it in the present political context.



फायर/अंग्रेजी-हिन्दी/23 मिनट

निर्माता : एफ टी आई आई निर्देशक : विनोद सुब्रमण्यन
छायाकार : इन्द्रनील आलेखक : सुबी थॉमस
संपादक : समीर अहमद

सृष्टि के आरंभ में रचयिता ने धरती और आकाश बनाये। धरती का कोई आकार न था, खाली और अधियारी। ईश्वर की चेतन जल के ऊपर फड़फड़ा रही था। ईश्वर ने कहा - यहाँ प्रकाश होना चाहिए - और अग्नि का जन्म हुआ।

तब से लेकर मानव ने अग्नि का कई रूपों में प्रयोग किया। पकाने से लेकर अपने जैसे दूसरे मानव को जलाने तक। अग्नि स्वयं में एक शक्ति है, लेकिन स्वामित्व किसका है ?

FIRE

English-Hindi/ 23 Min.

Producer: FTII **Director:** Vinod Subramanian **Camera:** Indranil **Audiographer:** Subi Thomas **Editor:** Sameer Ahmed

In the beginning, God created the heavens and the earth. Now the earth was formless and empty, darkness was over the surface of the deep, and the spirit of God was hovering over the water. And God said, 'Let there be light....' Thus was born fire.

Ever since humankind has used fire in many ways, ranging from frying its meat to frying its own kind. Yet, which is the master and which the servant?



कलामण्डलम गोपी /मलयालम/

43 मिनट

निर्माता : फ़िल्मजट्ट डिवीजन निर्देशक : अडूर गोपालकृष्णन छायाकार : रवि वर्मा आलेखक : हरि कुमार संपादक : एम. मणी

कलामण्डलम गोपी कथकली नृत्य की महान हस्तौ है। गोपी सुदूरको इलाकों का भ्रमण किया है। उनका बचपन गरीबी और कठिनाइयों में बीता। दो नम्बूदिरी परिवारों कथचिर और कूलूर मन के प्रयत्नों से गोपी को कथकली की प्रेरणा मिली। केरल कलामण्डलम संस्थान में यह कला पल्लवित हुई।

यह फिल्म कलाकार गोपी का आत्मकथ्य है। दर्शक को उनके जीवन और कलाशैली की अद्भुत झलक मिलती है। गोपी कथकली की सभी विधाओं में निपुण है - चाहे वह पच हो या कथी और करी। किंतु पच उनकी विशेषता है। गोपी अन्य महान कलाकारों की तरह नृत्य करते हुए ही मृत्यु को गले लगाना चाहते हैं।

KALAMANDALAM GOPI

Malayalam/ 43 Min.

Producer: Films Division **Director:** Adoor Gopalakrishnan **Camera:** Ravi Varma **Audiographer:** Hari Kumar **Editor:** M Mani

There are few who would disagree that Kalamandalam Gopi is one of the all time greats of Kathakali. And today, the consummate artiste is at the zenith of his career.

It is a long distance Gopi has travelled. Like many a master, he had a childhood marked by poverty and travails. It was the benevolence of two Namboodiri families, Kathachira and Koodalloor Mana, that initiated him into Kathakali. It was shaped into perfection at

Kerala Kalamandalam, the premier institution for the art founded by the legendary poet Vallathal.

The film presents Gopi in a first person narrative. The viewer gets a rare glimpse into his life and art as the camera watches the artiste transform himself into diverse and glittering personalities. Gopi is adept at playing all types of roles, be it a pacha, kathi or kari. But connoisseurs prefer to see him portraying pacha - that is, heroic and noble - characters. Keeping this in view, the film concentrates on such portrayals.

Gopi, like all great artists, is no longer distinct from his art. And like any true artiste, he wants to die performing on the stage, with his costume and his make-up still on.



कोयहातिर धुलिया/असमिया/

47 मिनट

निर्माता : सत्यव्रत कलिता **निर्देशक :** हेमन्त दास
छायाकार : मृणाल कान्ति दास **आलेखक :** जतीन सरमन्
संपादक : ए श्रीकर प्रसाद **संगीतकार :** प्रभात सर्मा

असम के कामरूप जिले में इस अदभुत कला की प्रतिध्वनि सुनाई देती रहती है।

104 वर्षीय वयोवृद्ध कलाकार मोहन भावरिया ने इस लोक कला को राष्ट्रीय पहचान दिलायी। इस कला में गायन, नृत्य सकर्स तथा एक विशेष लोक कला चोंग का अद्भुत समावेश है। चोंग कलाकार कला के अतिरिक्त श्री श्रोताओं को सामाजिक संदेश भी रहते हैं।

मोहन भावरिया ने इस कला का पुनरुद्धार किया है। उन्होंने स्वयं इस कला को कृही दास तथा मूहीदास जैसे वरिष्ठ कलाकारों से सीखा।

KOIHATIR DHULIA

Assamese/ 47 Min.

Producer: Satyabrata Kalita **Director:** Hemanta Das **Camera:** Mrinal Kanti Das **Audiographer:** Jatin Sarman **Editor:** A Sreekar Prasad **Music:** Prabhat Sarma

Koihatir Dhulia, training the lenses on a unique folk art form, resonates with the drum beat of the drummers of Kamrup district of Assam.

The film gets its name from the legendary troupe of Mohan Chandra Barman, popularly known as Mohan Bhawria. Now over 104 years old, the maestro brought national recognition to the folk art which combines songs, dance, cir-

cus and a typical folk theatre known as Chong. The narrative touches upon various themes, including contemporary issues, and in the Chong the performers thrive on making social comments for the benefit of their audience.

Mohan Bhawria is responsible for the revival of the Kamrupiya Dhulia, saving it from oblivion in the early years of his life. He himself learnt various techniques of the Kamrupiya Dhulia, imbibing the secrets of senior performers such as Kuhu Das and Muhi Das. The troupe is not going through the best of times, but it still survives.



मल्लिका साराभाई/अंग्रेजी/31 मिनट
निर्माता : फ़िल्मज डिवीजन निर्देशक,
संपादक : अरुणा राजे पाटील छायाकार :
सुकुमार जतानिया आलेखक : अरुण नमबियार,
बी.के. चतुर्वेदी

यह फिल्म सुप्रसिद्ध नर्तकी मल्लिका साराभाई
की जीवनी पर आधारित है।

MALLIKA SARABHAI

English / 31 Min.

Producer: Films Division **Director,
Editor:** Aruna Raje Patil
Camera: Sukumar Jatania
Audiographer: Arun Nambiar, B
K Chaturvedi

Mallika Sarabhai is a documentary
film on the multifaceted life and art
of the Bharatanatyam danseuse
and stage actress.



नोट्टम्/मलयालम/60 मिनट

निर्माता : बीना नारायण निर्देशक : एम.आर.
राजन छायाकार : जयन आलेख : हरि कुमार
संपादक : ए.वी. नारायण

कथाकली नर्तक कीडपाडम् कुमारन् नायर के जीवन पर आधारित यह वृत्तचित्र महान कलाकार की कला पर परम्परा के प्रति उनके समर्पण को दिखाता है। कलाकार स्मृतियों की परतों को अनावृत कर रहा है। किस प्रकार उन्होंने कला का अध्ययन किया व यहाँ तक पहुँचने के लिए संघर्ष किया भूत व वर्तमान का एक खेल - शिष्य से गुरु किंतु हमेशा एक कलाकार।

NOTTAM

Malayalam/ 60 Min.

Producer: Bina Narayan **Director:** M R Rajan **Camera:** Jayan
Audiography: Harikumar **Editor:** A V Narayan

The documentary film on Kizhpadam Kumaran Nair captures the art and perceptions of a veteran Kathakali actor whose love for the tradition is reflected in all his gestures.



ऑफ कन्स्यूशियस, एस-स्पोर्ट्स
एण्ड टॉय गन्स/अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी,
तमिल/23 मिनट

निर्माता : एफ टी आई आई निर्देशक : दीप
प्रकाश छायाकार : बिन्दु नायर आलेखक :
मिलिन्द बापट संपादक : अजीत कुमार

सच्चाई मीडिया से किस प्रकार प्रभावित एवं
प्रत्यावर्तित हो जाती है - इस फिल्म में इसकी
झलक मिलती है। गड़बड़ी वाले क्षेत्र नागालैंड में
जब जेनी सच्चाई जानने की कोशिश करता है तो
उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है...

OF CONFUCIUS, S-SPORTS AND TOY GUNS

English, Hindi, Marathi, Tamil/
23 Min.

Producer: FTII **Director:** Deep
Prakash **Camera:** Bindu Nair
Audiographer: Milind Bapat **Edi-
tor:** Ajith Kumar

A treatise on the mass media's in-
fluence, its manipulations and
meditated 'truths' which aim at
keeping people from asking the re-
ally important questions. And
when Janie, a young man from
troubled Nagaland, does that - he
is arrested...



सुरभि/तेलुगु/24 मिनट

निर्माता : के. जयदेव निर्देशक : के.एन.टी. शास्त्री छायाकार : एम.वी. राघव आलेख : वी. रेड्डी संपादक : श्री गुहा

यायावरिक समुदाय सुरभि का जीवन थियेटर को समर्पित है। समुदाय के अन्य लोगों से भिन्न एक परिवार जिसमें 7 महीने के शिशु से लेकर 77 वर्षीय वृद्ध तक 52 सदस्य हैं, अपनी कला के प्रदर्शन के लिए सुदूरवर्ती इलाकों को चुनता है। सुरभि नागेश्वर राव के माध्यम से मंच के इतिहास की गवेषणा करता है। संस्कृत नाटकों की परम्परा के अनुसार नागेश्वर सूत्रधार के रूप में सामने आते हैं। मंच की परम्परा 1880 में कटपुतली कला से आरंभ हुई। सुरभि कलाकार आधुनिक विशेष प्रभावों को सम्मिलित करते हुए पौराणिक कथाओं मंचन करते हुए ग्रामवासियों का मनोरंजन करते हैं।

अपने जीवन स्तर की परवाह न करते हुए सुरभि

सदस्य केवल खुशी बांटते हैं और पीड़ा अपने अंदर संजोये रखते हैं। टेलीविजन ने उनके दर्शकों को छीन लिया है।

SURABHI - THE STAGE

Telugu/ 24 Min.

Producer : K Jaydev **Director:** K N T Sastry **Camera :** M V Raghav **Audiography:** V Reddy **Editor:** Sri Guha

Life for Surabhi, an itinerant nomadic community dedicated to theatre, is an extension of stage. Unlike other repertories, the members of the family of 52, aged between seven months and 77 years, select remote rural areas to put up a shed

which becomes not only their auditorium but also their living quarters.

Surabhi - The Stage traces the history of the group through Nageswara Rao, the stage-leader who becomes a Sutradhar in the tradition of Sanskrit dramaturgy. In the 1880s they had begun with puppetry and then graduated to the stage. Here, they introduced spectacular elements to the mythological tales they enacted. Tricks like an arrow colliding with a mace, lighting lamps and creating rains, play of light and shade, fade-ins and fade-outs have enthralled the rural audiences to such an extent that Surabhi came to be identified with special stage effects.

The coming of B V Karanth, the eminent theatre personality of Rangayan, Mysore has not taken the artists very far. A new trend was set when the repertory adapted Brecht's The Good Person of Schezwan to the rural conditions of India. However, their audiences still identify with spectacles - a notion that is at variance with their impoverished lifestyle.

But, like a true artist, the Surabhi family does not share its woes, only its happiness. So the family gets busy with their art, which is threatened by television. Will the idiot box wean away their audience? Is it the the end of road for Sri Venkateswara Natya Mandali?



थंग-टा/अंग्रेजी/26 मिनट

निर्माता : आई जी एन सी ए निर्देशक,
संगीतकार : अरिबम श्याम शर्मा छायाकार :
चंद्रा आलेखक : ए. शांतिमय शर्मा संपादक :
 उज्जल नंदी

मणिपुर की गौरवशाली मार्शल आर्ट पड़ोसी शत्रुओं से अपनी रक्षा के लिए विकसित की गई थी। 1891 के एंग्लो-मणिपुर युद्ध के पश्चात अंग्रेजों द्वारा इसे प्रतिबन्ध लगा दिया गया। किंतु कलाविशेषज्ञों एवं ओझाओं ने इसे गुप्त रूप से जीवित रखा। इस कला की शिक्षा अभ्यासक को उसकी शारीरिक और आत्मिक शक्ति से परिचित कराती है। इसकी नौ विधाएं हैं। इस कला के कुछ विशिष्ट नियम हैं। प्रशिक्षुओं को इस नियम संहिता का पालन करना होता है। इस विषय पर कई पांडुलिपियां भी उपलब्ध हैं। इनमें से एक यह बताती है कि चादलों के दिशा संकेत से यह जान सकते हैं कि आक्रमण का उचित समय है या नहीं।

मणीपुरी लोग हथियारों के प्रति बहुत ब्रद्धा रखते हैं - उनका विश्वास है कि यह उनके देवता तिन-सिदाबा के अंग-अवयव हैं।

THANG-TA

(The Martial Art of Manipur)
 English/ 26 Min.

Producer : IGNC A Director,
Music: Aribam Syam Sharma
Camera: Chandra **Audio-**
grapher: Ujjal Nandy

The glorious martial art form of Thang-Ta was developed by the Manipuris to defend their tiny country from the neighbours. After the Anglo-Manipuri War of 1891, its practice was banned by the British. The possession of swords and spears was to be punished by death or exile. It still survives because of

the secret school of ojhas.

Lessons in Thang-Ta begin with basic exercises in footwork and handwork. The semi-circular That Mchet, the five-stepped Khong Pham Manga and the triangular Phunga Nungdum are some of them. They enable the practitioner to be aware of the inner reality of his physique and mind.

There are techniques in footwork for delivering hits, cuts and thrust to the vital limbs of the enemy. A single footstep has the ability to deliver multiple injuries. The spear dance is of ritual importance. There are nine different styles of it, including the pantomime in which a hero's activity is depicted through bodily gestures. There is a sword dance too, which specifies that the swords of the performers should not clash.

Another dreaded weapon is the Rambai, a dart-like weapon used by the cavalry to inflict a deadly blow to the enemy from the horseback. The Manipuris also developed a special technique of unarmed combat.

Thang-Ta practitioners have to follow a strict code of conduct. There are many manuscripts on the subject. One deals with the reading of the signs of the clouds, when to attack and when to retreat. The Manipuris smelted iron from the iron ores available in Kakching. They treated the weapons with reverence since they believed that they evolved from the bones and limbs of Tin-Sidaba, the eternal one.

व्हेहीकल विथ द सोल ऑफ ए मैन

20 मिनट

निर्माता, निर्देशक : बलाका घोष संपादक,

छायाकार : निलोत्पल मजूमदार आलेखक :
चिन्मय नाथ

गढ़वाल की पहाड़ियों में 12,2000 फुट की ऊंचाई पर स्थित केदारनाथ हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थान है। प्रत्येक वर्ष मई से अक्टूबर तक लाखों तीर्थ यात्री भगवान शिव के दर्शन करने आते हैं। बहुत से यात्री 15 कि.मी. की चढ़ाई करके मन्दिर तक पहुँच पाने में समर्थ नहीं होते वे डांडी जिसे चार व्यक्ति कन्धों पर उठाकर चलते हैं और पिदू का सहारा लेते हैं।

राम बहादुर ऐसी ही एक मानव सवारी है जो आजीविका की खातिर तीर्थ यात्रियों को मन्दिर तक ले जाने के लिए प्रतिवर्ष नेपाल से बंधा जाता है। प्रत्येक यात्रा कठिन और थका देने वाली होती है। तीर्थयात्री डांडी में आराम से यात्रा करते हैं जबकि उन्हे ढोने वाली मानव सवारियां कष्ट और पीड़ा में।

राम बहादुर इस कष्टप्रद यात्रा को धैर्यपूर्वक पूरा करता है जबकि उसके साथी कभी कभी हिम्मत हार जाते हैं।

यह फिल्म श्रम की गरिमा को बताती है।

VEHICLE WITH THE SOUL OF A MAN

20 Min.

Producer, Director: Balaka Ghosh **Editor, Camera:** Nilotpal Majumdar **Audiographer:** Chinmoy Nath

Kedarnath, situated at 12,2000 ft in the Garhwal Himalayas, is one of the holiest of Hindu shrines. Lakh of pilgrims visit this abode of Shiva between May and October. Many of them are unfit to go through the trauma of journeying the 15 km trek through piercing sunlight, torrential rain and biting cold. The way out for the salvation seekers are the Dandi, carried by four persons, and the Pitthu, who carries the pilgrim in a basket tied to his back.

Ram Bahadur, one such human vehicle, is one of the thousands who seasonally migrate from Nepal to eke out a living. The tortuous terrain is their domain. The distance, the altitude, the uncertain weather all contribute to the stupefying doziness arising out of sheer exer-

tion. The committed pilgrim rests in the comfort of the trustworthy vehicle which is cheaper than the animal transport, while a huffing and puffing Ram Bahadur completes the harrowing journey.

Pitthu's journey ends with reaching the pilgrim safely to the abode of the lord. But he is on the trail of another eager pilgrim, for in six months he must accumulate enough to last him a year. For him the journey is a ritual in solace. For, he is delightfully proud of his own endeavour. The spirit is so well defined that the burden on his back seems an unacknowledged lightness of being.

The film is thus a celebration of the dignity of labour.